Entrepreneurship MINDSET

शिक्षक निर्देशिका

कक्षा 11

Entrepreneurship
MINDSET

एंत्रप्रन्योरशिप माइंडसेट

शिक्षक निर्देशिका
(कक्षा 11)

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली -110024

ISBN: 978-93-93667-36-6
© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली
दिसम्बर 2021
4100 (प्रतियाँ)

प्रकाशितः राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली
मुद्रितः एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

MANISH SISODIA
मनीष सिसोदिया

DEPUTY CHIEF MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT, I.P. ESTATE,
दिल्ली सचिवालय, आई०पी०एस्टेट,
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली-110002
Email : msisodia.delhi@gov.in

D.O. No. Dy CM/2021/258
Date : 09/11/2021

सन्देश

हम दिल्ली शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। इसी दिशा में 2019 में हमने एंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम लॉन्च किया था। यह पाठ्यक्रम देश की शिक्षा के इतिहास में सबसे बड़े सुधारों में से एक है। देश ही नहीं, पूरी दुनिया में एंत्रप्रेन्योरशिप को लेकर इतना बड़ा प्रयोग कभी नहीं हुआ है। मुझे बेहद ख़ुशी है कि इस प्रयोग से हम सबने बहुत कुछ सीखा है। इस पाठ्यक्रम तथा 25000 अध्यापकों की मदद से रोज़ाना 6 लाख विद्यार्थी कक्षाओं में एंत्रप्रेन्योरशिप का अभ्यास कर रहे हैं। दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में इस पाठ्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों,अध्यापकों व प्रधानाचार्यों आदि का फ़ीडबैक भी शामिल किया जाए।

एंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम से देश की सबसे बड़ी समस्याओं का समाधान होगा। एक है बेरोज़गारी और दूसरी कमज़ोर अर्थव्यवस्था। देश की बेरोज़गारी दूर करने का एंत्रप्रेन्योरशिप ही एकमात्र कारगर और स्थाई तरीका है। जो युवा एंत्रप्रेन्योरशिप कार्यक्रम के बाद अपना ख़ुद का रोज़गार स्थापित करेंगे वे अपने लिए और दूसरों के लिए भी रोज़गार पैदा करेंगे। एंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम का फ़ायदा उन युवाओं को भी होगा जो नौकरी की दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं। जो युवा नौकरियाँ करते हैं उनमें ज़्यादातर दो प्रकार के होते हैं – एक वे जो नौकरियों के पीछे भागते हैं और दूसरे वे जिनके पीछे नौकरियाँ भागती हैं। जो युवा नौकरियों के पीछे भागते हैं, उनके पास योग्यता के तौर पर डिग्री तो होती है परन्तु एंत्रप्रेन्योर माइंडसेट का अभाव होता है। और यह गुण जिन युवाओं में होता है वे नौकरी को भी इसी माइंडसेट से अपनाते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं। एम्प्लॉयर्स भी ऐसे ही वर्कर्स को सबसे ज़्यादा पसंद करते हैं। इस पाठ्यक्रम की मदद से हमारे विद्यार्थी नौकरियों में भी अपार सफलता प्राप्त करेंगे, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

ईएमसी के अन्य महत्त्वपूर्ण भागों के साथ बिज़नेस ब्लास्टर्स 11वीं और 12वीं कक्षा के लिए ईएमसी का एक व्यावहारिक हिस्सा है। इससे हमारे छात्रों को टीम में काम करने, विचार-मंथन करने और सामाजिक चुनौतियों या व्यावसायिक अवसरों की पहचान करने, व्यावसायिक योजनाएँ तैयार करने और उनके विचारों को उनके आसपास लागू करने का अनुभव प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों, प्रधानाचार्यों, अभिभावकों और विभाग के अधिकारियों को इस नवीन पहल के प्रति उत्साह दर्शाने और इसे लागू करने के लिए धन्यवाद देता हूँ। इस अभ्यास को जारी रखने के लिए बधाई और शुभकामनाएँ।

J8L6Z8

(मनीष सिसोदिया)

H. RAJESH PRASAD
IAS

प्रधान सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Pr. Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

सत्यमेव जयते

आज के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों को किसी खास विषय में दक्षता हासिल करने के अलावा उन गुणों और जीवन कौशलों की भी आवश्यकता होती है जो भविष्य में उपयोगी हों और उन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद करें। शिक्षा प्रणाली के भविष्य और अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए, हम वर्षों से ज़मीनी स्तर पर नवीन सुधारों की शुरूआत करके दिल्ली सरकार के स्कूलों में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। स्कूलों में हैप्पीनेस पाठ्यक्रम की शुरूआत के साथ, एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम दिल्ली की शिक्षा प्रणाली में सुधारों की श्रृंखला में एक और क़दम जोड़ता है। इस पाठ्यक्रम की पाठ्य सामग्री 24 विद्यालयों में पायलट अध्ययन के साथ विद्यालयों में क्रियान्वित की गई। इस वर्ष भी इसे आगे बढ़ाते हुए, हम आशा करते हैं कि इससे विद्यार्थियों के एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट में बदलाव आएगा और वे चौथी औद्योगिक क्रांति के लिए मज़बूती से तैयार हो सकेंगे।

शिक्षा प्रणाली से जुड़े रहने के कारण हमारा हमेशा से यही प्रयास रहता है कि विद्यार्थियों का समग्र रूप से विकास हो और वे समाज का उपयोगी हिस्सा साबित हों। हमें विश्वास है कि हमारे प्रयास अच्छे परिणामों में दिखाई देंगे। मुझे यह कहते हुए बहुत गर्व हो रहा है कि दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में सेकेंडरी एवं सीनियर सेकेंडरी स्तर पर एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम की कक्षाओं में हमें नया अनुभव मिला और बहुत कुछ सीखा।

बिज़निस ब्लास्टर्स प्रोजेक्ट ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के लिए ईएमसी का एक व्यावहारिक घटक है, जहाँविद्यार्थी seed money के साथ टीम में काम करने के लिए और वास्तविक जीवन में एन्त्रप्रेन्योरशिपमाइन्डसेट को लागू करके लाभ कमाने अथवा किसी सामाजिक समस्या को हल करने की ओर अग्रसर होते हैं।

टेक्नोलॉजी में तेजी से आए बदलाव के साथ हम समझ सकते हैं कि छात्रों के बीच एन्त्रप्रेन्योरशिपमाइन्डसेट को विकसित करना और उनकी क्षमताओं को पहचानना एक बड़ा उद्देश्यहै। शिक्षा के उद्देश्य को पूरी संवेदनशीलता और स्पष्टता से समझते हुए शिक्षा विभाग इस ज़रूरत को पूरा करने के लिए कटिबद्ध है।

हमने एक मज़बूत और समृद्ध समाज के निर्माण की दिशा में अपनी यात्रा शुरू की है। शिक्षा के क्षेत्र में इस पहल को आगे बढ़ाने के लिए मैं अपने सभी छात्रों, शिक्षकों, प्रधानाचार्यों और शिक्षा विभाग के अधिकारियों को बधाई देता हूँ।

एच. राजेश प्रसाद

Rajanish Singh
Director

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024
Tel. : +91-11-24331356, Fax: +91-11-24332426
E-mail: dir12scert@gmail.com

Date : 1/11/2021

D.O. No. : 1.0(1)/DIR Go+/D.P.B/124

संदेश

शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं है बल्कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में बुद्धि और कौशल का समग्र विकास करना है, जिससे वे जीवन में एक सफल और उम्दा इंसान बन सकें। शिक्षा के इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए 2019 में दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय के आदेश पर एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया, जिससे विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच विकसित की जा सके। विद्यार्थियों को बड़ा सोचने, नया रचने, योजना बनाने और उसे क्रियान्वित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके ताकि वे जीवन में आने वाली हर चुनौती का दृढ़ता व साहस के साथ सामना कर सकें। वे आशावान, उत्साही, आत्मविश्वासी, समर्पित, आत्मप्रेरित व आत्मनिर्भर बन सकें।

निरंतर बदलती तकनीक के दौर में आज हमारे विद्यार्थियों को ऐसे गुणों, मूल्यों व कौशलों की आवश्यकता है जिनके बल पर वे न केवल अपने लिए नए रास्ते बना सकें बल्कि देश की उन्नति में भी सहायक बन सकें। चूँकि एस.सी.ई.आर.टी.में हम भविष्य की माँगों को समझते हैं, इसलिए EMC पारंपरिक शैक्षिक उपकरणों और शैक्षिक प्रणाली में बदलाव लाने वाला एक क्रांतिकारी क़दम है। इस पाठ्यक्रम की सबसे विशिष्ट बात यह है कि इसे अवलोकन और फ़ीडबैक के आधार पर पूर्णतया वैज्ञानिक तरीके से बनाने का प्रयास किया गया है। सभी विद्यालयों में लागू करने से पूर्व 24 विद्यालयों में इसका पायलट अध्ययन किया गया था।

ईएमसी के अंदर कई बेहतरीन घटकों में से एक बिज़निस ब्लास्टर्स 11वीं और 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह ईएमसी का एक ऐसा प्रोजेक्ट है जिसमें विद्यार्थी अवसर को पहचानेंगे, टीम के साथ मिलकर बजट बनाएँगे और अपने आइडियाज़ को लागू करेंगे। विद्यार्थी इसमें या तो कोई बिज़निस प्रोजेक्ट कर सकते हैं या किसी सामाजिक समस्या को हल करके प्रभावशाली बदलाव ला सकते हैं।

इस पाठ्यक्रम को दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में लाने की पहल करने का श्रेय हमारे माननीय शिक्षा मंत्री श्री मनीष सिसोदिया को जाता है। वे भारत के प्रत्येक बच्चे को अपनी सोच और क्षमताओं को विकसित कर जीवन में आगे बढ़ता देखना चाहते हैं, ताकि हम सब मिलकर एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।

आओ, हम सब मिलकर इस प्रयास को जारी रखें और अपने विद्यार्थियों में उत्साह और साहस का संचार करें।

रजनीश सिंह

Dr. Nahar Singh
Joint Director

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Tel. : +91-11-24336818, 24331355, Fax : +91-11-24332426
Tel. : +91-11-24331355, Fax : +91-11-24332426
E-mail : jdscertdelhi@gmail.com

Date :

D.O. No. : F11(2)/JDB/Acad/misc/SCERT/2121

संदेश

हर रोज़ बदलती टेक्नॉलजी के दौर में आज हमारे बच्चों को ऐसे कौशल की आवश्यकता है जिनकी मदद से वे अपने लिए नए रास्ते बना सकें। अपनी उन्नति के साथ-साथ देश की प्रगति में सहायक हो सकें।

विद्यार्थी विषयों के ज्ञान के साथ उन कुशलताओं को भी प्राप्त कर सकें जो जीवन में उन्हे आगे ले जाने वाली हैं। वे आशावान, उत्साही, आत्मविश्वास से भरपूर, समर्पित, आत्मप्रेरित तथा आत्मनिर्भर बन सकें।

इसी उद्देश्य के साथ वर्ष 2019 में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया, जो विद्यार्थियों की सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायक हुआ। इस पाठ्यक्रम के ज़रिए विद्यार्थी बड़ा सोचने, नया रचने, योजना बनाने व उस पर काम करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। वे यह भी सीखते हैं कि जीवन में आने वाली हर चुनौती का सामना साहस के साथ कैसे कर सकेंगे। यह पाठ्यक्रम शिक्षा जगत में क्रांति लाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण क़दम है।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम 24 विद्यालयों में पायलट करने के बाद ही सभी विद्यालयों में लागू किया गया था। पाठ्यक्रम के अवलोकन एवं उस पर आए फ़ीडबैक के आधार पर इसे पूर्णतया वैज्ञानिक तरीके से विकसित करने का प्रयत्न किया गया, और यही इसकी ख़ूबसूरती है।

इस पाठ्यक्रम को दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में लाने की पहल करने वाले माननीय शिक्षा मंत्री श्री मनीष सिसोदिया की सोच यह रही है कि प्रत्येक बच्चा अनुभव के ज़रिए अपनी क्षमताओं के बारे में जाने, इनको विकसित करे और जीवन में आगे बढ़े।

आइए, हम सब मिलकर इस प्रयास को जारी रखते हुए अपने विद्यार्थियों में उत्साह और साहस का संचार करें।

डॉ. नाहर सिंह

प्रस्तावना

एंत्रप्रन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम (ईएमसी) तैयार करना और लागू करना मेरी ईएमसी टीम के लिए एक चुनौतीपूर्ण अनुभव रहा है। 2019 में शुरू किए गए इस पाठ्यक्रम के माध्यम से हम उन सभी संभावनाओं को तलाशने की कोशिश कर रहे हैं जो हमारे छात्रों को उद्यमशीलता के अवसरों की पहचान करके और उनसे लाभ उठाकर व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक विकास की तलाश करने में सक्षम बनाती हैं। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि हमारी शिक्षा प्रणाली प्रत्येक छात्र को अपनी आंतरिक क्षमता के साथ-साथ अपनी प्रतिभा को पहचानने एवं उसे मजबूत करने और नए कौशल विकसित करने के लिए सक्षम बनाए । छात्रों को भी अपने व्यक्तित्व को निखारने में सक्षम बनाने, और मानवीय मूल्यों और सकारात्मक मानसिकता के साथ समृद्धि का मार्ग तैयार करने में समर्थ करे। एससीईआरटी ने ईएमसी के ज़रिए इन वांछनीय परिवर्तनों को शामिल करने का प्रयास किया है।

इस प्रक्रिया में हमने तमाम विषयों (themes) एवं उनसे संबंधित क्षमताओं की पहचान की, और उन्हें एक क्रम में रखा, ताकि 9 से 12 वीं कक्षा तक के विद्यार्थी इन क्षमताओं को एक निश्चित क्रम में पहचान सकें और उन्हें आगे बढ़ाने की दिशा में काम कर सकें। EMC में 6 विभिन्न परस्पर संबंधित घटक हैं - माइंडफुलनेस, स्टूडेंट स्पेशल क्लास, बिज़निस ब्लास्टर्स, लाइव एंत्रप्रन्योर इंटरएक्शन, करियर एक्सप्लोरेशन और थीमैटिक यूनिट्स। प्रत्येक इकाई में छात्रों को प्रेरित करने के लिए एक सफल उद्यमी की कहानी है और विद्यार्थियों को विभिन्न उद्यमशील क्षमताओं के बारे में 'करके सीखने के लिए' 2-3 गतिविधियाँ हैं। पाठ्यक्रम को सरल भाषा में लिखा गया है, जिससे सभी के लिए सामग्री को आत्मसात करना और उसका अभ्यास करना आसान हो गया है।

2019 में पाठ्यक्रम को 24 स्कूलों में पायलट किया गया था और शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों, पर्यवेक्षकों (आब्ज़र्वर्स) और अधिकारियों के फ़ीडबैक को पाठ्यक्रम को बेहतरीन बनाने और वैज्ञानिक तरीके से आगे बढ़ाने के लिए शामिल किया गया था। 2019-20 में कक्षा 9-10 और 11-12 के छात्रों के लिए क्रमशः 2 ईएमसी मैनुअल तैयार किए गए थे। शिक्षकों, विद्यार्थियों और अधिकारियों के फ़ीडबैक के आधार पर हमने 4 मैनुअल विकसित किए हैं; प्रत्येक कक्षा के लिए एक। माइक्रो रिसर्च प्रोजेक्ट में सुधार किया गया है और इसे करियर एक्सप्लोरेशन के रूप में दिया गया है। फ़ील्ड प्रोजेक्ट को बिज़निस ब्लास्टर के रूप में दिया जा रहा है और कक्षा 9-12 के लिए अलग-अलग मैनुअल भी तैयार किए गए हैं।

कोविड लॉकडाउन के दौरान, हमने काम को आगे बढ़ाने के लिए, उसे आगे बढ़ाने के साथ-साथ उसे मज़बूत करने के लिए ईएमसी को डिजिटलाइज़ किया। हमने ईएमसी वर्कशीट और वीडियो के रूप में विद्यार्थियों के साथ गतिविधियों को ऑनलाइन साझा करना शुरू किया; विद्यार्थियों ने गतिविधियां घर पर स्वयं कीं और उनमें अपने परिवारों को भी शामिल किया। एससीईआरटी के यू-ट्यूब चैनल पर जाने-माने उद्यमियों के साथ एलईआई सत्र आयोजित किए गए। सभी की प्रतिक्रिया अभूतपूर्व रही है।

बिजनिस ब्लास्टर्स कार्यक्रम कक्षा 11 और 12 के विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है। शिक्षा निदेशालय ने विद्यार्थियों को उनके बिज़निस आइडिया पर काम करने, अवसर की पहचान करने, टीम के साथ बजट तैयार करने और आइडिया को लागू करने के लिए सीड मनी (seed money) प्रदान की है। विद्यार्थियों के पास या तो एक व्यावसायिक परियोजना हो सकती है, या वे स्थायी परिवर्तन के लिए किसी सामाजिक समस्या को प्रभावी तरीके से हल कर सकते हैं।

मैं इस पाठ्यक्रम पर उत्साहपूर्वक साथ-साथ काम करने के लिए सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और अपने सहयोगियों की आभारी हूँ। मैं उनके काम और इस प्रोजेक्ट की सफलता की कामना करती हूँ।

डॉ. सपना यादव
परियोजना निदेशक, ई.एम.सी.

एन्त्रप्रन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम का उद्‌गम एवं विकास...

ईएमसी 9-12 कक्षाओं के विद्यार्थियों के अन्दर एन्त्रप्रन्योरशिप माइंडसेट को विकसित करते हुए, उन्हें अपने करियर-पथ की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार करता है एवं चिंतन के साथ-साथ अनुभवात्मक शिक्षा को नियोजित करता है। यह देखा गया है कि ईएमसी के संपर्क में आने वाले विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वासी संप्रेषक बन गए हैं, वे जोखिम और नई चुनौतियों का सामना करते हैं और अपने करियर विकल्पों के बारे में अधिक जानकारी रखते हैं।

एन्त्रप्रन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम का लॉन्च फरवरी 2019 में हुआ था। इसके दूसरे संस्करण V2 पर मुझे खुशी और गर्व है कि मैं EMC फ्रेमवर्क के लॉन्च से लेकर वर्तमान स्वरुप तक इसके विकास क्रम को नीचे प्रस्तुत कर रही हूँ। यह क्रमिक विकास एन्त्रप्रन्योरशिप माइंडसेट के उसी अभ्यास को दर्शाता है जिस माइंडसेट को हमारे विद्यार्थियों में विकसित करना EMC का उद्देश्य है।

अप्रैल-मई 2019

वैज्ञानिक रूप से पायलट EMC संस्करण V1

EMC पायलट के लिए विभिन्न प्रकार के 24 स्कूल्स को चुना गया था। 9-12 वीं तक के पायलट स्कूलों से 300 कक्षाओं के संभावित ईएमसी टीचर्स को छोटे-छोटे समूह में पूरे दिन का अनुभवात्मक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रत्येक EMC शिक्षक को 4 सप्ताह के दौरान अपनी-अपनी कक्षा में परिचय नामक गतिविधियाँ और एक थीमेटिक यूनिट करवानी थी। प्रत्येक थीमेटिक यूनिट को इस प्रकार वितरित किया गया था ताकि उन्हें हर प्रकार के स्कूल में करवाया जा सके। प्रत्येक विद्यालय में 2 मेंटर्स के हिसाब से 50 मेंटर टीचर्स को पर्यवेक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। जिसका फ़ीडबैक प्रत्येक सप्ताह लिया जाता था।

जून-जुलाई 2019

फीडबैक शामिल करते हुए 1000 से अधिक विद्यालयों में V1 लॉन्च किया गया

पायलट के दौरान मिले फीडबैक को संकलित करके उन पर चर्चा की गई थी। इसीके आधार पर फैसिलिटेटर मैनुअल के डिज़ाइन और उसकी सामग्री; दोनों को संशोधित किया गया।

शिक्षा निदेशालय के अधिकारियों के साथ-साथ स्कूल-प्रमुखों के लिए अनुभवात्मक प्रशिक्षण(Experiential Trainings) आयोजित किया गया ताकि उन्हें पता चल सके कि ईएमसी में क्या और क्यों है।

सामूहिक ओरिएंटेशन के दौरान सभी ईएमसी टीचर्स को उनके 'फैसिलिटेटर मैनुअल' उपलब्ध कराये गए। इसके अलावा, मैंटर टीचर्स को गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया ताकि वे टीचर्स को छोटे-छोटे बैच में एक घंटे का ईएमसी ओरिएंटेशन दे सकें।

जुलाई-दिसंबर 2019

स्कूलों में EMC संस्करण V1 मॉनिटर किया गया।

1,000+ स्कूलों में यह नया पाठ्यक्रम शुरू करने के बाद, इसके ज़मीनी क्रियान्वयन का निरीक्षण करना ज़रूरी था। ज़िला और ज़ोनल कोऑर्डिनेटर्स एवं इनसे जुड़े मैंटर टीचर्स के साथ एक व्यवस्था स्थापित की गई। उनकी अवलोकन और फीडबैक का विश्लेषण और दस्तावेज़ीकरण किया गया था। इसके अलावा, एक तृतीय पक्ष (थर्ड पार्टी) स्वतंत्र अनुसंधान दल (IDInsight) ने यादृच्छिक (रैनडम) रूप से चुने गए 60 स्कूलों में 'व्यवस्थित प्रक्रिया मूल्यांकन अध्ययन' आयोजित किया, जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों और एचओएस का साक्षात्कार लिया गया। इससे हमें उनकी विस्तृत रिपोर्ट और उनकी संस्तुतियां प्राप्त हुई।

ज़मीनी फीडबैक और 'प्रक्रिया मूल्यांकन अध्ययन' की सिफारिशों के आधार पर, ईएमसी में कई उच्च-स्तरीय सुधार लागू किए गए -

- "ईएमसी क्या है?" इसके बारे में सरल एवं सिलसिलेवार संदेश
- सीखने के परिणामों और यूनिट्स की संरचना पर स्पष्टता
- EMC यूनिट्स का आकर्षक डिज़ाइन
- यूनिट्स का छोटा आकार, कक्षावार कम यूनिट्स
- विद्यार्थियों द्वारा संचालित सत्रों पर अधिक स्पष्टता
- 'करियर–एक्सप्लोरेशन' के लिए विस्तृत निर्देश (जिसे पहले माइक्रो रिसर्च प्रोजेक्ट' कहा जाता था।)

जनवरी-मार्च 2020

ईएमसी संस्करण V2 में फीडबैक शामिल किए गए

अप्रैल 2020

संस्करण V2 का ऑनलाइन परीक्षण

चूँकि लॉकडाउन के कारण स्कूलों में पायलटिंग नहीं की जा सकती थी, हमने ईएमसी टीचर्स द्वारा थीमेटिक यूनिट्स के विस्तृत ऑनलाइन परीक्षण को नियोजित किया ताकि क) समझने में स्पष्टता और आसानी हो, ख) कक्षाओं में लागू करने की क्षमता और ग) कहानियों, गतिविधियों और यूनिट्स से जुड़े उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के 114 टीचर्स और मैंटर टीचर्स ने विश्लेषण की प्रक्रिया में भाग लिया। निर्धारित दिशा-निर्देशों का उपयोग करते हुए प्रत्येक यूनिट्स का 3 अलग-अलग शिक्षकों के साथ परीक्षण किया गया था। उनके फीडबैक पर चर्चा की गई और उनके सुझावों को शामिल किया गया।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि टीचर्स और ईएमसी **कोऑर्डिनेटर्स** ईएमसी क्या, क्यों, और कैसे को समान रूप से समझते हैं, एक 'ऑनलाइन कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम' (OCBP)विकसित किया गया। इसमें प्रासंगिक सवालों के साथ अनेक छोटे-छोटे एनिमेटेड वीडियो शामिल थे जिनमें वक्ता द्वारा वर्णन भी किया जा रहा था। प्रशिक्षण के लिए 20,781 शिक्षकों ने नामांकन किया, जिनमें से 18,423 शिक्षकों (89%) ने प्रशिक्षण पूरा किया।

मई-जून 2020

ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण

अप्रैल 2020 - फरवरी 2021

कोविड-19 के दौरान डिजिटल ईएमसी

अप्रैल 2020 - जून 2020

डिजिटल ईएमसी गतिविधियाँ

विद्यार्थियों को ईएमसी की थीम्स पर आधारित पोस्टर और 2 मिनट के वीडियोज़ लगातार आकर्षक गतिविधियाँ के साथ भेजे गए। कुछ विद्यार्थियों ने गतिविधियों को घर पर स्वयं किया और कुछ ने परिवार के सदस्यों के साथ। व्हाट्सएप के माध्यम से उन्होंने अपने शिक्षकों को अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजीं। डिजिटल ईएमसी वीडियो को 4,70,000 से ज़्यादा बार देखा गया और सैकड़ों शिक्षकों ने गर्व से अपने विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को साझा किया।

मई - जुलाई 2020

ईएमसी ऑनलाइन बूटकैंप

एन्त्रप्रन्योरशिप माइंडसेट को आगे बढ़ाने के लिए आठ संगठनों के सहयोग से एक 'ऑनलाइन समर बूटकैंप' का आयोजन किया गया। विभिन्न इंटरनेट चुनौतियों के बावजूद, 14 बैचों में 250 विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से इसमें भाग लिया। समूहों में प्रोजेक्ट्स प्रस्तुतियों के अलावा, प्रतिभागियों के लिए अपने अनुभव साझा करने के लिए एक प्रसारण कार्यक्रम (ब्रॉडकास्ट इवैंट) का आयोजन किया गया था। इसने आत्मविश्वासपूर्ण संचार (communication), रिस्क लेने और नई चुनौतीपूर्ण चीजों को आजमाने की उनकी क्षमता के पर्याप्त प्रमाण दिए।

अगस्त 2020 - फरवरी 2021

घरों पर ईएमसी वर्कशीट

जब शिक्षा निदेशालय ने सभी विद्यार्थियों को वर्कशीट भेजना शुरू किया, तो उनमें साप्ताहिक ईएमसी वर्कशीट भी शामिल की गई। V2 की गतिविधियों को घर पर करने के लिए उपयुक्त रूप से बनाया गया था। विद्यार्थियों ने पूरे की गई वर्कशीट अपने शिक्षकों के साथ साझा कीं। इस प्रक्रिया ने शिक्षकों को विद्यार्थियों पर ईएमसी के प्रभाव को समझने में मदद की। हमने 400 विद्यार्थियों के साथ "इंटरएक्टिव-वर्कशीट" का भी संचालन किया जिसके बहुत उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए।

अगस्त 2020 - फरवरी 2021

ऑनलाइन एलईआई (लाइव एंटरप्रेन्योर इंटरेक्शन)

2019-20 में कक्षाओं में 900 से ज़्यादा एलईआई के बाद, कोविड महामारी के दौरान एलईआई को डिजिटल कर दिया गया। अनेक एन्त्रप्रन्योर ऑनलाइन उपलब्ध थे, इसलिए हमने 'ज़ूम' पर विद्यार्थियों के साथ ऐसी 16 चर्चाओं का आयोजन किया। इन्हें यू-ट्यूब पर देख रहे कई हजार छात्रों और शिक्षकों के लिए प्रसारित किया गया। हमने चर्चाओं के महत्वपूर्ण क्षणों को हाईलाइट करते हुए छोटे वीडियोज़ भी प्रकाशित किए। इन वीडियोज़ को यू-ट्यूब पर 4 लाख से ज़्यादा दर्शक यानी 'व्यूज़' मिल चुके हैं।

'बिजनेस ब्लास्टर्स' कार्यक्रम महामारी लॉकडाउन के दौरान SoSE खिचड़ीपुर के 40 विद्यार्थियों के साथ पायलट किए जाने के बाद, दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में सितंबर 2021 में कक्षा 11वीं और 12वीं के विद्यार्थियों के लिए शुरू किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विद्यार्थी एन्त्रप्रन्योरियल स्किल विकसित करें और भविष्य में हमारे देश के विकास को सुनिश्चित करने के लिए नौकरी देने वाले बनें। 'बिजनेस ब्लास्टर्स' प्रोग्राम के तहत, प्रत्येक इच्छुक विद्यार्थी को एक नए बिजनेस आइडिया को लागू करने या पहले से मौजूद आइडिया को नए तरीके से लागू करने के लिए 2000/- रुपए की राशि (सीड मनी) मिलेगी। विद्यार्थी अपने नवाचार को आजमाने के लिए व्यक्तिगत रूप से या टीमों में काम कर सकते हैं। उन्हें ईएमसी वेबसाइट पर अपने नियमित खाते बनाए रखने की भी आवश्यकता होगी। अंत में एक 'एक्सपो-टाइप' प्रदर्शनी होगी, और सर्वोत्तम आइडियाज़ वाले विद्यार्थियों को बिना किसी प्रतियोगी परीक्षा के डीटीयू, एनएसयूटी, आईजीडीटीयूडब्ल्यू, जीजीएसआईपीयू जैसे शीर्ष विश्वविद्यालयों में सीधे प्रवेश मिलेगा। सभी ज़िलों में लगभग 90% पंजीकरण के साथ इस कार्यक्रम को उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है।

डॉ. सपना यादव
परियोजना निदेशक, ई.एम.सी.

विषय सूची

क्रम	विवरण	पृष्ठ सं.
1	एन्त्रप्रेन्योर कौन है?	1-6
2	EMC के मुख्य अंग	7-12
J3F4Q4	**थीमैटिक यूनिट्स - Thematic Units**	
U-1	मैं कर सकता/सकती हूँ	13-20
U-2	प्रभावी संचार	21-29
U-3	समीक्षात्मक सोच	30-38
U-4	सहयोग	39-46
U-5	अवसर पहचानकर आगे बढ़ना	47-55
U-6	योजना बनाकर काम करना	56-63
U-7	विश्लेषण करके सीखना	64-72
U-8	गिरकर सँभलना	73-81
T7M4T1	**अन्य अंग - Other Components**	
C-1	माइंडफुलनेस	82-87
C-2	स्टूडेंट स्पेशल	88-93
C-3	करिअर एक्स्प्लोरेशन	94-101
C-4	उद्यमियों के साथ संवाद	102
C-5	बिज़निस ब्लास्टर्स	103

एन्त्रप्रेन्योर कौन है ?
Who is an Entrepreneur?

R2H3I4

जब भी हम कोई काम करते हैं तो हमारे काम करने के तरीके को दो तरह से देखा जा सकता है -

- ट्रेडिशनल माइंडसेट यानी परंपरागत सोच के साथ, किसी तरह का जोखिम उठाए बिना काम करना।
- एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट यानी किसी बड़ी सोच के साथ, जोखिम उठाने की मानसिकता के साथ काम करना।

विद्यार्थियों में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट यानी उद्यमशील सोच विकसित करने के लिए औपचारिक स्कूल शिक्षा की संरचना में ही अवसर विकसित करना हमारे देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में एक नवाचार है। इसलिए इस पाठ्यक्रम में आगे बढ़ने से पहले हमें यह समझ लेना ज़रूरी है कि एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट क्या है? आइए निम्न सवालों के द्वारा समझते हैं एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट क्या है-

एक एन्त्रप्रेन्योर और बिज़निस मैन में क्या अंतर है?

"सभी एन्त्रप्रेन्योर व्यापारी होते हैं लेकिन सभी व्यापारी एन्त्रप्रेन्योर नहीं होते।"

कुछ व्यापारियों में कुछ अलग प्रतिभा, कुछ अलग गुण होते हैं जो उन्हें एन्त्रप्रेन्योर की श्रेणी में खड़ा करते हैं। ये गुण क्या होते हैं, कौन-सी प्रतिभा किसी व्यापारी को एन्त्रप्रेन्योर की श्रेणी में खड़ा करती है? इस पर हम आगे विस्तार से बात करेंगे लेकिन पहले एक सामान्य व्यापारी और एक एन्त्रप्रेन्योर के बीच काम करने के तरीके के अंतर को समझने की कोशिश करते हैं -

- एक सामान्य व्यापारी किसी पुराने प्रचलित बिज़निस को उसके पुराने तौर-तरीकों से ही करने की कोशिश करता है और उसीसे मुनाफ़ा कमाने की कोशिश करता है। उसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह जिस सामान या आइडिया का बिज़निस कर रहा है, वह उसका अपना है या किसी अन्य व्यक्ति का। जबकि एक एन्त्रप्रेन्योर जिस सामान या आइडिया का बिज़निस करता है, वह स्वयं उसका निर्माता या रचयिता होता है। एन्त्रप्रेन्योर पुराने बिज़निस या आइडिया पर भी काम करता है तो पुराने तौर-तरीकों की जगह उसमें सुधार करते हुए व नए सिरे से जोखिम उठाते हुए उसे आगे बढ़ाने की कोशिश करता है।

- एक सामान्य व्यापारी अपना काम मुनाफ़े को लक्ष्य बनाकर करता है जबकि एक एन्त्रप्रेन्योर अपना लक्ष्य मुनाफ़े के साथ-साथ बदलाव को भी बनाता है। बदलाव का यह लक्ष्य बिज़निस करने के तौर-तरीकों से लेकर, आम लोगों के जीवन से जुडी समस्याओं का हल निकालने तक, किसी में भी हो सकता है। बहुत बार एन्त्रप्रेन्योर विश्व की बड़ी समस्याओं में बदलाव करने का भी लक्ष्य बनाते हैं, जिसका उनमें एक जुनून होता है। ज़ाहिर है अपना पूरा तन-मन-धन निवेश करते वक्त मुनाफ़ा भी उसका एक लक्ष्य होता है। लेकिन वह एकमात्र लक्ष्य नहीं होता।

इसे एक उदाहरण की सहायता से समझते हैं। मान लीजिए आपके पड़ोस में कोई व्यक्ति सब्ज़ी की नई दुकान खोलता है, तो इसमें न तो सब्ज़ी कोई नया सामान है और न ही सब्ज़ी की दुकान खोलना कोई नया आइडिया है। अगर यह व्यक्ति सब्ज़ी खरीदने वाले ग्राहकों की समस्या को समझते हुए (मसलन अच्छी पैकिंग में या

सब्ज़ी काटकर बेचना या फिर होम डिलीवरी आदि) उसका समाधान करने के विचार से अपना काम शुरू करता है तो निश्चित रूप से वह सामान्य बिज़निस मैन नहीं, बल्कि एक एन्त्रप्रेन्योर कहलाएगा। यह करने के लिए उसे कई तरह के जोखिम उठाने पड़ सकते हैं, जैसे किसी नई मशीन में निवेश करना या दुकान में अधिक संख्या में काम करने वाले लोग रखना। इन आर्थिक जोखिमों के अलावा यह भी खतरा हो सकता है कि उसका आइडिया काम न करे और उसे नुकसान भी हो जाए। पर इन सबके बावजूद भी, अगर वह यह काम करने का निर्णय लेता है तो वह एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के साथ काम करने वाला व्यक्ति कहलाएगा।

इसे एक और उदाहरण से समझते हैं। मान लीजिए कोई व्यक्ति एक लोकप्रिय पिज़्ज़ा (pizza) कंपनी की फ़्रैंचाइजी लेकर रेस्टोरेंट खोलता है। अगर वह अपना रेस्टोरेंट कनॉट प्लेस में खोलता है जहाँ पर पहले से ही हज़ारों लोग रोज़ाना खाना खाने के लिए आते हैं तो वह एक ट्रेडिशनल माइंडसेट के साथ काम करने वाला बिज़निस मैन होगा। अगर वह कनॉट प्लेस में ही एक नए तरीके से तैयार, नए स्वाद के पिज़्ज़ा की अपनी ब्राँड शुरू करता है, वह एन्त्रप्रेन्योर कहलाएगा। लोग उसे पसंद करेंगे या नहीं, इस जोखिम के बावजूद, विश्लेषण करके वह लोगों को एक नए तरीके का स्वाद देने के अपने जुनून पर तन-मन-धन लगाकर काम करता है।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट एक बड़ा विषय है, लेकिन ऊपर दिए गए दो उदाहरण मोटे तौर पर ट्रेडिशनल माइंडसेट और एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट (परंपरागत सोच और उद्यमशील सोच) के बीच अंतर समझने में हमें मदद कर सकते हैं। एक ट्रेडिशनल माइंडसेट का व्यापारी अपने व्यापार में घाटे के डर से कोई जोखिम नहीं लेता। अगर लेता भी है तो बहुत नापतोल कर ही लेता है। जबकि एक एन्त्रप्रेन्योर की पूरी सोच ही किसी समस्या के समाधान के लिए कुछ नया करके देखने के जोखिम पर आधारित होती है। एक सामान्य व्यापारी हमेशा दूसरे व्यापारी के साथ आगे बढ़ने की प्रतियोगिता में शामिल रहता है लेकिन एक एन्त्रप्रेन्योर खुद के साथ भी प्रतियोगिता में रहता है। वह हमेशा अपने वर्तमान से आगे बढ़कर बेहतर कुछ करना चाहता है।

यहाँ इस तथ्य को समझ लेना ज़रूरी है, कि एन्त्रप्रेन्योर और बिज़निस मैन के बीच कोई छोटा-बड़ा नहीं होता है। उपरोक्त अंतर को समझते हुए कहीं हम मन में यह धारणा न बना लें कि ट्रेडिशनल बिज़निस मैन के मुकाबले एन्त्रप्रेन्योर होना कोई बहुत बड़ी बात है। समाज में ट्रेडिशनल बिज़निस मैन की भूमिका भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी एन्त्रप्रेन्योर की। एक एन्त्रप्रेन्योर किसी नए सामान्य विचार पर काम करके उससे आगे बढ़ जाता है और ट्रेडिशनल बिज़निस मैन उच्च विचार या सामान के व्यापार को आगे चलाने में भूमिका निभाता है। दोनों ही समाज के लिए आवश्यक हैं क्योंकि दोनों अलग-अलग तरीकों से समाज में योगदान देते हैं।

एन्त्रप्रेन्योर कौन होता है, और कौन नहीं होता है?

ऊपर दिए गए संदर्भ के आधार पर अब हम कह सकते हैं कि एन्त्रप्रेन्योर वह व्यक्ति होता है जो नए तौर-तरीकों के साथ अपना व्यापार करता है। उसके व्यापार करने के पीछे एक सोच होती है, एक विज़न होता है। अपने व्यापार के ज़रिए वह लोगों के जीवन पर प्रभाव डालता है, उनकी समस्या का समाधान उपलब्ध करवाता है। वह कुछ नया करते हुए असफल होने के विचार से नहीं डरता बल्कि जोखिम उठाते हुए सफल होने की कोशिश करता है। अगर उसका कोई प्रयास या योजना सफल नहीं भी होती है तब भी वह अपने बड़े उद्देश्य को ध्यान

ध्यान में रखते हुए, नुकसान उठाते हुए भी नए सिरे से सफल होने के प्रयास में लगा रहता है।

हम किसी ऐसे व्यक्ति को,जो भले ही अपना व्यापार करता हो और अपने व्यापार में सफल भी हो, एन्त्रप्रेन्योर नहीं कहेंगे जिसके लिए काम करने का उद्देश्य केवल आजीविका चलाने या मुनाफ़ा कमाने तक सीमित रहता है और अपनी या लोगों की समस्याओं का समाधान खोजना उसकी मुख्य प्रेरणा नहीं होती। वह असफलताओं से डरता है और छोटी-मोटी असफलताओं से निराश होकर अपनी महत्त्वपूर्ण और महत्त्वाकांक्षी योजनाओं तक को छोड़ देता है।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट और एन्त्रप्रेन्योरशिप स्किल की शिक्षा में क्या अंतर है?

एन्त्रप्रेन्योरशिप स्किल की शिक्षा से हमारा तात्पर्य है - विद्यार्थियों को व्यापार के विभिन्न पहलुओं की शिक्षा देना। जैसे नफ़ा-नुकसान का हिसाब-किताब रखना, व्यापार को बढ़ाने के लिए योजनाएँ बनाना, मार्केटिंग, कस्टमर सर्विस इत्यादि।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की शिक्षा से हमारा तात्पर्य है - विद्यार्थियों के अंदर कुछ नया करने या नए तरीके से करने की सोच पैदा करना। उनके अंदर समस्याओं और चुनौतियों के नए समाधान खोजने की जिज्ञासा पैदा करना और उस समाधान पर काम करने का आत्मविश्वास पैदा करना, असफलताओं और चुनौतियों के बावजूद अपने उददेश्य पर डटे रहने की हिम्मत पैदा करना और हमेशा नया सीखते रहने की जिज्ञासा के साथ नेतृत्व के गुण विकसित करना।

हम एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में उन गुणों का विकास करेंगे जिससे वे जो भी करें एक एन्त्रप्रेन्योर की तरह करें।

एन्त्रप्रेन्योर होने और एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट वाले व्यक्ति होने में क्या अंतर है?

अभी तक यह स्पष्ट हो गया है कि एन्त्रप्रेन्योर होने का अर्थ है - एक ऐसा व्यक्ति जो अपना व्यापार करता है लेकिन नई सोच, नए तरीके के साथ जोखिम उठाते हुए। जबकि एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से तात्पर्य व्यक्ति के सोचने और जीने के तरीके से है, भले ही वह कोई व्यापार करता हो या फिर कोई नौकरी या अन्य काम करता हो।

यह ज़रूरी है कि हर एन्त्रप्रेन्योर में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट होगा, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त हर व्यक्ति एन्त्रप्रेन्योर ही होगा।

किस आधार पर कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त है या नहीं?

किसी व्यक्ति के एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त होने की पहचान उसके सोचने और काम करने के तरीके से ही हो सकती है। भले ही व्यक्ति कोई नौकरी करता हो या व्यापार करता हो, अगर वह काम करने से पहले नए सिरे से सोचने और नए तरीके अपनाने का अभ्यास करता है, अपनी सोच और अपने नए तरीकों के प्रति आत्मविश्वास से भरा रहता है, उनके असफल होने से डरता नहीं है। समस्याओं और चुनौतियों का समाधान खोजना और उन पर काम करना उसे प्रेरित करता है, और उसके काम करने का तरीका लोगों के जीवन को प्रभावित करता है, उनकी समस्याओं को कम करता है या उन्हें कुछ नया उपलब्ध कराता है।

इस पाठ्यक्रम में हमने बहुत-से ऐसे व्यापारियों की कहानी शामिल की हैं जिन्होंने अपनी सोच और अपने काम के दम पर न सिर्फ़ अपने जीवन में सफलता हासिल की है बल्कि लोगों को बहुत-कुछ नया और उपयोगी दिया है। वे सब सफल व्यापारी होने के साथ-साथ एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यापारी भी हैं। इन सबने जब नया सोचना या नया काम करना शुरू किया तो उस वक़्त इनकी सफलता की कोई गारंटी नहीं थी। बहुत लोगों के पास अनुभव या बहुत पैसा भी नहीं था लेकिन फिर भी अपने आत्मविश्वास और सोच के दम पर आज वे सफल एन्त्रप्रेन्योर हैं।

एक सामान्य शिक्षित व्यक्ति में और एक एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यक्ति में क्या अंतर है?

कई बार हम देखते हैं कि बहुत-से लोग एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के अभाव में अपने हालात से आगे सोच नहीं पाते, रिस्क लेने से डरते हैं और इसीलिए अपनी क्षमता तथा प्रतिभा से कम नौकरी या व्यापार से ही संतोष कर लेते हैं। एक सामान्य शिक्षित व्यक्ति के पास डिग्री या डिप्लोमा हो सकते हैं, अच्छी नौकरी हो सकती है या सफल व्यापार भी हो सकता है लेकिन यह भी संभव है कि वह अपनी प्रतिभा को ठीक से समझ न पाया हो या तलाश कर पाने के बावजूद उसके अनुरूप कार्य या सफलता प्राप्त न कर पाया हो।

वहीं एक एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यक्ति अपनी प्रतिभा को तथा अपने व्यक्तित्व के मज़बूत पक्षों को पहचानता है। वह कुछ नया करने के लिए असफलता के डर से घबराता नहीं है। वह विश्लेषण पर आधारित निर्णय ले सकता है। वह परिस्थिति के अनुसार अपने में बदलाव लाने को तैयार होता है, समस्याओं से परेशान होने की बजाए गहन सोच से, सहयोग लेकर, अपने लिए नए अवसर बना लेने का विश्वास रखता है, जैसा कि हम शिव नादर की कहानी पढ़कर जानेंगे। एक एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यक्ति अपने करियर में सफलता के साथ ईमानदारी और नैतिकता का भी ध्यान रखता है।

क्या एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट एक बिज़निस मैन में ही होना चाहिए या फिर नौकरी करने वाले व्यक्ति के लिए भी इसकी कोई उपयोगिता है?

अब तक की बातचीत से हमने जो समझा है, वह सिर्फ़ व्यापारियों पर लागू नहीं होता। एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट नौकरी पेशा लोगों के लिए भी उतना ही ज़रूरी है। इसे समझने के लिए व्यापारियों के साथ कुछ ऐसे लोगों के उदाहरण को भी समझते हैं जो किसी कंपनी या सरकार में नौकरी करते हुए भी एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के साथ कार्य करते हैं। वे अपना काम पूरी लगन के साथ रचनात्मकता तथा सहयोग से करते हैं। टीम को अपनी ताकत बनाकर उसे प्रोत्साहित करते हैं। वे उसी कार्य व्यवस्था में कुछ नया तथा सफलतापूर्ण कर पाते हैं जिसमें अन्य लोग बाधाओं तथा सीमाओं (Limitations) की समस्याओं में उलझकर रह जाते हैं। वे सीमाओं से परेशान होने की बजाय उनमें हल निकालते हैं। इस तरह वे अपने काम से लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं।

दिल्ली में ही इसका सबसे बड़ा उदाहरण मेट्रो मैन श्रीधरन हैं, जिनका ज़िक्र हमारे इस पाठ्यक्रम में आगे है। वे व्यापारी नहीं थे लेकिन उनकी नई सोच, काम करने के नए तरीके और हिम्मत ने ऐसा काम करके दिखा दिया जो कोई और इंजीनियर शायद कभी सोच भी न सका हो।

हमारे आसपास ऐसे बहुत-से उदाहरण हैं जैसे कोई आई. ए. एस. अधिकारी अपने एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की बदौलत अपने विभाग का हुलिया ही बदल देता है और लोगों की समस्याएँ अचानक गायब ही हो जाती हैं। अनेक कंपनियों में भी कई लोग विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न पदों पर हैं जो एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की बदौलत अपनी कंपनी को कहाँ का कहाँ पहुँचा देते हैं।

हम अपने शिक्षा विभाग में ही देख सकते हैं जहाँ बहुत सारे शिक्षक या विद्यालय-प्रमुख पढ़ाने या स्कूल चलाने में अपने एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की बदौलत ऐसा काम करते हैं जिससे न सिर्फ़ उनके विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा मिलती है बल्कि उनके काम करने की सोच और तरीके से अन्य शिक्षकों और विद्यालय-प्रमुखों को भी प्रेरणा मिलती है।

ऐसे कुछ लोगों को याद करते हुए हम सोच सकते हैं कि ये कौन लोग होते हैं, ये कैसे काम करते हैं? क्यों उनका काम आज भी लोग याद करते हैं और उनसे प्रेरणा लेते हैं?

अगर हम गहराई से पड़ताल करेंगे तो देखेंगे कि ऐसे लोगों ने पढ़ाने में, स्कूल चलाने में न सिर्फ़ नए तरीके अपनाए बल्कि जोखिम भी उठाए होंगे। हो सकता है उन्होंने पाठ्यक्रम से बाहर या परंपराओं से अलग हटकर बच्चों को पढ़ाने की कोशिश की हो जिससे बच्चों को उनके विषय बेहतर समझ में आने लगे हों। उन्होंने सीमितताओं से परेशान होने की बजाय गहन सोच तथा रचनात्मकता का प्रयोग करते हुए उनके हल निकाले हों। जोखिम उठाना, समस्या का हल निकालना, रचनात्मकता से कार्य करना - ये सब एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के गुण हैं और हर कार्य-क्षेत्र में उपयोगी तथा महत्त्वपूर्ण हैं- चाहे वह नौकरी हो या कोई अन्य व्यवसाय।

एक नौकरी करने वाले व्यक्ति के काम करने के तरीके को किन परिस्थितियों में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की श्रेणी में रखा जा सकता है?

जब किसी-कार्य व्यवस्था में कुछ लोग कार्य न कर पाएँ परंतु वहीं कोई अन्य व्यक्ति कार्य को प्रभावशाली रूप से कर दे, कुछ लोग सीमाओं तथा समस्याओं में बँधकर रह जाएँ, वहीं अन्य लोग उनमें रचनात्मक हल निकालकर, अपने साथ अपनी टीम की भी क्षमताओं को संगठित रूप से प्रयोग करके सफल हों तो हम मान सकते हैं कि नौकरी करने वाले व्यक्ति एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के तरीके से कार्य करते हैं।

इसका एक उदाहरण हमने श्री० ई० श्रीधरन के रूप में जाना। उन्होंने कोंकण रेलवे तथा मेट्रो रेल में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट का प्रयोग करते हुए कार्य में आने वाली बाधाओं का पूर्वानुमान करते हुए उन्हें दूर करने के हल निकाले तथा कार्य को निर्धारित समय सीमा से पहले पूरा किया।

हम अन्य क्षेत्रों से भी उदाहरण देख सकते हैं। जब किसी पिछड़े ज़िले में एक आई. ए. एस. महिला अफ़सर वहाँ के सरकारी अस्पताल की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए वहीं अपने बच्चे को जन्म देने का निर्णय लेती है, तब वह जोखिम उठाती है। पर उसके बदले में वह पूरे ज़िले के लोगों का विश्वास सरकारी तंत्र में मज़बूत करती है। वह यह जोखिम बिना सोचे-समझे नहीं उठाती। इसके पीछे दूरदर्शिता के साथ कई महीनों की मेहनत भी होती है। पब्लिक हेल्थ सिस्टम में विश्वास के अभाव की समस्या को समझना और उसके लिए बिल्कुल नया, जोखिम भरा क़दम उठाना-एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से ही संभव है।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट किसी भी कार्य-क्षेत्र में बाधाओं से ऊपर उठकर कार्य करने के तरीके को प्रभावशाली बनाकर सफलता को सुनिश्चित करता है। इसीलिए दिल्ली सरकार शिक्षा विभाग की ओर से यह प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट विकसित करने के लिए कक्षा चलाई जाएँ जिससे कि वे अपने जीने के तरीके में ही एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट को सम्मिलित कर पाएँ।

EMC के मुख्य अंग
Main Components of EMC

B6Q1M9

जैसा कि "एन्त्रप्रेन्योर कौन है?" प्रकरण में हमने देखा, एन्त्रप्रेन्योर (उद्यमी) की तरह सोचना व्यावसायिक जीवन के साथ-साथ हमारे निजी जीवन में भी काम आ सकता है। निराशा का डटकर सामना करना, अपनी रुचियों को जानना और उन्हें निखारना, कुछ नया करने का साहस करना, ये सभी क्षमताएँ एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से सीखकर हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी को भी ज़्यादा सकारात्मक होकर जी सकते हैं।

एन्त्रप्रेन्योरियल (उद्यमशील) क्षमताओं के इस विस्तृत दायरे को ध्यान में रखकर ही एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम की रचना की गई है, जिससे कि विद्यार्थी भविष्य के लिए अपने चुने हुए व्यवसायों और निजी जीवन, दोनों में ही सफल हो सकें।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट के लिए 7 मुख्य क्षमताओं को विकसित करना ज़रूरी है

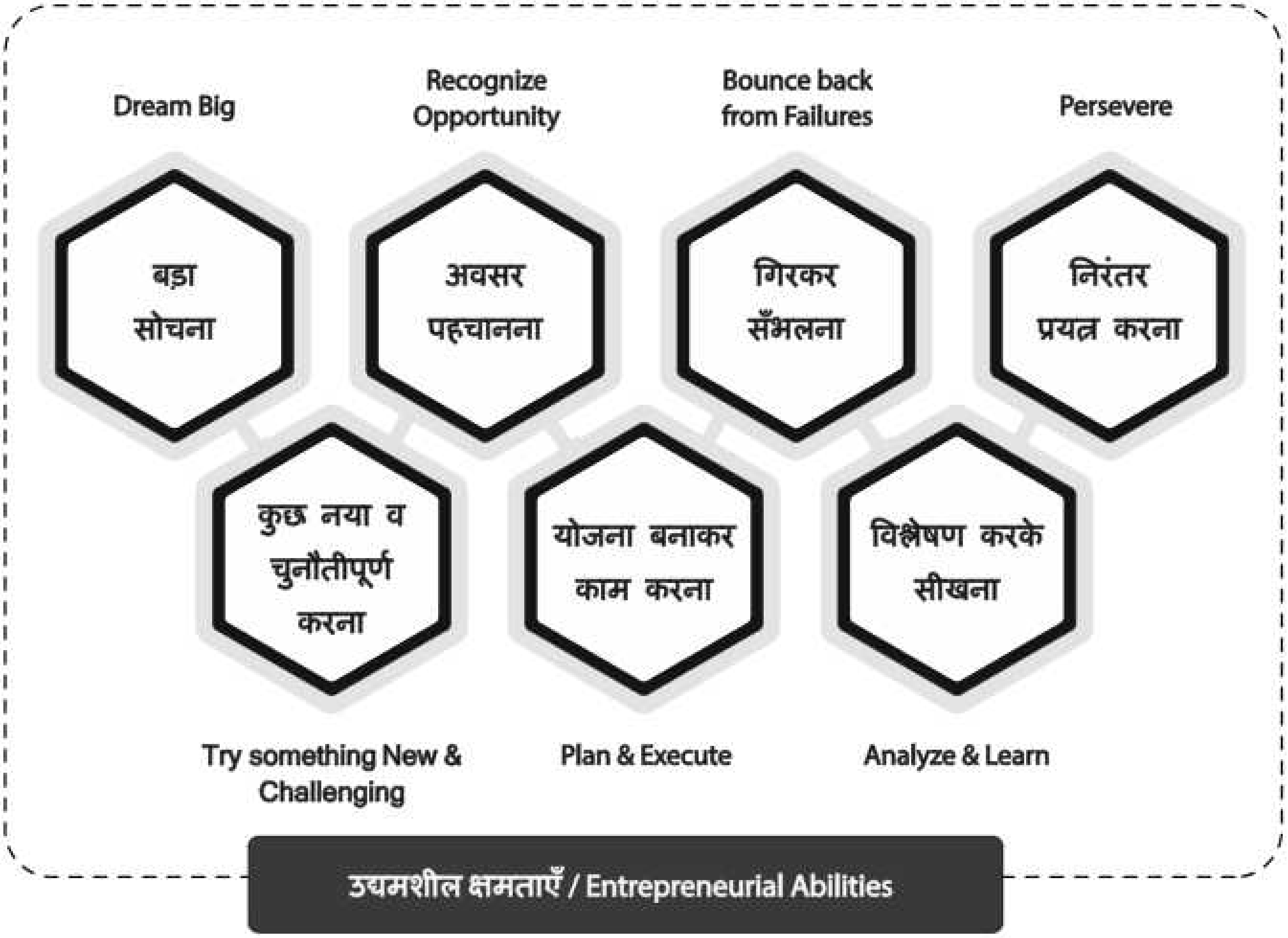

उद्यमशील क्षमताओं को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम इनसे जुड़ी हुई मूलभूत क्षमताओं एवं गुणों पर काम करें। उदाहरण स्वरुप देखें तो-

- कुछ नया और चुनौतीपूर्ण करने में आत्मविश्वास होना और अपने अंदर छिपे डरों का सामना करना बहुत ज़रूरी है।
- अवसर पहचानने के लिए बारीकी से अवलोकन करना, समानुभूति के साथ परिस्थिति को समझना, और गहन सोच से विश्लेषण करके हल निकालना आवश्यक है।

इसी तरह एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के लिए ज़रूरी क्षमताएँ एवं गुण निम्न सूची में दिए गए हैं जिन्हें पाठ्यक्रम के विभिन्न अंगों द्वारा विद्यार्थी अनुभव करके सीखेंगे

मूलभूत क्षमताएँ / Foundational Abilities		प्रमुख गुण / Key Qualities	
Critical Thinking	गहन सोच	Creativity	सृजनात्मकता
Communication	संचार	Curiosity	उत्सुकता
Collaboration, Teamwork	सहयोग, टीम वर्क	Empathy	समानुभूति
Decision Making	निर्णय लेना	Joyfulness	ख़ुशी
Drive / Adapt to Change	बदलाव लाना/अपनाना	Manage Fears	डर का सामना
Ideate	विचार मंथन	Mindfulness	सचेतनता
Integrity & Ethics	ईमानदारी व नैतिकता	Observation	अवलोकन
Problem Solving	समस्या सुलझाना	Self Awareness	स्वयं को जानना
Reflect, Analyze	चिंतन, विश्लेषण	Self Confidence	आत्मविश्वास

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम कैसे सिखाया जाएगा?

प्रक्रिया

जैसे कि आपने क्षमताओं एवं गुणों की सूची को देखकर समझा है, यह ज़रूरी है कि विद्यार्थी इन्हें अनुभव करके सीखें न कि सिर्फ़ पाठ्यपुस्तक पढ़कर। **जब तक विद्यार्थियों को इन क्षमताओं का अभ्यास करने के मौके नहीं मिलेंगे, तब तक उनके लिए ये क्षमताएँ सूचना के स्तर पर ही रहेंगी। विद्यार्थी इन्हें अपने जीवन से जोड़कर देख पाएँ और अपने भविष्य में इनका इस्तेमाल कर पाएँ, इसके लिए इस पाठ्यक्रम को मुख्य रूप से अनुभव से सीखने (expereintial) की शैली में बनाया गया है।**

EMC के लिए प्रतिदिन समय-सारणी (time table) में एक पीरियड निर्धारित किया गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन क्षमताओं को अगर आदत में बदलना है तो इसके लिए नियमित अभ्यास की ज़रूरत होगी।

अनुभव से सीखने के विभिन्न आयाम हो सकते हैं। इसे विद्यार्थी कक्षा के अंदर और बाहरी दुनिया से जुड़कर, दोनों ही तरह से सीख सकते हैं। ध्यान सिर्फ़ इस बात का रखा जाना चाहिए कि दोनों ही संदर्भों में विद्यार्थियों को स्वयं कुछ करके देखने के मौके मिलें। वे सिर्फ़ सुनकर या देखकर न सीखें। अनुभव से सीखने में 2 प्रक्रियाएँ महत्त्वपूर्ण हैं-

अनुभव (Expereince) - खुद करके देखना - व्यक्तिगत रूप से या अपने साथियों के साथ मिलकर गतिविधि करना, उसके बारे में सवाल पूछना, खुद करके जवाब ढूँढना और अपनी समझ बढ़ाना।

चिंतन (Reflection) - अनुभव के बारे में सोचना - गतिविधि कर लेने के बाद उस अनुभव से जो सीखा, अपने अवलोकन, सवाल आदि के बारे में चिंतन करना और उनके आधार पर नए अनुभवों के लिए खुद को तैयार करना।

इन दोनों के अलावा इस पाठ्यक्रम में **विद्यार्थी दूसरों से प्रेरणा लेकर भी सीखेंगे।** जैसे कि उद्यमियों की कहानियाँ सुनना और उनसे मिलकर उनकी यात्रा को गहराई से समझना।

उदाहरण

इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी

- **उद्यमियों का इंटरव्यू लेकर** उनकी यात्रा को समझेंगे और साथ ही साथ अपने आत्मविश्वास, संचार, और नए लोगों से बात करने में लगने वाले डर आदि क्षमताओं पर काम करेंगे। यह स्वयं अनुभव करने और प्रेरणा से सीखने - दोनों का माध्यम है।
- **मैनुअल (manual) में दी गई गतिविधियों को स्वयं करके प्रॉब्लम सोल्विंग** (problem solving), क्रिटिकल थिंकिंग (critical thinking), पहल करना (taking initiative) आदि क्षमताओं को विकसित करेंगे।

इंटरव्यू और गतिविधि कर लेने के बाद विद्यार्थी अपने साथियों के साथ मिलकर अपने अनुभव पर चिंतन करेंगे, जिससे उन्हें अपनी क्षमताओं, अपनी रुचियों, स्वयं के बारे में सकारात्मक और सुधारने योग्यबिंदुओं की वास्तविक जानकारी मिलेगी।

अनुभव और चिंतन, ये दोनों प्रक्रियाएँ अनुभव से सीखने के लिए ज़रूरी हैं। सिर्फ़ करके देख लेना अनुभव से सीखने के लिए काफ़ी नहीं है। विद्यार्थी कक्षा के अंदर और बाहर, दोनों ही जगह कुछ गतिविधियाँ करेंगे और फिर उस अनुभव के बारे में चिंतन करके न सिर्फ़ उद्यमशील क्षमताओं को समझेंगे बल्कि उन क्षमताओं का जीवन में उपयोग करना भी सीखेंगे। अनुभव से सीखने का सबसे बड़ा फ़ायदा ये है कि ये हमारे विद्यार्थियों में निरंतर सीखते रहने की क्षमता विकसित करेगा।

मुख्य अंग

इस पाठ्यक्रम के छह मुख्य अंग हैं जिन्हें विद्यार्थियों को एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से जुड़े विभिन्न अनुभव देने की दृष्टि से बनाया गया है। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि इन सभी प्रक्रियाओं में विद्यार्थी स्वयं कुछ करके और फिर चिंतन करके सीखेंगे। इनमें से कुछ प्रक्रियाएँ कक्षा में संचालित होंगी और कुछ कक्षा से बाहर। कुछ में शिक्षक गतिविधि का संचालन करेंगे और कुछ में विद्यार्थी स्वयं ज़िम्मेवारी लेंगे। इन सभी अंगों के बारे में विस्तार से जानकारी इस मैनुअल में दी गई है।

उद्देश्य	कब करना है	शिक्षक की भूमिका	विद्यार्थियों की भूमिका
माइंडफुलनेस (Mindfulness)			
वर्तमान के प्रति सजग रहकर मन और मस्तिष्क को शांत और केन्द्रित करने के लिए	दैनिक EMC पीरियड में शुरू के 3-5 मिनट माइंडफुल चेक-इन और अंत के 1-2 मिनट साइलेंट चेक-आउट हर महीने के पहले सोमवार को EMC पीरियड में	दैनिक माइंडफुल चेक-इन और साइलेंट चेक-आउट करवाना हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस की गतिविधि करवाना	माइंडफुलनेस की गतिविधियों में भाग लेना
थीमैटिक यूनिट्स (Thematic Units)			
विद्यार्थियों को गतिविधियों और प्रेरक कहानियों के द्वारा एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की क्षमताओं की जानकारी देने के लिए	दैनिक EMC पीरियड में	मैनुअल में दी गई गतिविधियाँ और कहानियाँ फ़ैसिलिटेट करना	समूह में गतिविधियाँ करना, कहानियाँ सुनना और उनपर चिंतन एवं चर्चा करना
स्टूडेंट स्पेशल (Student Specials)			
नियमित अभ्यास और साथियों के फ़ीडबैक से संचार और आत्मविश्वास से संबंधित क्षमताओं को विकसित करना	हर शनिवार के EMC पीरियड में या फ़्री पीरियड में	शुरू में एक-दो बार इस प्रक्रिया को समझने और करने में विद्यार्थियों की सहायता करना	तैयारी करके प्रभावी संचार की विभिन्न गतिविधियों का संचालन करते हुए विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ निभाना

उद्देश्य	कब करना है	शिक्षक की भूमिका	विद्यार्थियों की भूमिका
उद्यमियों के साथ संवाद (Live Entrepreneur Interactions)			
उद्यमियों से रूबरू होकर उनकी यात्रा को समझना और काम के विकल्पों के बारे में जानना।	स्कूल प्रशासन उद्यमियों की सुविधा अनुसार योजना बनाएगा।	उद्यमी का परिचय करवाना और उनके साथ बातचीत का संचालन करना।	उद्यमियों को सुनना और बेझिझक अपने सवाल उनसे पूछना।
कैरियर एक्स्प्लॉरैशन (Career Exploration)			
अलग-अलग उद्यमियों और नौकरी करनेवालों का इंटरव्यू लेकर उनकी यात्रा को समझना और काम के विकल्पों के बारे में जानना।	हर महीने एक इंटरव्यू। हर महीने के आखिरी सोमवार और मंगलवार को EMC पीरियड में कुछ विद्यार्थी इंटरव्यू का अनुभव कक्षा में साझा करेंगे।	मैनुअल में दी गई जानकारी के आधार पर इस प्रक्रिया के उद्देश्य समझने और करने में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना।	अपनी रुचि के अनुसार उद्यमियों और अन्य नौकरी करने वाले व्यक्तियों को ढूँढना और तैयारी करके उनका इंटरव्यू लेना और फिर कक्षा के सामने अपने विचार साझा करना।
बिज़निस ब्लास्टर (फ़ील्ड प्ोजेक्ट)			
एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की क्षमताओं का वास्तविक जीवन में इस्तेमाल करना।	बिज़निस ब्लास्टर (फ़ील्ड प्रोजेक्ट) कब और कैसे करवाना है, उसकी सूचना स्कूल प्रशासन को दी जाएगी।	मैनुअल में दी गई जानकारी के आधार पर इस प्रक्रिया के उद्देश्य समझने और करने में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना।	दी गई राशि का आर्थिक या सामाजिक रूप से प्रभावी प्रोजेक्ट करने में उपयोग करना।

थीमैटिक यूनिट्स (Thematic Units) की संरचना

थीमैटिक यूनिट्स (Thematic Units) की रचना करने के पीछे उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों को सभी उद्यमशील क्षमताओं को व्यवस्थित तरीके से समझने और अभ्यास करने का मौका मिले। इन यूनिट्स में मुख्यतः गतिविधियों और कहानियों का प्रयोग किया गया है जो इस मैनुअल में संकलित हैं। इनमें एक ओर जहाँ गतिविधियाँ विद्यार्थियों को क्षमताओं के प्रत्यक्ष अनुभव का मौका देती हैं, वहीं दूसरी ओर कहानियाँ उन्हें प्रेरित करने की दृष्टि से शामिल की गई हैं। इन्हें समझने के लिए निम्न बिन्दु महत्त्वपूर्ण हैं-

एक यूनिट की संरचना-

- हर यूनिट उद्यमशीलता की एक विशिष्ट क्षमता और उससे जुड़ी मूलभूत क्षमताओं और गुणों पर केंद्रित है।
- हर यूनिट की शुरूआत में शिक्षक की अपनी समझ के लिए उस क्षमता के महत्त्व और उससे जुड़ी अन्य बातों का उल्लेख किया गया है।
- हर यूनिट में विद्यार्थियों के साथ शुरूआत करने के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैं जिन्हें शिक्षक ज़रूर इस्तेमाल करें।
- हर यूनिट में 2 गतिविधियाँ और एक कहानी है। (कुछ अपवादों को छोड़कर)

हर गतिविधि/कहानी की संरचना-

- हर गतिविधि/कहानी एक खास क्षमता से जुड़ी है जिसके आधार पर उसके बारे में चिंतन के लिए प्रश्न दिए गए हैं।
- हर गतिविधि/कहानी की शुरूआत परिचय से होती है जिसे शिक्षक विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँ।
- हर गतिविधि/कहानी 4 चरणों में बँटी हुई है, जिन्हें नीचे दिए गए चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है। जो भी भाग हाईलाइटिड (highlighted) होगा, उस चरण के निर्देश वहाँ दिए गए होंगे।

कैसे करें	चिंतन एवं चर्चा	सीखें साथियों के साथ	साझा करें
इस चरण में गतिविधि करने के लिए निर्देश दिए गए हैं। फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों को निर्देश देते हुए उनसे गतिविधि करवाएँ।	इस चरण में गतिविधि कर लेने के बाद के चिंतन के प्रश्न दिए गए हैं, जिन्हें फ़ैसिलिटेटर को विद्यार्थियों के साथ साझा करना है। फ़ैसिलिटेटर ये प्रश्न बोर्ड पर क्रम से लिखकर या बोलकर विद्यार्थियों से बात सकते हैं।	इस चरण में विद्यार्थी चिंतन एवं चर्चा के दौरान निकाले गए निष्कर्ष/समझ/सवालों आदि को पूरी कक्षा के साथ साझा करेंगे।	इस आख़िरी चरण में शिक्षक गतिविधि/कहानी का सार विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँगे।

यूनिट 1 मैं कर सकता/सकती हूँ
I Can

Y2U2A3

फ़ैसिलिटेटर के लिए

हम जीवन में जब भी कोई काम पहली बार करते हैं तो आत्मविश्वास की कमी के कारण या तो काम शुरू ही नहीं करते या मुश्किलें आते ही घबराकर बीच में छोड़ देते हैं। जीवन के हर पड़ाव पर कुछ न कुछ नया करने और सीखने का अवसर मिलता है पर प्रत्येक अवसर अपने साथ चुनौतियाँ भी लाता है। लेकिन कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो अपने आत्मविश्वास के बल पर चुनौतियों से जूझते हुए अपने आपको भरोसा देते हैं कि 'मैं कर सकता/सकती हूँ'। वे सफलता की परवाह किए बिना कार्य को करने की कोशिश करते हैं, जैसा कि ऊपर दिए गए उदाहरण में अमन ने किया। उसने अपना काम मुश्किल जानकर भाषण लिख लेने का पहला क़दम उठाया।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

इस यूनिट में विद्यार्थी रास्ते में आने वाली चुनौतियों के बावजूद कार्य को पूरा करना सीखेंगे। यह करने के लिए विद्यार्थी निम्न क्षमताओं का अभ्यास करेंगे -

1. कार्य को छोटे-छोटे चरणों में बाँटना
2. गलतियों से सीखकर आगे बढ़ना
3. प्रयास करते रहना
4. आत्मविश्वास बनाए रखना

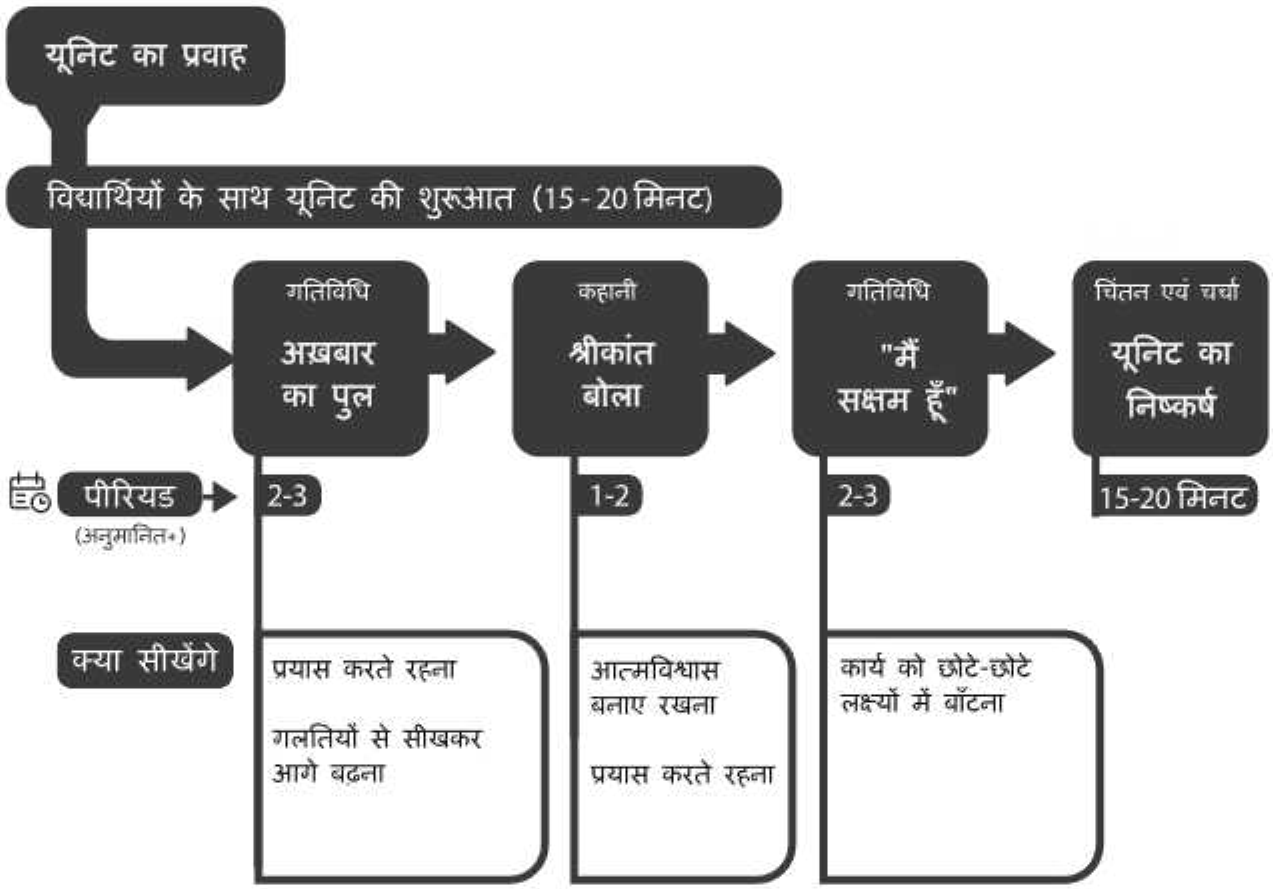

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

- यूनिट की शुरूआत में दिए गए संवाद पर चर्चा करें और विद्यार्थियों से उनके ऐसे अनुभवों के बारे में पूछें जहाँ उन्होंने किसी असंभव लग रहे कार्य को शुरू किया और उसे पूरा कर पाए।
- इस चर्चा के अंत में विद्यार्थियों को बताएँ कि आने वाले कुछ दिनों में वे ऐसे ही कुछ असंभव लगने वाले चुनौतीपूर्ण कार्यों में हिस्सा लेंगे और अपने आत्मविश्वास को परखेंगे|

1.1 गतिविधि | अख़बार का पुल

परिचय

अभी हम कुछ ऐसा करेंगे, जिसे हो सकता है आपने पहले न किया हो और ये भी हो सकता है कि उसे शुरू करने में आपको कठिनाई आए, पर हम रुकेंगे नहीं और आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे
- प्रयास करते रहना
- ग़लतियों से सीखकर आगे बढ़ना

सामग्री | पुराने अख़बार (3 डबल शीट हर समूह के लिए)

फ़ैसिलिटेटर नोट
- सभी विद्यार्थियों को गतिविधि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।
- गतिविधि के दौरान कक्षा में उथल-पुथल होगी। पुल न बनने की स्थिति में विद्यार्थी परेशान हो सकते हैं। यह स्वाभाविक है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- 5-6 विद्यार्थियों का समूह बनाएँ और हर समूह को अख़बार की 3 डबल शीट दें।
- हर समूह 2 डेस्कों के बीच में अखबार का एक ऐसा पुल बनाएँगे जो ज़्यादा से ज़्यादा वस्तुओं का वज़न उठा सके।
    - 2 डेस्कों के बीच में कम से कम 2 फुट का अंतर होना चाहिए।
- पुल बन जाने के बाद विद्यार्थी पुल पर अलग-अलग वस्तुएँ रखकर उसकी मज़बूती को परखेंगे और ज़्यादा से ज़्यादा वस्तुएँ उस पर रखने की कोशिश करेंगे।
- अंत में सभी समूह दूसरे समूहों के सदस्यों की पुल निर्माण की प्रक्रिया को समझेंगे और उनकी रणनीति के बारे में जानेंगे।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थियों को अपने-अपने समूहों में नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए कहें -
- शुरूआत में जब आपको कहा गया कि अखबार का पुल बनाना है, तो आपके मन में किस तरह के विचार आ रहे थे?
- इस गतिविधि में जब चुनौतियाँ बढ़ीं, तो आपने क्या अलग किया?
- ऐसी कोई घटना याद करें जब आपने अपने जीवन में कोई मुश्किल काम पूरा किया हो। इन कामों को आप कैसे पूरा कर पाए? यह घटना आपको अपने बारे में क्या बताती है?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

चर्चा कर लेने के बाद हर समूह से कुछ विद्यार्थियों को पूरी कक्षा के साथ अपने अनुभव को साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

कुछ कार्यों के बारे में सुनते ही ऐसा लगने लगता है कि ये काम तो हो ही नहीं सकते। ऐसे में अगर हम आत्मविश्वास के साथ उस कार्य की शुरूआत करें और करते समय हो रही गलतियों से सीखते हुए लगातार प्रयास करते रहें तो वही कार्य बेहतरीन तरीके से पूरा हो सकता है।

1.2 कहानी | श्रीकांत बोला

परिचय

'अखबार का पुल' गतिविधि करके हम उस काम को करने में सफल हुए जो शुरू में चुनौतीपूर्ण लग रहा था। हमारे जीवन में विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ आती हैं - जैसे कि शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक। कई लोग अपने आत्मविश्वास के बल पर ऐसी चुनौतियों से जूझते हुए अपने सपनों को पूरा करने के लिए लगातार प्रयास करते रहते हैं।

1-2 पीरियड

क्या सीखेंगे

- आत्मविश्वास बनाए रखना
- प्रयास करते रहना

भूमिका

- क्या आपकी ज़िंदगी में कभी ऐसा हुआ है कि किसी ने आपकी काबिलियत पर विश्वास न करते हुए आपको किसी अवसर से वंचित किया हो?
- यदि ऊपर दिए प्रश्न का जवाब हाँ है;तो आपको उस स्थिति में कैसा लगा और आपने क्या किया?

श्रीकांत बोला एक ऐसे ही व्यक्ति हैं जिन्होंने किसी भी रुकावट को अपने रास्ते की बाधा नहीं बनने दिया। इसी असाधारण सोच के कारण आज वे बहुत बड़ी कंपनी के मालिक हैं।

कहानी

बोलांट इंडस्ट्रीज़ के मालिक श्रीकांत बोला ने न तो कभी नीला आसमान देखा और न ही कभी रंग-बिरंगे फूलों से सजी धरती। वे जन्म से ही नहीं देख पाते थे। गरीब माता-पिता परेशान हो गए कि वे इस बच्चे का पालन-पोषण और पढ़ाई कैसे करा पाएँगे। उन्हें विद्यालय में बहुत ही मुश्किल से दाखिला मिला, पर सुविधाओं और समझ के अभाव में उनका सीखना-सिखाना नहीं हो पा रहा था। अध्यापक भी सहयोग देने में असमर्थ थे। देख न पाने और सामाजिक असहयोग के कारण श्रीकांत के सामने चुनौतियाँ मुँह बाए खड़ी थीं। आख़िरकार माता-पिता ने उन्हें हैदराबाद में नेत्रहीन बच्चों के देवनार स्कूल में भर्ती करा दिया।

वहाँ पर उन्हें सीखने का बेहतर वातावरण मिला और सीखना शुरू हो गया। उनकी प्रतिभा बाहर आने लगी। जब उन्हें स्व. अब्दुल कलाम के 'लीड इंडिया प्रोजेक्ट' में काम करने का मौका मिला तो उन्होंने उसमें बहुत उत्साह के साथ भाग लिया। इसमें काम करते हुए उनकी सीखने की क्षमता और उनका प्रदर्शन बेहतर होता चला गया और उन्होंने 10 वीं कक्षा की परीक्षा में 90% से अधिक अंक प्राप्त किए। परन्तु अच्छे अंक प्राप्त करने के बावजूद, उन्हें 11वीं कक्षा में विज्ञान पढ़ने की अनुमति नहीं मिली। ऐसी विषम परिस्थिति में श्रीकांत सोचने लगे, 'मैंने इतनी मेहनत की और कौशल विकसित किए;फिर मुझे मौका क्यों नहीं दिया जा रहा है? पर मैं इस शक्तिशाली सिस्टम के सामने अकेला क्या कर सकता हूँ? कुछ तो करना पड़ेगा।' उन्होंने कमर कस ली और माता-पिता को साथ लेकर वे कोर्ट पहुँच गए। कोर्ट में अपनी बात को उन्होंने ज़ोरदार तरीके से रखा कि वे भी विज्ञान की पढ़ाई कर सकते हैं। आखिर में कोर्ट को उनकी बात समझ आ गई; और कोर्ट ने श्रीकांत को विज्ञान पढ़ने का मौका दिलवाया।

यूनिवर्सिटी में दाखिले के वक़्त भी वही परिस्थितियाँ फिर से सामने आ गईं। योग्यता होते हुए भी, उन्हें कुछ प्रतिष्ठित संस्थानों में दाखिला नहीं मिला। उनसे जूझते हुए अपनी इच्छाशक्ति और अथक प्रयासों के कारण श्रीकांत को दुनिया के एक श्रेष्ठ इंजीनियरिंग कॉलेज 'MIT', अमरीका में दाखिला मिल गया। वहाँ से उन्होंने बिज़नेस मैनेजमेंट में डिग्री प्राप्त की। अमरीका में रहते हुए उन्होंने देखा कि वहाँ दिव्यांगों के लिए बहुत से अवसर हैं जो अपने देश में नहीं हैं। अपने देश में यह काम मैं भी कर सकता हूँ, ऐसा सोचकर वे भारत लौट आए।

सन् 2014 में कुछ पूँजी इकट्ठा करके उन्होंने अपने ही जैसे दिव्यांग साथियों को मौका देने के लिए बोलांट इंडस्ट्रीज़ की शुरूआत की, जहाँ रिसाइकल्ड कागज़ और पत्तों से इको फ्रैंडली प्लेट, कप, ट्रे इत्यादि बनाने का काम किया जाता है। श्रीकांत के प्लांट में लगभग 150 दिव्यांग साथी मिलकर काम करते हैं और एक सफल कारोबार चलाते हैं। आज बोलांट इंडस्ट्रीज की कीमत लगभग 400 करोड़ रुपये मानी जाती है।

साथ ही उन्होंने दिव्यांग बच्चों के लिए 'समन्वय' नाम का एक स्कूल भी खोला है, जहाँ हर बच्चा अपनी शारीरिक चुनौतियों से ऊपर उठकर आत्मविश्वास के साथ, अपनी क्षमताओं के बल पर, अपने सपनों को पंख देने में सक्षम बन सके।

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

नीचे दिए हुए प्रश्नों की चर्चा पूरी कक्षा में एक बड़े समूह में होगी -

- कहानी सुनने के बाद आपके मन में पहला विचार क्या आया?
- भारत में दाखिला नहीं मिलने पर भी उन्होंने क्या सोचकर दूसरे देशों में आवेदन किया?
- क्या आप ऐसे किसी व्यक्ति को जानते हैं जिन्होंने किसी चुनौती के बाद भी सफलता प्राप्त की है? क्या आप उनके बारे में कुछ बता सकते हैं?

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

इस कहानी और चर्चा के माध्यम से हमने जाना कि चुनौतियों का सामना करने में आत्मविश्वास का कितना महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। हमें जब कभी ऐसा लगे कि बहुत प्रयासों के बाद भी हम आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं तो श्रीकांत बोला और उनके जैसे कई लोगों से प्रेरणा लेते हुए सोचें कि "मैं कर सकता/सकती हूँ"।

1.3 गतिविधि | "मैं सक्षम हूँ"

परिचय

श्रीकांत बोला की कहानी से हमें प्रेरणा मिली कि कितनी भी बड़ी चुनौती क्यों न हो, आत्मविश्वास से आगे बढ़कर हम उसका सामना कर सकते हैं। आइए अब हम भी उनसे प्रेरणा लेते हुए, उन कार्यों के बारे में सोचें और पहचानने की कोशिश करें जो हमें हमेशा से ही कठिन लगे हों।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- कार्य को छोटे-छोटे लक्ष्यों में बाँटना

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

- चुनौतियाँ चुनते समय ध्यान रहे कि वे विद्यार्थियों के जीवन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हों।
- प्रस्तुति के दौरान ध्यान रखा जाए कि विद्यार्थी एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करें।
- विद्यार्थियों को लक्ष्यों की कठिनाई का स्तर धीरे-धीरे बढ़ाने को कहें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थियों के 5-6 के समूह बनाएँ।
- प्रत्येक समूह को नीचे दी गई चुनौतियों में से किसी एक को चुनने को कहें-
  - मैं सुबह जल्दी नहीं उठ पाता/पाती।
  - मेरा प्रोजेक्ट कभी भी समय पर पूरा नहीं होता।
  - मुझे अपने माता-पिता को 'आउट स्टेशन टूर' की अनुमति लेने के लिए मनाने में कठिनाई आती है।
- विद्यार्थियों को दस मिनट का समय दें जिसमें वे इन चुनौतियों का सामना करने के लिए नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें-
  - इस कार्य को पूरा करने में मुझे इसे कौन-कौन से छोटे-छोटे लक्ष्य में बाँटना होगा?
  - इन लक्ष्यों को पूरा करने में मुझे कौन-कौन मदद कर सकता है?

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

गतिविधि के बाद बड़े समूह में नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करें -

- चुने हुए कार्य को छोटे लक्ष्यों में बाँटकर आपको कैसा लगा?
- अपने निजी जीवन में बड़े या मुश्किल कार्य को छोटे-छोटे लक्ष्यों में बाँटना आपको कैसे मदद करेगा?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

चिंतन एवं चर्चा के बाद पूरी कक्षा के समक्ष प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह में की गई चर्चा की प्रस्तुति करेगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

विद्यार्थियों को मुश्किल कार्य करने को तैयार होने के लिए बधाई दें और इसका पालन करते हुए कार्य को पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित करें। किसी भी मुश्किल काम को करने के लिए हम आत्मविश्वास के बल पर छोटे-छोटे क़दम सोचकर शुरूआत कर सकते हैं।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- 'मैं कर सकता/सकती हूँ' की यूनिट में हमने क्या-क्या गतिविधियाँ कीं और उनसे क्या सीखा?
- यदि आपको लगे कि आपसे कोई कार्य नहीं हो पाएगा तो आप क्या करेंगे? उदाहरण देकर बताएँ।

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

दैनिक जीवन में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और कई बार हम कार्य अधूरा छोड़ देते हैं। अख़बार का पुल बनाते हुए हमने सीखा कि खुद पर विश्वास रखते हुए कार्य करने पर डटे रहने से सफलता मिल सकती है। श्रीकांत बोला की कहानी से प्रेरणा मिली कि कितनी भी बड़ी चुनौती क्यों न हो, आत्मविश्वास से आगे बढ़कर हम उसका सामना कर सकते हैं। हमारे जीवन में कई मुश्किल कार्य ऐसे हैं जिन्हें एक ही बार में पूरा करना संभव नहीं लगता। इसलिए हम छोटे-छोटे क़दम लेकर ऐसे कार्य को पूरा करने की कोशिश करेंगे।

यूनिट 2 प्रभावी संचार
Effective Communication

V2W6Y6

फ़ैसिलिटेटर के लिए

ऊपर दिए गए सभी रेखाचित्रों में क्या समानता है? ये सभी अलग-अलग माध्यमों का इस्तेमाल करते हुए एक ख़ास समूह तक अपनी बात पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं। जब हम भी विद्यार्थियों को वाद-विवाद जैसी गतिविधियों का अनुभव देते हैं, तब यही अपेक्षा होती है कि वे अपना मत सबके सामने अच्छी तरह रख पाएँ। आज के समय में यह एक महत्त्वपूर्ण क्षमता है। भविष्य में समस्याओं के समाधान निकालने या मिलकर कोई नया विचार बनाने के लिए हमारे विद्यार्थियों को दूसरों के साथ प्रभावी तौर पर बातचीत करना सीखना होगा।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

अब तक हमने प्रभावी संचार (effective communication) की बुनियादी क्षमताएँ सीखीं - ध्यान से सुनना, स्पष्ट रूप से स्वयं को अभिव्यक्त करना और सहमति बनाना। इस यूनिट में विद्यार्थी इनका अभ्यास करते हुए दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता विकसित करेंगे। किसी को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए ज़रूरी है कि विद्यार्थी बात करते समय निम्न क्षमताओं को समझें और सीखें-

1. तर्क व प्रमाण दे पाना
2. दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना
3. अपनी बात को क्रमबद्ध तरीके से रख पाना
4. किसी वस्तु या मुद्दे में दूसरों का फ़ायदा बता पाना

यूनिट का प्रवाह

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत (15 - 20 मिनट)

	गतिविधि	गतिविधि	कहानी	
	ऐड-मैड (Ad-Mad)	क्या तुम मुझे मना सकते हो?	सिल्वांस पटेल और ख़ुशी मीना	यूनिट का निष्कर्ष
पीरियड (अनुमानित*)	3-4	2-3	2-3	15-20 मिनट
क्या सीखेंगे	अपनी बात को क्रमबद्ध तरीके से रख पाना दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना किसी वस्तु या मुद्दे में दूसरों का फ़ायदा बता पाना	तर्क व प्रमाण दे पाना दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना अपनी बात को क्रमबद्ध तरीके से रख पाना	दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना किसी वस्तु या मुद्दे में दूसरों का फ़ायदा बता पाना	

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

विद्यार्थियों को यूनिट का नाम बताते हुए उनसे पूछें कि -

- आपका सबसे पसंदीदा विज्ञापन कौन-सा है? उससे प्रभावित होकर आप किस प्रकार के निर्णय लेते हैं?
- किसे लगता है कि वे दूसरों से अपनी बात मनवा लेते हैं? उसके क्या कारण हो सकते हैं?
- आपको अपनी बात मनवाने की आवश्यकता क्यों महसूस होती है?

इस बातचीत के बाद उनसे कहें कि इस यूनिट में हम दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता को समझकर खुद में यह क्षमता विकसित करने की कोशिश करेंगे।

2.1 गतिविधि | ऐड-मैड (Ad-Mad)

परिचय

किसी को अपनी बात के लिए प्रभावित कर पाने के लिए यह ज़रूरी है कि हम उसे न सिर्फ़ तथ्यों के बारे में जानकारी दें, बल्कि उसके साथ एक भावनात्मक रिश्ता भी बनाने की कोशिश करें।

सामूहिक कार्य: 4 विद्यार्थी

क्या सीखेंगे — 3-4 पीरियड

- अपनी बात को क्रमबद्ध तरीके से रख पाना
- दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना
- किसी वस्तु या मुद्दे में दूसरों का फ़ायदा बता पाना

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

विद्यार्थियों को-

- अपने पसंदीदा विज्ञापनों और उनकी खास बातों को याद करने को कहें।
- गानों, धुनों, चित्रों, रोल प्ले, लिखित प्रस्तुति आदि का उपयोग करते हुए रचनात्मक विज्ञापन बनाने को कहें।
- ऐसी वस्तुओं या मुद्दों का चयन करने को कहें जिस पर सभी की सहमति बनाना मुश्किल है। कोशिश करें कि वे नूडल्स या साबुन जैसी किन्हीं चीज़ों का विज्ञापन न बनाएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थी 4-4 के समूह में बैठेंगे।
- हर समूह को किसी मुद्दे या वस्तु का चयन करने को कहें (जैसे कि पानी की बचत या सोलर बल्ब)। इसके लिए उन्हें 5 मिनट का समय दें।
- विद्यार्थियों को चुने हुए मुद्दे पर अपने समूह में 1 मिनट का विज्ञापन बनाने को कहें। इसके लिए उन्हें 15-20 मिनट का समय दें। विज्ञापन बनाने के लिए उन्हें निम्न बिंदुओं को ध्यान में रखने को कहें-
  - क्या ग्राहक विज्ञापन से भावनात्मक रूप से जुड़ पाएँगे? उन्हें क्या फ़ायदा होगा?
  - चयनित वस्तु या मुद्दे की ख़ास बातें क्या हैं? जैसे यदि सोलर बिजली का विज्ञापन है तो उसकी ख़ास बात यह है कि उससे प्रदूषण नहीं होता, और उसमें सूर्य की ऊर्जा जैसे प्राकृतिक संसाधान का इस्तेमाल होता है जो कभी ख़त्म नहीं होगा आदि।
  - विज्ञापन देखने के बाद ग्राहक से क्या अपेक्षा है? क्या वह वस्तु खरीदे या किसी मुद्दे के प्रति अपना नज़रिया या अपनी किसी आदत को बदले?
- विज्ञापन बन जाने के बाद हर समूह को पूरी कक्षा के सामने अपना विज्ञापन प्रस्तुत करने और दूसरे समूहों से फ़ीडबैक लेने के लिए आमंत्रित करें। इसके लिए हर समूह को 5 मिनट का समय दें।
- फ़ीडबैक देने के बिंदु नीचे दिए गए हैं, उन्हें बोर्ड पर लिख दें-
  - क्या ग्राहक को अपना फ़ायदा दिख रहा है?
  - क्या ग्राहक को चयनित वस्तु या मुद्दे की ख़ास बातें समझ आ रही हैं?
  - विज्ञापन देखने के बाद ग्राहक को कुछ करने की प्रेरणा मिल रही है? क्या वह अपनी कोई आदत या नज़रिया बदलने के लिए तैयार होगा?

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

गतिविधि के बाद निम्न वाक्यों को बोर्ड पर लिखें। व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थियों को उन पर सोचने और उन्हें पूरा करने को कहें-

इस गतिविधि में हुए अनुभव के बाद अपनी बात प्रभावी रूप से कहने और दूसरों से उसे मनवाने के बारे में-

- पहले मैं सोचता था /सोचती थी कि ____________________
- और अब मैं सोचता/सोचती हूँ कि ____________________

लिख लेने के बाद अपने-अपने समूहों में इन्हें साझा करने और इन पर चर्चा करने को कहें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

हर समूह से कुछ विद्यार्थियों को अपने विचार और समूह में हुई चर्चा साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

हमने समझा कि प्रभावशाली विज्ञापनों में बात ऐसे रखते हैं कि हम उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ महसूस करें और उनमें दी गई वस्तुओं से संबंधित ख़ास बातों की जानकारी भी मिले। तथ्यों और भावनाओं;दोनों का बराबर ध्यान रखते हुए हम अपनी बात ज़्यादा प्रभावी रूप से लोगों तक पहुँचाने में सफल हो सकते हैं। इसके लिए ज़रूरी है कि हम अपनी बात क्रमबद्ध तरीके से लोगों के सामने रखें।

2.2 गतिविधि | क्या तुम मुझे मना सकते हो?

परिचय

विज्ञापनों में अकसर ये होता है कि उत्पाद बनाने वाले सीधे अपने ग्राहकों से बात नहीं करते। टी.वी., अख़बार आदि बातचीत का माध्यम बनते हैं। लेकिन कई बार हमें प्रत्यक्ष रूप से भी किसी को प्रभावित करने की ज़रूरत पड़ सकती है। जैसे कि अभिभावकों को अपने पसंदीदा भविष्य के लिए, दोस्तों को कोई गलत काम करने से रोकने के लिए, वाद-विवाद में अपना तर्क रखने के लिए या अपने विचार के लिए समर्थन जुटाने के लिए। इस गतिविधि में अब हम प्रत्यक्ष रूप से किसी को मनाने के लिए pitch* तैयार करेंगे।

*पिच (pitch)- पिच का शाब्दिक अर्थ किसी वस्तु जैसे बॉल को हल्के से उछालना होता है। इस यूनिट के संदर्भ में पिच का अर्थ है अपने विचारों को लोगों के साथ इस उम्मीद से साझा करना कि वे उन्हें मान जाएँ।

सामूहिक कार्य: 4 विद्यार्थी

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- तर्क व प्रमाण दे पाना
- दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना
- अपनी बात को क्रमबद्ध तरीके से रख पाना

सामग्री | कागज़ | पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

- विद्यार्थियों को विज्ञापन बनाते हुए सीखी हुई बातों को याद करने को कहें।
- भावनात्मक रूप से अपनी बात रखने के साथ तर्क भी देने को कहें।
- प्रभावी संचार में अब तक सीखी गई क्षमताओं का उपयोग करने को कहें (ख़ासकर उचित हाव-भाव और बॉडी-लैंग्वेज का उपयोग)।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थी 4-4 के समूह में बैठेंगे।
- गतिविधि करने के लिए समूह के किन्हीं 2 साथियों को निम्न में से एक मुद्दे पर pitch तैयार करने को कहें।

Pitch के लिए मुद्दे:

- आपके दोस्त ने प्री - बोर्ड्स में फ़ेल होने की वजह से पढ़ाई छोड़ने का निर्णय लिया है। उसके हिसाब से वह पढ़ाई नहीं कर सकता और कोई छोटा-मोटा काम ढूँढ लेना ही उसके लिए बेहतर होगा। आपको इस दोस्त को पढ़ाई न छोड़ने के लिए मनाना है।
- स्कूल में बोर्ड्स के चलते कक्षा 9 से 12 तक के लिए खेल का पीरियड रद्द कर दिया गया है। प्रिंसिपल और सभी शिक्षकों को लगता है कि इससे विद्यार्थियों को पढ़ाई पर पूरा ध्यान देने में मदद मिलेगी। आपको प्रिंसिपल और सभी शिक्षकों को फिर से खेल का पीरियड शुरू करने के लिए मनाना है।

- समूह के बाकी 2 साथियों को मुद्दे के अनुसार pitch सुनने वाले की भूमिका निभाने को कहें। जैसे कि दोस्त (मुद्दा 1) या फिर स्कूल का स्टाफ़ (मुद्दा 2)।
- प्रत्येक समूह कोई भी एक मुद्दा चुन सकता है। समूह में चारों साथियों को मिलकर मुद्दे का चयन करना है।
- विद्यार्थियों को pitch देने के बारे में विस्तार से समझाएँ।

  Pitch तैयार करने के बिंदु: (इन्हें pitch देने और सुनने वाले; दोनों के साथ साझा करें।)
    - शुरूआती बिन्दु- आपका उद्देश्य क्या है?
    - इसके लिए आपके तर्क क्या हैं?
    - तर्क को मज़बूत करने के लिए प्रमाण या उदाहरण क्या हैं?
    - अब तक के मुख्य बिंदुओं का सार।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

अब हर समूह को पिच (pitch) देने और सुनने वालों के छोटे समूह में निम्न बिंदुओं पर फ़ीडबैक लिखने को कहें। इसके लिए FCAS (Feel, Clarify, Appreciate, Suggest), इस संक्षिप्त रूप (acronym) को बोर्ड पर लिखें।

1. **Feel** - प्रत्यक्ष रूप से Pitch देना/सुनना विज्ञापन बनाने या देखने से कैसे अलग है?
2. **Clarify** - Pitch देते/सुनते समय मेरे क्या सवाल हैं?
3. **Appreciate** - Pitch की कौन-सी बातें मुझे सबसे अच्छी लगीं?
4. **Suggest** - Pitch में कौन-सी 2 चीज़ों को और भी सुधारा जा सकता है?

इसके बाद दोनों उप-समूह आपस में ये फ़ीडबैक साझा करते हुए निम्न बिंदुओं पर चर्चा करेंगे-

- दोनों उप-समूहों के फ़ीडबैक के 2 एक जैसे बिन्दु
- Pitch देने के बारे में हमने क्या सीखा

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

हर समूह को अपने फ़ीडबैक से 2 एक जैसे बिन्दु और 2 'सीखने वाली बातें' सबके साथ साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

प्रत्यक्ष रूप से किसी को प्रभावित करने में तर्क और प्रमाण लोगों को ठोस कारण देते हैं कि वे आपकी बात पर ध्यान दें। इसके साथ ही प्रभावी संचार की क्षमताएँ सुनने वाले तक हमारे इरादे के प्रति हमारी निष्ठा को पहुँचाने में मदद करती हैं। किसी का विश्वास हासिल करने के लिए ये दोनों ही ज़रूरी हैं।

2.3 कहानी | सिल्वांस पटेल और ख़ुशी मीना

परिचय

अब तक हमने अलग-अलग उद्देश्यों के लिए अलग-अलग तरीके से अपनी बात को प्रभावशाली रूप से रखने के तरीकों का अभ्यास किया। इनके अलावा एक और संदर्भ भी है जब दूसरों को मनाने के लिए प्रभावी संचार की आवश्यकता पड़ सकती है। जब हम किसी मुद्दे में निजी रूप से रुचि रखते हैं तो उसके लिए अपने परिजनों और समुदाय को मनाने का काम काफ़ी भावनात्मक और चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसे समझने में यह कहानी हमारी मदद करेगी।

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे
- दूसरों की भावनाओं से जुड पाना
- किसी वस्तु या मुद्दे में दूसरों का फ़ायदा बता पाना

भूमिका

- क्या आपने कभी अपने किसी दोस्त को गलत रास्ते पर जाने से रोका है? यदि हाँ, तो आपने यह कैसे किया?
- क्या आपकी अपने दोस्तों के समूह में कभी किसी मुद्दे पर भावुक चर्चा हुई है? यदि हाँ, तो ऐसी चर्चा का परिणाम या अंत क्या हुआ?

कहानी

यह कहानी राजस्थान के उदयपुर जिले के सुदूर में स्थित गाँव किटोदा की दस वर्षीय ख़ुशी मीना, सिल्वांस पटेल और उनके दोस्तों की है। किटोदा एक आदिवासी गाँव है। आज ख़ुशी और उनके दोस्तों को स्कूल जाता देखकर, गाँव के मुखिया सिल्वांस पटेल और अन्य लोग काफ़ी प्रसन्न हैं।

वैसे तो हमारे पूरे देश की यह समस्या है कि बहुत-से बच्चों को पढ़ने की उम्र से पहले ही स्कूल छोड़ देना पड़ता है। किटोदा गाँव के बच्चों के लिए तो यह आम बात थी। वे बड़ों का हाथ बँटाने के लिए एवं घर की गरीबी से लड़ने के लिए स्कूल जाने के बजाय किसी मालिक के यहाँ फ़ैक्ट्री में काम करते थे। गाँव के मुखिया सिल्वांस पटेल को यह बात अंदर ही अंदर परेशान कर रही थी कि उनके घर और गाँव के बच्चे स्कूल नहीं जा पाते हैं।

एक दिन सिल्वांस पटेल को अपने कुछ साथियों के साथ बैठकर हुक्का पीते हुए एक बात सूझी कि "कितना अच्छा होता यदि हमारे गाँव के सभी बच्चे स्कूल जाते, पढ़ते-लिखते और गाँव का नाम रोशन करते।" लेकिन यह बात सोचते-सोचते सिल्वांस उदास हो गए। उनकी कल्पना पर जैसे किसी ने घड़ों पानी उँड़ेल दिया हो। वह उठकर जाने लगे। लोगों ने उन्हें उठते देखा तो पूछा, "क्या हो गया सिल्वांस! तुम अचानक से इतने अनमने क्यों हो गए? क्या सोच रहे हो?" सिल्वांस थोड़ी देर चुप रहे लेकिन उनसे बहुत देर तक चुप भी नहीं रहा गया। उन्होंने कहा, "मैं सोच रहा था कि यदि हमारे गाँव के लड़के-लड़कियाँ स्कूल जाते तो कितना अच्छा होता।" इस बात को कहते-कहते सिल्वांस की आवाज़ धीमी होने लगी। लेकिन कहकर उन्होंने काफ़ी हल्का महसूस किया।

गाँव के ज़्यादातर बुज़ुर्ग अपने विचारों में काफ़ी रूढ़िवादी थे। वह लड़कों को स्कूल भेजने के लिए तैयार हो सकते थे लेकिन लड़कियों को, कभी नहीं।

धीरे-धीरे लड़के-लड़कियों के स्कूल जाने वाली यह बात घर-घर फैलने लगी। सिल्वांस रातभर मन ही मन इस कल्पना को साकार करने के लिए अनेक योजनाएँ बनाने लगे। अब समय आ गया था कि वे लोग घर-घर जाकर लोगों को बताएँ कि पढ़ना हमारे बच्चों का बुनियादी हक़ है। "सब नहीं पर कुछ लोग तो मानेंगे हमारी बात। एक-एक बूँद से ही तो घड़ा भरता है।" यह सोचकर सिल्वांस और उनके मित्र जयराम ने कई नारे तैयार किए। सिल्वांस ने कहा, "लड़का-लड़की एक समान, सबको शिक्षा का अधिकार।" जयराम ने भी दिमाग पर ज़ोर डाला - "पढ़ी–लिखी लड़की, रोशनी घर की।"

अब तो सिल्वांस ने अपने इस मिशन में अपने दोस्त रग्घू को भी जोड़ लिया। जब उनकी बेटी ख़ुशी को यह बात पता चली तो वह अपनी कुछ सहेलियाँ इकट्ठा कर लाई। जयराम की बेटियों ने अपनी माँ फुलमतिया को मना लिया। सिल्वांस और उनकी टीम ने मिलकर अपने इस मिशन को आगे बढ़ाया। एक-एक घर जाकर लोगों को समझाया-बुझाया। उनके उलटे-सीधे सवालों का जवाब दिया। ख़ुशी की टीम ने मिलकर अशिक्षित लड़कियों पर एक नाटक बना डाला। मिट्टी और घास-फूस की दीवारों पर रातों-रात पीठ पर बस्ता टाँगे लड़कियों के चित्र बना दिए गए। धीरे-धीरे सिल्वांस का कारवाँ आगे बढ़ने लगा, लोग उनकी बातों को सुनने और समझने लगे।

गाँव वालों को मना लेने के बाद भी सिल्वांस की समस्या समाप्त नहीं हुई थी, क्योंकि गाँव के आप-पास कोई स्कूल था ही नहीं और जो था, वहाँ बच्चों का पहुँच पाना किसी तूफ़ानी नदी को पार करने से कम नहीं था। लेकिन सिल्वांस और उनके साथियों ने हार नहीं मानी। दौड़-धूप कर, अधिकारियों से बातचीत कर, उनको अपनी बात समझाकर उन्होंने अपनी कल्पना को साकार कर दिया। बच्चों को स्कूल ले जाने के लिए बसों की, अध्यापक और स्कूल की व्यवस्था की। ख़ुशी और उसके जैसी कितनी ही लड़कियाँ स्कूल जाने लगीं। आज गाँव किटोदा ही नहीं, जाने कितने गाँव के लड़के और लड़कियाँ सिल्वांस और उनके साथियों के प्रयास से स्कूल जा रहे हैं। किटोदा गाँव का कोई भी बच्चा अनपढ़ नहीं है। अब ऐसे में क्यों न ख़ुश हों सिल्वांस और उनके साथी।

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- इस कहानी में प्रभावी संचार ने किस तरह लड़कियों के स्कूल न जा पाने की समस्या को सुलझाने में मदद की?
- इस कहानी में सिल्वांस और उनके साथियों ने गाँव वालों को मनाने के लिए किस-किस तरह की संचार रणनीतियाँ अपनाईं? इन रणनीतियों ने किस तरह से गाँव वालों के पूर्वाग्रह (bias) को तोड़ने में मदद की होगी?

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

हमारे सामने अकसर ऐसे मुद्दे आएँगे जिनके प्रति समाज में लोगों के बहुत गहरे पूर्वाग्रह (bias) होंगे। ऐसी स्थिति में उनके सामने हार मान जाना या हताश हो जाना एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया हो सकती है। पर दूसरों को सकारात्मक (positive) रूप से प्रभावित करने के अनेक तरीके हो सकते हैं जिन्हें धैर्य और लोगों के प्रति सहानुभूति (empathy) रखकर अपनाने से हमें सफलता प्राप्त हो सकती है।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- क्या आपके आसपास भी कोई ऐसा मुद्दा है जिसके लिए आप दूसरों को सकारात्मक (positive) रूप से प्रभावित कर सकते हैं?
- इस यूनिट में कौन-सी बात/क्षमता/गतिविधि आपको सबसे अच्छी लगी? और क्यों?

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

कक्षा 9 से लेकर अब तक आपने देखा कि प्रभावी संचार के अनेक आयाम हैं - किसी को ध्यान से सुनने से लेकर उन्हें प्रभावित कर पाने तक। इनका नियमित रूप से अभ्यास करके हम सभी इन क्षमताओं में दक्षता हासिल कर सकते हैं और दूसरों के साथ सकारात्मक (positive) रूप से जुड़ने में सफल हो सकते हैं।

यूनिट 3

समीक्षात्मक सोच
Critical Thinking

C7G5T2

फ़ैसिलिटेटर के लिए

किसी भी प्रकार की राय बनाने या निर्णय लेने से पहले हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम जिस चीज़ को देखें, सुनें या उसके बारे में पढ़ें, उसे बारीकी से समझें। यह भी ज़रूरी है कि उससे जुड़े विभिन्न पहलुओं के बारे में ध्यानपूर्वक सोचें और सारे तथ्यों का तार्किक ढंग से विश्लेषण करते हुए ही निष्कर्ष तक पहुँचें। कई बार हमारी भावनाएँ और पहले से बनाई गई सोच हमारे निर्णय को प्रभावित करती हैं, इसलिए किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले इनको दूर करना भी ज़रूरी हो जाता है।

यह भी आवश्यक है कि किसी भी मुद्दे को स्पष्टता से समझने के लिए सवाल पूछे जाएँ। साथ ही अपना मत रखने के लिए प्रभावी तर्क प्रस्तुत किए जाएँ।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

इस यूनिट के माध्यम से विद्यार्थी 'गहन सोच' से जुड़ी निम्न क्षमताओं का महत्त्व समझेंगे और उनका अभ्यास करेंगे:

1. सवाल पूछना
2. तर्क निर्माण करना (Building Argument)
3. लीक से हटकर सोचना
4. किसी भी मुद्दे को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखना

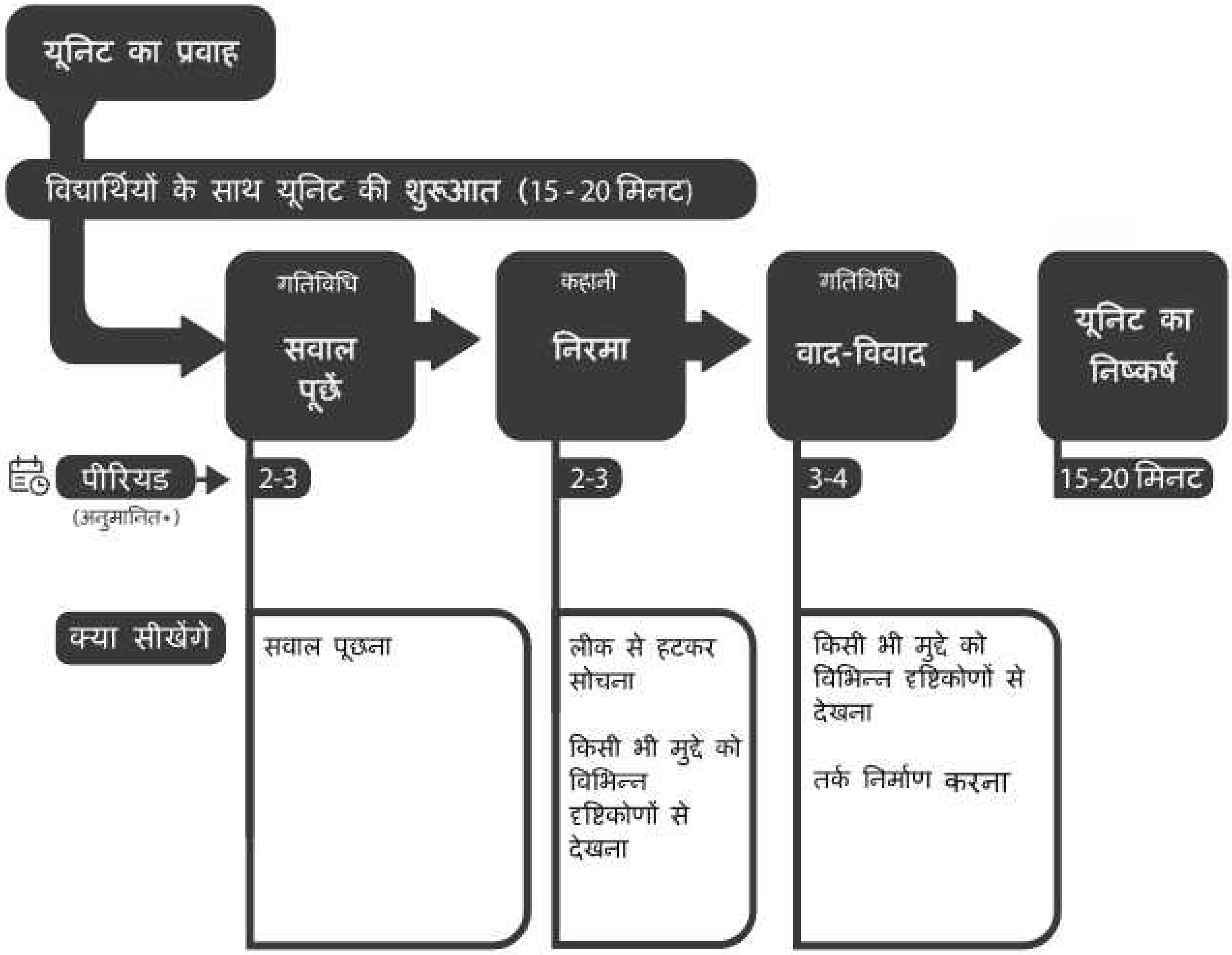

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

यूनिट के परिचय में दिए गए संवाद का प्रयोग करके विद्यार्थियों के साथ इस यूनिट पर बातचीत शुरू की जा सकती है।

3.1 गतिविधि | सवाल पूछें

परिचय

किसी भी मुद्दे की सही समझ होना आवश्यक है जो कि केवल प्रस्तुत की गई जानकारी से विकसित नहीं हो सकती। सवाल पूछना एक महत्त्वपूर्ण कौशल है जो किसी मुद्दे की पूर्ण समझ बनाने में सहायता करता है।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

क्या सीखेंगे — 2-3 पीरियड

- सवाल पूछना

फ़ैसिलिटेटर नोट

प्रश्नों का निर्माण करते हुए हो सकता है कि शुरू के प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण या अर्थपूर्ण न बनें। विद्यार्थियों को प्रासंगिक, महत्त्वपूर्ण तथा अर्थपूर्ण प्रश्न बनाने के लिए पर्याप्त समय, अवसर तथा मार्गदर्शन दें। ध्यान दें कि प्रश्न बनाते हुए समूह के सभी सदस्यों के सुझाव शामिल हों।

कैसे करें — चिंतन एवं चर्चा — सीखें साथियों के साथ — साझा करें

- विद्यार्थी 5-6 के समूह में बैठेंगे।
- हर समूह अपने लिए निम्नलिखित परिस्थितियों में से किसी एक का चुनाव करेगा:
  - आप एक शिक्षक हैं और आपकी कक्षा के कुछ विद्यार्थी न तो रोज़ आते हैं न ही होमवर्क करते हैं।
  - आपका एक साथी रोज़ाना अपने खाने में चिप्स, चॉकलेट, नमकीन जैसे जंक फ़ूड ही लाता है।
  - कई दिनों से आपके मोहल्ले में कई लोगों को उल्टी-दस्त की शिकायत है।
  - आप फ़ैक्ट्री में कार्य करने वाली एक महिला हैं। आपको पता चलता है कि आपको साथी पुरुष कर्मचारियों के मुकाबले कम वेतन मिला है।
  - आप रोज़ शाम को पार्क में अपने दोस्तों के साथ खेलते थे, पर अब बढ़ते प्रदूषण के कारण खेलने नहीं जा रहे हैं।
  - आपको शाम 6 बजे के बाद घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं है।
- परिस्थिति का चुनाव करने के बाद हर समूह निम्नलिखित तालिका के अनुसार प्रश्न बनाएगा:

सीधे प्रश्न	अप्रत्यक्ष प्रश्न
प्रश्न जिनमें क्या, क्यों, कैसे, कौन जैसे शब्द हों, जैसे: • इस घटना का प्रभाव किस पर पड़ रहा है? • ऐसी स्थिति क्यों बन रही है? • स्थिति को कैसे सुलझाया जा सकता है?	प्रश्न जिनकी शुरूआत इस तरह हो: • यदि आपने ऐसा किया होता तो...... • यदि परिस्थिति उलट होती तो....... • अगर आपको इस परिस्थिति में कुछ बदलना हो तो..........

- सारे प्रश्न लिखने के बाद समूह हर प्रश्न को पढ़ेगा और सोचेगा कि प्रश्नों को और महत्त्वपूर्ण या अर्थपूर्ण कैसे बनाया जा सकता है?
- आवश्यकता होने पर प्रश्नों को बदला जा सकता है।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

सभी विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में निम्न प्रश्नों पर चर्चा करेंगे:

- प्रश्न बनाने से आपको क्या नई जानकारी मिली?
- क्या प्रश्न पूछने से आप परिस्थिति को बेहतर रूप से समझ पाए? कैसे?
- कई बार ऐसा समझा जाता है कि प्रश्न पूछने से केवल टकराव पैदा होता है। इस विषय में आपकी क्या राय है?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

हर समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह में हुई चर्चा को संक्षेप में पूरी कक्षा को बताएगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि से हमने सीखा कि किसी भी परिस्थिति की पूरी समझ बनाने के लिए सवाल पूछना महत्त्वपूर्ण है। कुछ परिस्थितियों में लग सकता है कि सवाल पूछने से टकराव हो सकता है,पर असल में सवाल पूछने से टकराव का कारण पता चलता है। इससे परिस्थिति के बारे में पूरी जानकारी मिलती है और परिस्थिति सुधरने की संभावना बढ़ जाती है। हमने यह भी सीखा कि सार्थक तथा महत्त्वपूर्ण प्रश्न कैसे बनाए जा सकते हैं।

3.2 कहानी | निरमा

परिचय

समीक्षात्मक सोच क्या केवल प्रश्न पूछना है?

समीक्षात्मक सोच में और कौन-से कौशल शामिल हैं?

करसन भाई की कहानी के द्वारा हम एक ऐसे व्यक्ति के बारे में जानेंगे जिसने समीक्षात्मक सोच के कौशलों का अपने जीवन में प्रयोग किया।

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- लीक से हटकर सोचना
- किसी भी मुद्दे को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखना

भूमिका

- विद्यार्थियों से पूछें, "आप टी.वी. पर विज्ञापन देखते होंगे। क्या आपको विज्ञापन में आने वाला कोई गाना/ जिंगल याद है?"
- फिर उन्हें बताएँ कि ऐसा ही एक जिंगल बहुत प्रचलित हुआ था, "सबकी पसंद निरमा.."।
- आज हम एक कहानी सुनने जा रहे हैं, यह ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसने वाशिंग पाउडर बनाया और उसे घर-घर में प्रसिद्ध कर दिया। आइए, जानते हैं कैसे?

कहानी

करसन भाई बचपन से ही अपने आसपास की चीज़ों का बहुत बारीकी से अवलोकन करते थे। उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता था कि हम घरों में बहुत सारी ऐसी वस्तुओं का उपयोग करते हैं जो विभिन्न प्रकार के रसायनों से मिलकर बनी हैं। शायद इसी रुचि के कारण करसन भाई ने स्कूली शिक्षा के बाद रसायन विज्ञान की पढ़ाई की और फिर एक प्रयोगशाला (लैब) सहायक की नौकरी करने लगे।

करसन भाई जब भी घर पर होते तो घर में मौजूद कपड़े धोने वाले पाउडर पर कई बार उनकी नज़र ठिठक जाती। उस समय कपड़े धोने का पाउडर बहुत मँहगा आता था।

करसन भाई ने सोचा, "क्यों न अपनी रुचि और रसायनों के अनुभव का लाभ उठाकर डिटर्जेंट पाउडर बनाया जाए जो सस्ता हो, पर अच्छा हो", लेकिन उसके लिए कई बारीकियों को समझना ज़रूरी था- "डिटर्जेंट बनाने के लिए कौन-कौन सी सामग्री चाहिए?" "वह सामग्री कहाँ से मिलेगी?" "मिश्रण कैसे तैयार होगा?" "कितना खर्चा आएगा?" इत्यादि।

उन्होंने किताबें देखीं, लोगों से इस विषय पर बात की, खुद कई बार परीक्षण किए, नोट्स बनाए और अपने काम में जुट गए। काफ़ी मेहनत, परीक्षण और प्रयोगों के बाद आखिरकार वे अच्छी क्वॉलिटी का एक सस्ता डिटर्जेंट पाउडर बनाने में सफल हुए।

उन्होंने इस पाउडर को अपने दोस्तों को इस्तेमाल करने को दिया। सबने उसको सराहा। अब समय था बाज़ार में महँगे इंटरनेशनल ब्रांड वाले डिटर्जेंट के सामने अपने डिटर्जेंट को लाने का। सामान्य तौर पर एक बड़े ब्रांड से टक्कर लेना पागलपन से कम नहीं था। परंतु करसन भाई ने काफ़ी सोचा और इस मान्यता को बदलने की ठान ली।

करसन भाई अपनी साइकिल लेकर घर से निकल पड़ते। साइकिल के कैरियर में डिटर्जेंट के पैकेटों से भरे हुए कुछ झोले रोज़ बँधे रहते, जिन्हें वे ऑफ़िस से आते-जाते, घर-घर बेचते। कम दाम और अच्छी गुणवत्ता के कारण उनका पाउडर हाथों-हाथ बिकने लगा। बाज़ार में मिलने वाले पाउडर से करसन भाई का पाउडर आधे से भी कम दाम में मिल जाता था।

उन्होने उस डिटर्जेंट का नाम अपनी बेटी के नाम पर रखा 'निरमा'। धीरे-धीरे उनके डिटर्जेंट पाउडर की माँग और बढ़ने लगी। उन्होंने इस अवसर का लाभ उठाया और नौकरी छोड़कर पूरी तरह से इसी काम में लग गए। करसन भाई अब अपने निरमा पाउडर को गुजरात के अलावा गुजरात से बाहर भी भेजने लगे।

गुजरात से बाहर उनका माल तो जाता, परंतु दुकानदार/ विक्रेता समय पर पैसा नहीं चुकाते थे। इस कारण उधारी बढ़ती चली जाती। कंपनी को बहुत नुकसान उठाना पड़ता। करसन भाई ने अपने साथियों के साथ चर्चा की, कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाए? सभी का मानना था कि इंतज़ार के अलावा कुछ नहीं कर सकते क्योंकि पहले ऐसी परिस्थिति में ऐसा ही किया गया था। करसन भाई ने सोचा कि घाटे से उबरने ने लिए उन्हें विक्रेताओं पर दबाव डालना होगा और उन्होंने अपने उत्पादों को बाज़ार से वापस उठा लेने का निर्णय ले लिया। कम्पनी ने रातों-रात सभी विक्रेताओं से अपने उत्पाद उठा लिए तथा उधार पर सामान देना बंद कर दिया। ऐसा पहले किसी ने नहीं किया था।

साथ ही उन्होंने एक आकर्षक जिंगल के साथ टी.वी पर विज्ञापनों की झड़ी लगा दी। हुआ ये कि एक तरफ़ लोगों की जुबान पर निरमा पाउडर का नाम चढ़ गया; वहीं दूसरी तरफ दुकानदारों के पास बेचने के लिए निरमा पाउडर था ही नहीं। एक बार फिर वॉशिंग पाउडर की माँग बढ़ गई। परन्तु इस बार करसन भाई ने शर्त रखी। अब वह केवल पूरे पैसे देने के बाद ही दुकानों को पाउडर देंगे। इससे सामान सही समय पर पहुँचने लगा और पैसे का भुगतान भी समय से होने लगा। कंपनी का घाटा मुनाफ़े में बदलने लगा।

आज निरमा कंपनी में लगभग 15000 कर्मचारी कार्यरत हैं और यह 5000 करोड़ से अधिक का कारोबार कर रही है।

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

- करसन भाई ने ऐसा क्या सोचा जो लीक से हटकर था?
- यदि करसन भाई लीक से अलग नहीं सोचते तब उन्हें किन जोखिमों का सामना करना पड़ सकता था?
- क्या करसन भाई ने किसी परिस्थिति को एक से अधिक दृष्टिकोणों से देखा? ऐसा करके उन्हें क्या लाभ हुआ?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

करसन भाई की कहानी से हमने समझा कि उन्होंने मौजूदा स्थिति का विश्लेषण करके आने वाले परिणामों का अनुमान लगाया और लीक से हटकर अपना निर्णय लिया। उन्होंने परिस्थितियों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखकर जोखिम की संभावना को कम किया। इस तरह उन्होंने समीक्षात्मक सोच का प्रयोग करके सफलता पाई।

3.3 गतिविधि | वाद-विवाद

परिचय

हम सबको हर रोज़ किसी न किसी मुद्दे पर अपनी राय व्यक्त करने या विकल्प चुनने की आवश्यकता होती है। इसके लिए किसी भी मुद्दे के एक से अधिक परिप्रेक्ष्य पता होना आवश्यक है और साथ ही ज़रूरत है तर्क निर्माण की। वाद-विवाद की गतिविधि के दौरान विद्यार्थी इन कौशलों के प्रयोग का अभ्यास करेंगे।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

क्या सीखेंगे — 3-4 पीरियड

- तर्क निर्माण करना
- किसी भी मुद्दे को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखना

सामग्री | कागज़ | पेन

कैसे करें — चिंतन एवं चर्चा — सीखें साथियों के साथ — साझा करें

- विद्यार्थियों को बताएँ कि उन्हें आज एक वाद-विवाद की गतिविधि में भाग लेना है।
- वाद-विवाद के लिए निम्नलिखित विषयों को बोर्ड पर लिखें :
  - परीक्षाएँ ज़रूरी हैं।
  - कक्षा में बेहतर प्रदर्शन के लिए ट्यूशन की ज़रूरत है।
  - स्कूल में सीखने के लिए बच्चे अपनी इच्छा के अनुसार विषय (subject) चुन सकते हैं।
  - खुद का बिज़नेस शुरू करना नौकरी करने से अच्छा है।
  - स्कूल में मोबाइल फ़ोन का उपयोग करने की अनुमति होनी चाहिए।
- विद्यार्थी इनमें से किसी एक मुद्दे का चुनाव करेंगे।
- विद्यार्थी हाथ खड़ा करके वोट करेंगे कि किस मुद्दे को सबसे अधिक वोट मिलेंगे।
- जिस मुद्दे को सबसे अधिक वोट मिलेंगे, उसे वाद-विवाद के लिए चुना जाएगा।
- अब विद्यार्थी टीम में कार्य करेंगे। हर टीम में 5-6 विद्यार्थी होंगे।
- हर टीम 5 मिनट के समय में वाद-विवाद की तैयारी करेगी।
- विद्यार्थी अपनी बात को तर्कपूर्ण बनाने के लिए उसे तथ्यों, प्रमाणों, अनुभवों या खबर के साथ जोड़कर प्रस्तुत करेंगे।
- चुने हुए मुद्दे पर हर टीम अपने आसपास की किसी दूसरी टीम के साथ वाद-विवाद करे, एक टीम मुद्दे के पक्ष में होगी और दूसरी उसके विपक्ष में।
- 5 मिनट के वाद-विवाद के बाद सभी टीमें अपना पक्ष बदलें - जो टीम पक्ष में बोल रही थी वह विपक्ष में बोले और विपक्ष में बोलने वाली पक्ष में।
- अब कोई भी दो टीम - एक पक्ष में बोलने वाली और एक विपक्ष में बोलने वाली - पूरी कक्षा के सामने वाद-विवाद करेंगी। (10 मिनट)

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करेंगे:

- क्या वाद-विवाद करने से किसी विषय के बारे में जानकारी बढ़ती है? कैसे?
- वाद-विवाद करने में किन कौशलों का प्रयोग हुआ?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

हर समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह में हुई चर्चा को पूरी कक्षा को संक्षेप में बताएगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि में हमने देखा कि किसी मुद्दे पर अपनी राय देने के लिए यदि उसे तर्क के साथ प्रस्तुत किया जाए तो वह अधिक विश्वसनीय लगती है और उसे स्वीकार करने की संभावना बढ़ जाती है। अपने सामने उपलब्ध विकल्पों में से किसी एक का चुनाव करने के लिए उसके बारे में एक से अधिक परिप्रेक्ष्य पता होना आवश्यक है।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- लीक से हटकर सोचना और काम करना क्यों ज़रूरी है?
- राय देते हुए या विचार प्रस्तुत करते हुए तर्क के साथ अपनी बात कहना क्यों आवश्यक है?
- किसी मुद्दे को विभिन्न नज़रियों से देखना क्यों ज़रूरी है? इसमें प्रश्न पूछना कैसे मदद करता है?

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

किसी भी प्रकार की राय बनाने या निर्णय लेने से पहले हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम जिस चीज़ को देखें, सुनें या उसके बारे में पढ़ें, उसका बारीकी से अवलोकन करें और उसके विभिन्न पहलुओं के बारे में ध्यानपूर्वक सोचें। सारे तथ्यों का तार्किक ढंग से विश्लेषण करते हुए ही निष्कर्ष तक पहुँचें। भीड़ के पीछे बिना सोचे-समझे भागने वाले या तथ्यों का बिना विश्लेषण करने वाले लोगों की अपेक्षा जो लोग लीक से हटकर कुछ नया सोचते हैं, वे अक्सर स्वयं के लिए सफलता का रास्ता बनाते हैं।

यूनिट **4** सहयोग
Collaboration

G3H9E7

फ़ैसिलिटेटर के लिए

किसी भी व्यक्ति का सपना यूँ ही साकार नहीं होता। उसे साकार करने के लिए हमें बहुत-से प्रयास करने होते हैं। कई बार यह सब एक अकेले व्यक्ति के लिए कर पाना मुश्किल होता है और इसके लिए विभिन्न व्यक्तियों के सहयोग की भी आवश्यकता होती है। तरह - तरह के कौशल एवं दक्षताओं के साथ समय और संसाधनों की भी ज़रूरत होती है। मिल-जुलकर करने से किसी भी काम को बेहतरी से किया जा सकता है।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

विद्यार्थी अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निम्न दक्षताओं के साथ एक दूसरे की सामर्थ्य एवं क्षमताओं का प्रयोग करेंगे।

1. समानुभूतिपूर्ण (empathetic) होना
2. विविधता (diversity) एवं सहयोग
3. स्वयं और समूह में निर्णय लेना

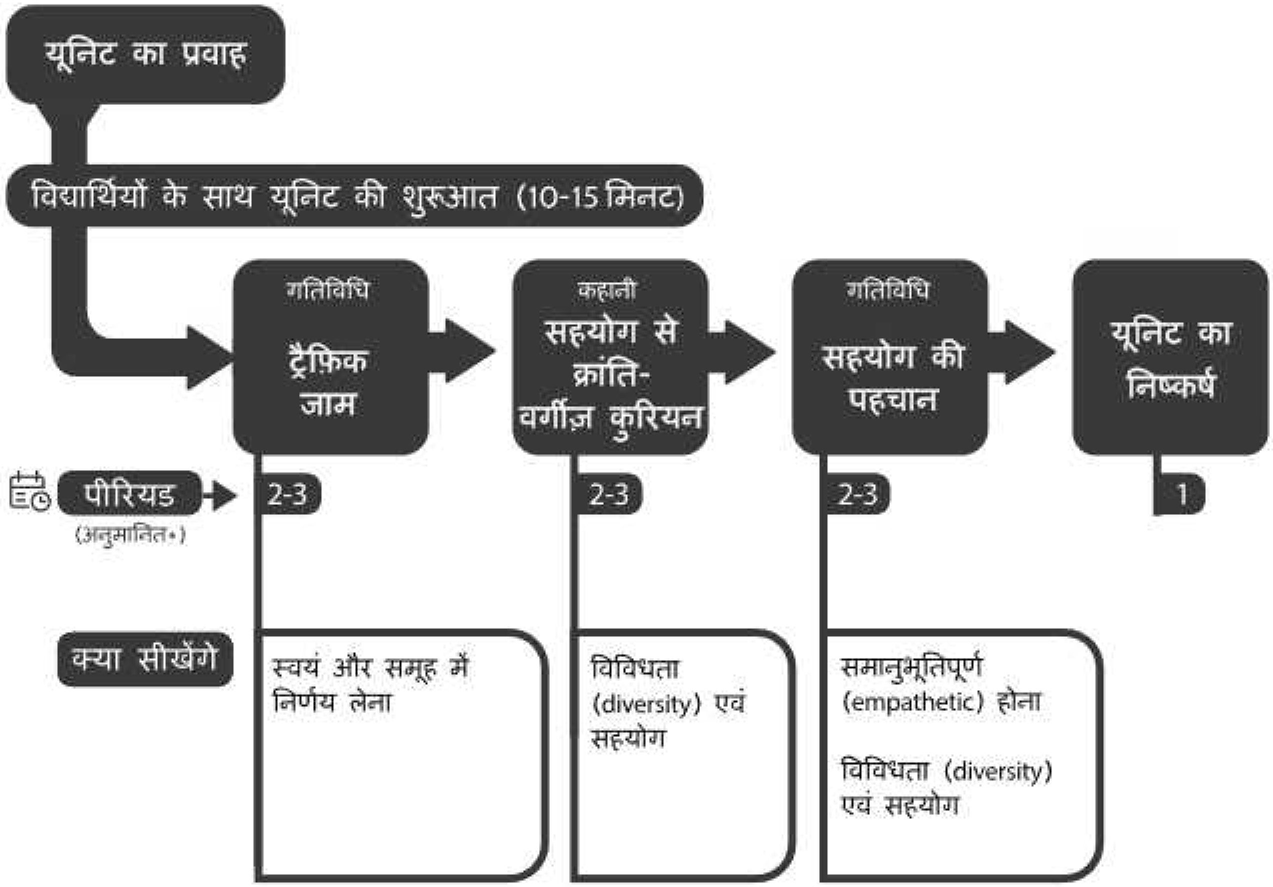

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

हमारे जीवन में सहयोग का विशेष महत्त्व है। सहयोग के बिना किसी बेहतर समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक-दूसरे के सहयोग के चलते हम अपने अंदर तमाम सकारात्मक एवं रचनात्मक बदलाव लाते हैं। इसके ज़रिए हम नए-नए प्रयोग करते हुए विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं। इसी प्रकार कक्षा के अंदर कुछ भी नया करने के लिए हम अपनी क्षमताओं के अनुसार एक-दूसरे को मदद करते हैं।

4.1 गतिविधि | ट्रैफ़िक जाम

परिचय

एक-दूसरे के सहयोग के साथ यह गतिविधि एक सहज एवं सरल खेल है जिसे पूरा करने के लिए टीम के संज्ञानात्मक कौशल(cognitive skill) और सहयोगी मानसिकता (collaborative mindset) का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए बहुत अधिक संसाधनों की ज़रूरत भी नहीं होती है। इसे करने में एक पैटर्न भी बनता है, जिसके आधार पर इस गतिविधि को समझना और करना आसान हो जाता है। इसे करके ही समझा जा सकता है।

सामूहिक कार्य: 6-6 विद्यार्थी

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- स्वयं और समूह में निर्णय लेना

फ़ैसिलिटेटर नोट

- गतिविधि में ज़मीन / फ़र्श पर बनाए गए वृत्त (circle) साफ़ साफ़ नज़र आएँ।
- गतिविधि को पूरा करने के लिए विद्यार्थियों को पूरा अवसर व पर्याप्त समय मिले।
- इस गतिविधि को करने के दौरान समूहों में विद्यार्थियों की संख्या को घटाया/बढ़ाया जा सकता है।
- इसे हर टीम के 2, 4 या ज़्यादा व्यक्तियों के साथ भी आसानी से कर सकते हैं। टीम के सदस्यों की संख्या घटाने-बढ़ाने के साथ गतिविधि को पूरा करने की अवधि(समय-सीमा) को घटाया-बढ़ाया जा सकता है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- 6-6 विद्यार्थियों का समूह बनाया जाए।
- हर समूह की 3-3 की दो टीम (टीम A व B) बनाएँ।
- ज़मीन पर 7 वृत्त (circle) खींचें।
- दोनों टीम एक-दूसरे के आमने-सामने एक सीध में इस प्रकार खड़ी हों कि बीच का एक वृत्त खाली रहे।

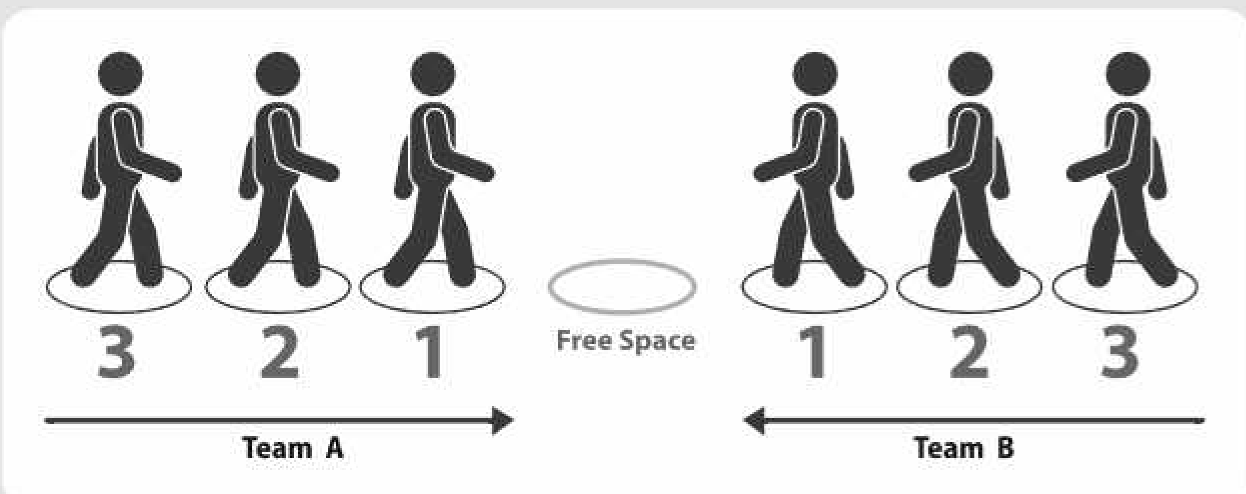

- दोनों टीम को अपनी-अपनी जगह बदलनी हैं। टीम A के तीनों सदस्य टीम B की जगह और टीम B के सदस्य टीम A की जगह आएँगे।
- इस गतिविधि को प्रत्येक समूह सुविधानुसार एक-एक कर या एक साथ कर सकता है।

जगह/स्थान बदलने के कुछ नियम हैं:

  - एक वृत्त में सिर्फ़ एक ही व्यक्ति होगा।
  - आप खाली वृत्त की ओर ही जा सकते हैं। पीछे लौटना या पीछे मुड़ना संभव नहीं है।
  - आगे की ओर एक वृत्त को लाँघा (jump) जा सकता है, अगर उस वृत्त के बाद का वृत्त खाली है।
  - अपनी टीम के किसी साथी को आप नहीं लाँघ सकते हैं।
  - नियमों को तोड़े जाने की स्थिति में गतिविधि को दोबारा शुरू किया जाएगा।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

समूह के सभी विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में निम्न सवालों पर चर्चा को आगे बढ़ा सकते हैं :

- गतिविधि के दौरान क्या-क्या चुनौतियाँ आईं?
- इस गतिविधि को करने से पहले और करने के बाद आपने क्या महसूस किया? विस्तार से बताएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

ऊपर दिए गए विचार बिंदुओं पर अपने-अपने समूह में चर्चा करने के बाद, हर समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह की चर्चा को कक्षा के साथ साझा करेगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि में हम आपस में बातचीत करते हुए एक सहमति पर पहुँचते हैं। उसे बार-बार कोशिश करके देखते हैं। पूरा न होने पर पुनः बातचीत करते हुए नई कार्य योजना तैयार करते हैं और फिर से कोशिश करते हैं। अंततः हम इसे कर पाते हैं।

4.2 कहानी | सहयोग से क्रांति

परिचय

एक-दूसरे के सहयोग का जादू हमने पिछली गतिविधि में देखा। अपनी-अपनी क्षमताओं के आधार पर सभी ने कुछ न कुछ जोड़ा। इससे हम सभी की क्षमताओं का उचित प्रयोग कर पाए। आइए, अब हम एक ऐसी ही कहानी सुनते हैं जिसमें किसानों के साथ मिलकर वर्गीज़ कुरियन ने दूध के क्षेत्र में श्वेत क्रांति के लिए एक बड़ा काम करके दिखाया।

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- विविधता (diversity) एवं सहयोग

भूमिका

- दूध हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है। इसे घरों में रोज़ लाया जाता है - यह कहाँ से आता है? हमारे घर तक कैसे पहुँचता है?
- कई दशकों पहले भारत में दूध का उत्पादन कम था। उस समय दूध बोतलों में बेचा जाता था और दूध खरीदने के लिए लाइन में प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। आज हम किसी भी समय बाज़ार से दूध ला सकते हैं। यह परिवर्तन कैसे आया?
- आइए, इसे हम एक कहानी के ज़रिए जानने की कोशिश करते हैं।

कहानी

बात 1946 की है। देश के बड़े शहरों में दूध की बहुत कमी हुआ करती थी। यहाँ दूर गाँवों से दूध मँगाना पड़ता था। गुजरात में एक ज़िला है 'आणंद'। यहाँ के किसानों से दूध इकट्ठा कर मुंबई शहर में ऊँचे दामों पर बेचा जाता था। लेकिन किसान अपने दूध के उचित दाम नहीं मिलने के कारण परेशान थे। इसी बीच उच्च शिक्षा प्राप्त कर एक इंजीनियर सरकारी डेयरी में नियुक्त हुआ। उस इंजीनियर का नाम था - वर्गीज़ कुरियन। वे वहाँ पहुँच तो गए, पर आणंद में काम करके उन्हें कोई आनंद नहीं आ रहा था, क्योंकि उन्हें वहाँ के काम में कोई चुनौती नज़र नहीं आ रही थी।

इसी बीच इनकी मुलाकात श्री त्रिभुवनदास से हुई, जिन्होंने दूध उत्पादन कर रहे किसानों की समिति बनाई थी। समिति के किसानों के पास दूध तो था, पर वे इसे इकट्ठा करके शहरों तक नहीं पहुँचा पा रहे थे। वर्गीज़ कुरियन किसानों से मिले। ये लोग गरीब और अनपढ़ थे। पैसे के अभाव के कारण वे दूध शहर में नहीं पहुँचा पाते थे और तकनीक के अभाव में दूध ख़राब हो जाता था। किसानों से बात कर उन्हें समस्या का अहसास हुआ और वे सहकारी संस्था से जुड़ गए।

सबसे पहले गाँव-गाँव जाकर उन्होंने किसानों को इकट्ठा किया, संस्था का उद्देश्य समझाया और उससे जुड़ने का आग्रह किया। उनकी कोशिश से 250 लीटर दूध रोज़ाना डेयरी में आने लगा। उन्होंने दूध को सुरक्षित रखने के लिए मशीनें लगाईं। यहाँ तक कि विश्व में पहली बार भैंस के दूध से मिल्क-पॉउडर भी बनाया जो अभी तक केवल गाय के दूध से ही बनता था। किसानों की मेहनत और तकनीक के संगम से संस्था का व्यापार बढ़ गया। अब डेयरी को पहचान की आवश्यकता थी और तब नाम रखा गया "अमूल"। अमूल जगह-जगह पर दूध बेचने लगा और गुजरात के छोटे-छोटे गाँवों से इकट्ठा हुआ दूध रातों-रात मुंबई पहुँचने लगा। जो दूध नहीं बिक पाता था, उसका मक्खन बनाया जाने लगा।

अमूल की सफलता से प्रभावित होकर उस समय के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने अमूल मॉडल को देश के अन्य स्थानों पर फैलाने के लिए डॉक्टर कुरियन से आग्रह किया। 'राष्ट्रीय दुग्ध विकास बोर्ड' की स्थापना हुई और डॉक्टर कुरियन को बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया। अब शुरूआत हुई दुग्ध क्रांति या 'ऑपरेशन फ्लड' की। पूरे देश में दूध का उत्पादन बढ़ा और वर्गीज़ कुरियन ने सभी राज्यों में ऐसी संस्थाओं को बनाने में मदद की। सबसे पहले उन्होंने दूध के लिए महानगरों को गाँवों से जोड़ा। फिर उन्होंने गाँवों में ऐसी समितियाँ बनाई। किसानों को इकट्ठा किया। सरकारी अधिकारियों की मदद ली। किसानों को इस कोऑपरेटिव का महत्त्व समझाया। जहाँ कहीं भी परेशानी आई, वहाँ उन्होंने किसानों को रास्ता दिखाया। इस कार्य को करने के लिए भारत जैसे बड़े देश के इतने राज्यों को जोड़ना कोई आसान कार्य नहीं था, परन्तु वर्गीज़ कुरियन के प्रयास रंग लाए। यहाँ सरकारी तंत्र का सहयोग डेयरी किसानों को मिला। दोनों ने एक-दूसरे की क्षमताओं को समझा और परस्पर सहयोग किया। देखते ही देखते हमारे देश के बहुत-से राज्यों में दूध का उत्पादन बढ़ता गया। जल्द ही 'डेयरी' कृषि प्रधान भारत का सबसे बड़ा उद्योग बन गई।

आज पूरे देश में 176 मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष दूध का उत्पादन होता है। हम आज अपने देश में तो दूध से बने पदार्थ बेचते ही हैं, साथ ही विदेशों में भी निर्यात करते हैं। आज इस उद्योग के साथ 20 करोड़ लोग जुड़े हैं और 187000 लीटर दूध कोऑपरेटिव संस्थाओं के माध्यम से उपलब्ध है। यह कहानी है उस सरकारी डेयरी इंजीनियर की, जिसने किसानों को आपस मे जोड़ा और सबको साथ लेकर उनके हित की लड़ाई लड़ी।

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- वर्गीज़ कुरियन डेयरी किसानों को क्यों एकजुट कर रहे थे?
- अमूल की स्थापना एवं प्रसार की कहानी में वर्गीज़ कुरियन की भूमिका को आप किस तरह देखते हैं?
- क्या इस तरह के कुछ और उदाहरण आप अपने आसपास देखते हैं? विस्तार से बताएँ।

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

वर्गीज़ कुरियन की कहानी में किसानों द्वारा किए गए दूध उत्पादन और उसे शहरों तक सप्लाई करने के रोचक एवं प्रेरक विवरण पढ़ने को मिलते हैं। साथ ही,इसमें अमूल जैसे उत्पाद के विशाल काम को भी हम जान लेते हैं जो देश-विदेश में एक डेयरी प्रोडक्ट के तौर पर अपनी पहचान बना चुका है। निःसंदेह वर्गीज़ कुरियन के प्रयासों ने डेयरी-उद्योग को कृषि प्रधान भारत का सबसे बड़ा उद्योग बनाने में एक अहम भूमिका निभाई।

4.3 गतिविधि | सहयोग की पहचान

परिचय

हमारे आसपास जो भी हो रहा है, आपसी सहयोग के कारण हो रहा है। बहुत सारे लोग मिलकर तमाम चीज़ें बनाते हैं व उन्हें हम तक पहुँचाने के लिए व्यवस्थाएँ बनाते हैं। क्या हम दैनिक जीवन में इस प्रकार के सहयोग को पहचान पाते हैं? आइए, इससे जुडी एक गतिविधि करते हैं।

सामूहिक कार्य: 4-5 विद्यार्थी

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- समानुभूतिपूर्ण (empathetic) होना
- विविधता (diversity) एवं सहयोग

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

- विद्यार्थियों को गतिविधि में बिना किसी हिचकिचाहट या संकोच के हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया जाए। यह भी सुनिश्चित किया जाए कि गतिविधि में सभी विद्यार्थी खुलकर हिस्सा लें।
- इस गतिविधि में चर्चा करते समय विद्यार्थियों को शुरूआत में कोई सुझाव न दिए जाएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- 4-5 विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँ।
- समूह में चर्चा शुरू करने के लिए फ़ैसिलिटेटर कोई दैनिक वस्तु चुन ले और विद्यार्थियों से पूछे कि यह वस्तु हम तक कैसे पहुँचती है?
  उदाहरण के लिए - स्कूल वर्दी (uniform)।
  (अपेक्षित उत्तर - वर्दी किसी फ़ैक्ट्री में बनती है, वहाँ से स्कूल / दुकान तक आती है, जहाँ से हमें मिलती है।)
- अब विद्यार्थियों का ध्यान इन प्रक्रियाओं से संबंधित व्यक्तियों तथा कौशलों की तरफ़ दिलाया जा सकता है।
- उदाहरण के लिए फ़ैसिलिटेटर पूछ सकता है
  - फ़ैक्ट्री में इन्हें कौन बनाता है?
  - कपड़ा कैसे बनता होगा?
  - वर्दी के लिए कपड़ा कहाँ से आया होगा?
  - बटन कहाँ बने होंगे?
  - इन्हें किसने बनाया होगा?
  - वर्दी बनने की जगह से स्कूल तक यदि ये ट्रक / ट्रेन में आएँगी तो उस ट्रक/ट्रेन को कौन चलाता है? इत्यादि।
- प्रत्येक समूह ऐसी ही किसी एक वस्तु का चुनाव करते हुए, उसके बनने से लेकर बाज़ार तक आने में इस्तेमाल किए गए प्रत्येक चरण को नोटबुक में लिखेगा।
- नोटबुक में लिखे गए चरणों के आधार पर हर समूह अपनी योजना को कक्षा के सामने प्रस्तुत करेगा।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करेंगे।

- एक-दूसरे की क्षमता का इस्तेमाल करते हुए एक नई वस्तु कैसे बन जाती है?
- हमें अपने आसपास आपसी सहयोग कहाँ दिखता है? उदाहरण के साथ विस्तार से बताएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

ऊपर दिए गए विचार बिंदुओं पर अपने-अपने समूह में चर्चा करने के बाद, हर समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह की चर्चा के मुख्य बिंदुओं को सबके साथ साझा करेगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

हमारे आसपास जो कुछ भी होता है या नया बनता है, उसमें कई लोगों का योगदान होता है। आपसी सहयोग और योगदान से ही समाज की हर गतिविधि सुचारू ढंग से चलती है। हम एक-दूसरे का सहयोग करके और सहयोग पाकर अपने उद्देश्यों में सफल हो सकते हैं।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

दोनों गतिविधियों के दौरान वे क्या चीज़ें/कारण थे जिन्होंने आपके लिए अपने साथियों के साथ सहयोग (collaborate) करना -

- आसान बनाया
- मुश्किल बनाया

उदाहरण के साथ साझा करें।

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

इस यूनिट में विभिन्न गतिविधियों और कहानी के ज़रिए आपसी सहयोग के महत्त्व को न केवल हमने जानने की कोशिश की बल्कि व्यक्तिगत एवं सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता पर भी बात की। इन्हीं के ज़रिए एवं सहयोग के तमाम पहलुओं को जानते हुए सामाजिक उत्थान को हम भलीभाँति देख पाए, जो निःसंदेह हमें एक बेहतर समाज की ओर लेकर जाता है।

यूनिट 5

अवसर पहचानकर आगे बढ़ना
Identifying and Pursuing Opportunities

A2B4I5

फ़ैसिलिटेटर के लिए

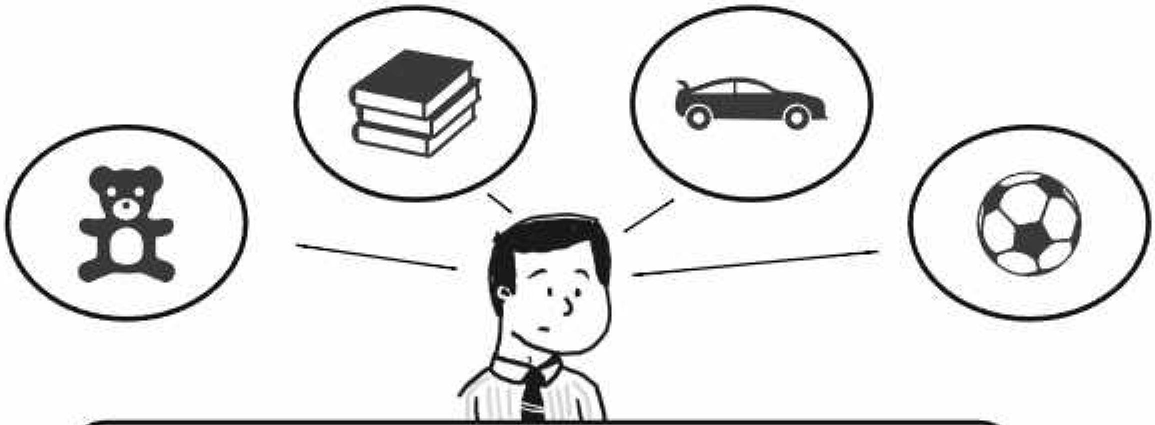

रोहन- सनी को उसके जन्मदिन पर क्या तोहफ़ा पसंद आएगा?

हम अकसर तोहफ़ा देने जैसे निजी अनुभव के बारे में बहुत सोचते हैं। हम पूरी कोशिश करते हैं कि हमने जो तोहफ़ा सोचा है, वह सामने वाले को पसंद आए। यह करते हुए हम कई बार अपने ही नज़रिए से सोचते हैं और दूसरों की पसंद-नापसंद को अनदेखा कर देते हैं। पर समस्याओं के समाधान ढूँढ़ने की प्रक्रिया में दूसरों के नज़रिए को समझने की ज़रूरत है। अवसर पहचानने के लिए समस्या को गहराई से समझना, समस्या सुलझाने का महत्त्व समझना और उसके लिए संसाधन जुटा पाना, ये तीनों ही ज़रूरी हैं। इस यूनिट में हम समस्याओं को समझने पर काम करेंगे जिसके लिए दूसरों की ज़रूरत को समझना अनिवार्य है।

जिनके लिए हम हल खोज रहे हैं, उनका नज़रिया जानना हमें सही समाधान सोचने की दिशा में आगे ले जा सकता है। हम चाहें अपना उद्यम करें या फिर कोई और काम, हम अन्य लोगों से परस्पर जुड़े होते हैं, जो हमें लोगों के अनुरूप अवसर पहचानने में मदद कर सकता है। इस यूनिट में हम ऐसी ही कुछ प्रक्रियाओं से गुज़रेंगे जो हमें सही अवसर पहचानकर एक नया विचार बनाने में या अपने किसी विचार की पुष्टि करने में मदद कर सकती हैं।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

1. उपयोगकर्ताओं (users) से मिलकर उनकी ज़रूरतें पहचानना
2. पहचानी गई ज़रूरतों में प्राथमिकता देख पाना

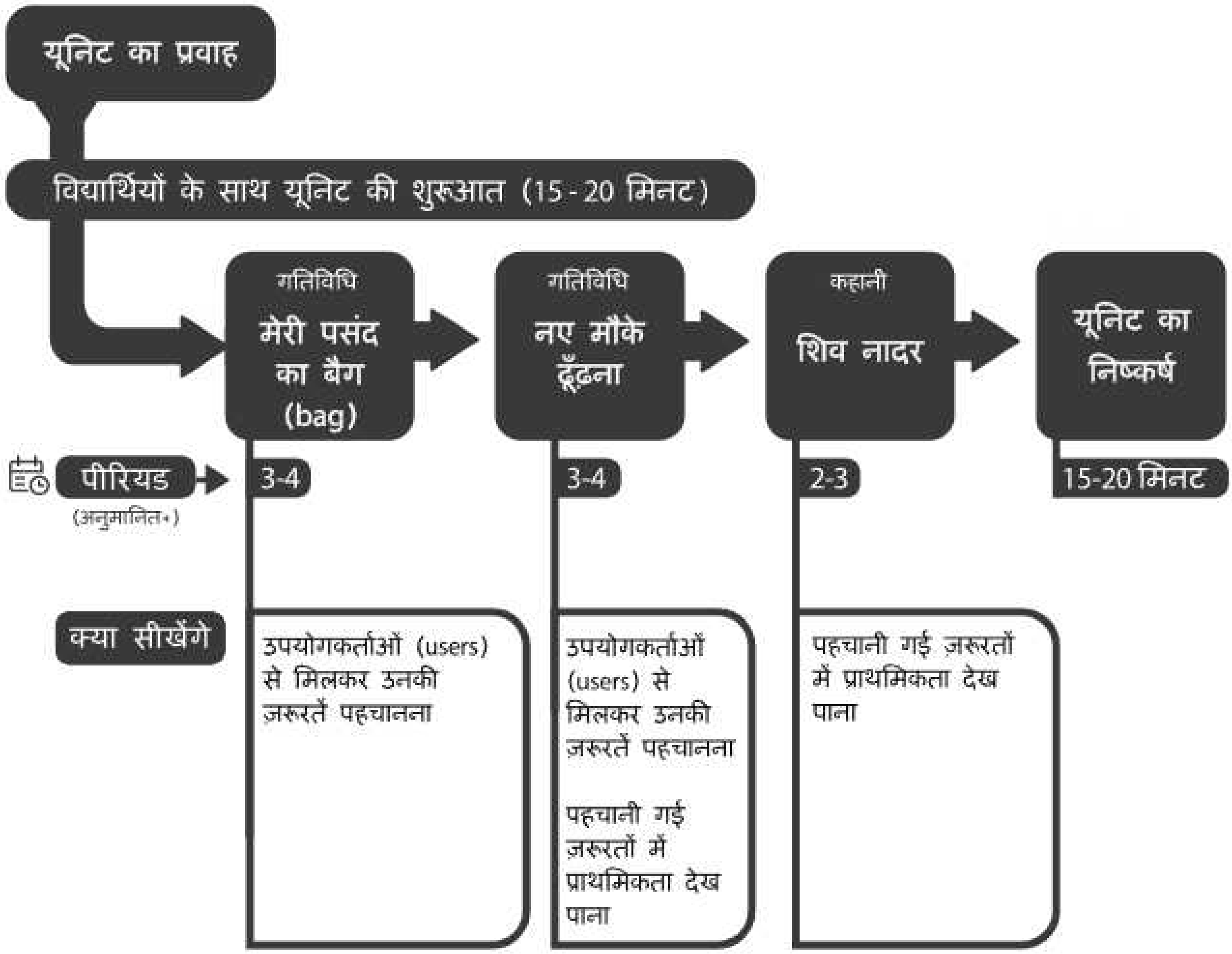

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

विद्यार्थियों से यूनिट के शुरू में दी गई तोहफ़े देने वाली बात से चर्चा शुरू करें। उनसे पूछें कि-

- वे किस आधार पर लोगों के लिए तोहफ़े चुनते हैं?
- जब वे किसी की पसंद-नापसंद का ध्यान रखते हुए तोहफ़ा चुनते हैं, तो तोहफ़ा पाने वाले का अनुभव कैसा होता है?

विद्यार्थियों को बताएँ कि इस यूनिट में भी हम दूसरों की ज़रूरत समझते हुए कैसे अपने प्रोजेक्ट्स या नए काम के लिए ठोस विचार सोच सकते हैं, इस पर काम करेंगे। क्योंकि इस साल सभी विद्यार्थी किसी सामाजिक या आर्थिक रूप से प्रभावी काम करने के लिए एक प्रोजेक्ट करने वाले हैं, यह क्षमता उनके लिए बहुत महत्त्व की होगी। एक तरह से उन्हें अपने काम की शुरूआत इस क्षमता का इस्तेमाल करते हुए करनी होगी।

5.1 गतिविधि | मेरी पसंद का बैग (bag)

परिचय

इस गतिविधि में हम देखेंगे कि कैसे अपने पूर्वाग्रहों (bias) की वजह से हम कई बार लोगों को या परिस्थितियों को ठीक से नहीं समझ पाते। यह हमारे लिए नए विचार सोचने और विश्वास से उन्हें दूसरों तक ले जाने में मुश्किल खड़ी कर सकता है। लेकिन अच्छी बात यह है कि दूसरों को समझने का एक व्यवस्थित तरीका है जिसके 3 मुख्य चरण हैं-

- अपनी समझ से समस्या का समाधान ढूँढना,
- जो समस्या से प्रभावित हैं, उन्हें जानने की शुरूआत करना,
- जो समस्या से प्रभावित हैं, उन्हें और गहराई से जानना।

इनका इस्तेमाल करके हम किसी समस्या या किसी की ज़रूरत को उनके नज़रिए से समझ सकते हैं।

आइए यह तरीका समझते हैं।

सामूहिक कार्य: 2-2 के जोड़े

3-4 पीरियड

क्या सीखेंगे

- उपयोगकर्ताओं (users) से मिलकर उनकी ज़रूरतें पहचानना

सामग्री | कागज़ | पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

- विद्यार्थियों को अपने सवाल सोचने के लिए प्रोत्साहित करें जिससे कि वे उपयोगकर्ता को बेहतर समझ पाएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थी ऐसे साथियों के साथ 2-2 के जोड़े बनाएँ जिन्हें वे बहुत अच्छे से नहीं जानते।
- विद्यार्थियों को बताएँ कि इस गतिविधि में उन्हें एक-दूसरे के लिए एक बैग डिज़ाइन करना होगा। इस गतिविधि में 3 चरण होंगे।

पहला चरण- 5 मिनट

- विद्यार्थियों से उनकी समझ के अनुसार अपने साथी के लिए बैग की डिज़ाइन बनाने को कहें।
- बना लेने के बाद उन्हें एक-दूसरे को अपना डिज़ाइन दिखाने को कहें।
- इसके बाद 'हाँ' या 'ना' में अपने साथी को बताएँ कि यह बैग उनके लिए अनुकूल है या नहीं।

दूसरा चरण- 15 मिनट

- विद्यार्थियों से बैग के प्रति एक-दूसरे की अपेक्षाएँ समझने के लिए कहें।
- इसके लिए वे नीचे दिए गए कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं -
  - यह बैग तुम किसलिए इस्तेमाल करना चाहते हो?
  - तुम्हें किस तरह के मटिरियल (material) का बैग पसंद है?
  - तुम्हारे लिए बैग का बेहतरीन साइज़ क्या है?
- इस जानकारी के आधार पर उन्हें फिर से अपने साथी के लिए एक नया डिज़ाइन बनाकर एक-दूसरे से फ़ीडबैक लेने को कहें।

तीसरा चरण- 20 मिनट

- इस बार विद्यार्थियों से एक-दूसरे के बारे में व्यक्तिगत जानकारी इकट्ठा करने को कहें, जिससे कि आप अपने साथी के व्यक्तित्व, पसंद आदि को समझ पाएँ।
- इसके लिए वे निम्न जैसे कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं (इस बार उन्हें क्या के साथ क्यों भी पूछना है)-
  - उनका पसंदीदा रंग क्या है? क्यों?
  - अपने खाली समय में तुम्हें क्या करना पसंद है? क्यों?
  - तुम्हारा पसंदीदा मौसम कौन-सा है? क्यों?
- इस जानकारी के आधार पर उन्हें फिर से अपने साथी के लिए एक नया डिज़ाइन बनाकर एक दूसरे से फ़ीडबैक लेने को कहें।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

सभी विद्यार्थियों से निम्न पर बात करें-

- पहले चरण से तीसरे चरण तक उपयोगकर्ताओं (users) की ज़रूरतों की आपकी समझ कैसे बदली?
- दूसरे और तीसरे चरण के सवालों में क्या फ़र्क़ था?
- अवसर पहचानने में उपयोगकर्ता से बात करने/सवाल पूछने के क्या फ़ायदे हो सकते हैं?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

सभी विद्यार्थियों को अपने तीनों चरणों के चित्र प्रदर्शित करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

हमें कई बार लगता है कि हम लोगों और उनकी ज़रूरतों को समझते हैं पर यह हमारा व्यक्तिगत नज़रिया भी हो सकता है। सही तरह से कुछ करने का अवसर पहचानने के लिए यह ज़रूरी है कि हम जिसके लिए कोई वस्तु या उपाय सोच रहे हैं, उसकी पसंद, ज़रूरतों आदि के बारे में उससे भी जानें। इस तरह से या तो हम अपनी मान्यताओं की पुष्टि कर सकते हैं या उपयोगकर्ता के बारे में नई जानकारी हासिल कर सकते हैं, जिससे कि हम और भी सटीक तरह से किसी समस्या का समाधान ढूँढ सकते हैं।

5.2 गतिविधि | नए मौके ढूँढना

परिचय

जब हम कोई नया काम करने की सोचते हैं तो उसके बारे में अलग-अलग लोगों की प्रतिक्रिया भी अलग होती है। वे सब एक जैसा नहीं सोचते। ऐसे में उनके विभिन्न विचारों को सुनना और उसके आधार पर अपने काम के बारे में निर्णय लेना एक महवपूर्ण क्षमता है। आइए, इस गतिविधि को करके देखते हैं।

सामूहिक कार्य: 6-6 विद्यार्थी

3-4 पीरियड

क्या सीखेंगे

- उपयोगकर्ताओं (users) से मिलकर उनकी ज़रूरतें पहचानना
- पहचानी गई ज़रूरतों में प्राथमिकता देख पाना

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

- इस गतिविधि में विद्यार्थियों को उपयोगकर्ताओं (users) और इंटरव्यू लेने वाले, दोनों का रोल निभाना होगा। इसका संचालन करने में उनकी मदद करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- सभी विद्यार्थियों को निम्न परिस्थिति बताएँ-
  एक स्कूल में विभिन्न विषयों को आसानी से पढ़ने/पढ़ाने के लिए कुछ विद्यार्थी और शिक्षक एक app, 'learn easy' इस्तेमाल करते हैं। इसमें वीडियो देखकर theory को समझना और अपनी समझ का आकलन करना जैसी सुविधाएँ हैं। बहुत-से विद्यार्थी व शिक्षक इसका उपयोग करने लगे हैं, पर इसका उपयोग और बढ़ाया जा सकता है। इस गतिविधि में हम इस app के वर्तमान उपयोगकर्ताओं (users) के अनुभवों के आधार पर app का इस्तेमाल बढ़ाने के नए तरीकों के बारे में सोचेंगे।
- सभी विद्यार्थियों को इस app के निम्न 6 उपयोगकर्ताओं (users) के बारे में बताएँ-
  1. कल्पना एक टीचर हैं और इस app का उपयोग अपने सीखने के लिए करती हैं।
  2. शालू कक्षा 10 की विद्यार्थी है जो बोर्ड परीक्षा की तैयारी के लिए app का इस्तेमाल करना पसंद करती है।
  3. इशरत कक्षा 10 की विद्यार्थी है जिसे अकेले पढ़ना पसंद नहीं है, इसलिए वह app का इस्तेमाल करना पसंद नहीं करती।
  4. जावेद टीचर हैं जिन्होंने app को class में इस्तेमाल करना शुरू किया है।
  5. नव्या कक्षा 9 की विद्यार्थी है और एक ही भाषा में app होने से इसका ज़्यादा इस्तेमाल नहीं कर पा रही है।
  6. अविनाश कक्षा 10 का विद्यार्थी है, जिसे देखकर सीखना बहुत आसान लगता है, इसलिए इस app को इस्तेमाल करता है।

- विद्यार्थियों के 6-6 के समूह बनाएँ।
- समूह में हर कोई दिए हुए रोल में से अपने लिए एक उपयोगकर्ता (user) का रोल चुने और उसके अनुसार app इस्तेमाल करने के अपने अनुभव पर सोचे (5 मिनट)।
- इसके बाद समाधान सोचने के लिए समूह में हर विद्यार्थी बाकी सभी उपयोगकर्ताओं का दृष्टिकोण समझने के लिए इंटरव्यू के प्रश्न तैयार करे (10 मिनट)
- समूह में विद्यार्थी एक-एक करके हर उपयोगकर्ता से पिछली गतिविधि की तरह 5 से 6 प्रश्न पूछें और नोट्स बनाएँ (20 मिनट)। ये प्रश्न कुछ ऐसे हो सकते हैं-
    - app इस्तेमाल करने में आपको क्या दिक्कतें आ रही हैं?
    - इस app में क्या बदलाव लाया जा सकता है, जिससे यह आपके लिए और उपयोगी बने?
- इकट्ठा की हुई जानकारी के आधार पर हर समूह से बिज़निस आइडिया (business idea) सोचने को कहें। वे एक से अधिक आइडिया सोच सकते हैं। (15 मिनट)
- सभी विचारों में से किन्हीं 3 को चुनने को कहें। इसके लिए उन्हें अपना तर्क भी सोचने को कहें (5 मिनट)

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

समूह में सभी को निम्न सवालों पर चर्चा करने को कहें-

- इंटरव्यू करके आपको ऐसी क्या जानकारी मिली जो पहले आपके पास नहीं थी? इस जानकारी ने आपके बिज़निस आइडिया (business idea) को कैसे प्रभावित किया?
- उपयोगकर्ताओं में कुछ लोग app से खुश थे पर कुछ लोगों को इसके इस्तेमाल में दिक्कतें भी आ रही थीं। आपको किस जानकारी से बिज़निस आइडिया (business idea) सोचने में ज़्यादा मदद मिली?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

हर समूह से विद्यार्थियों को उनके विचार और तर्क साझा करने के लिए आमंत्रित करें। साथ ही चर्चा किए गए प्रश्नों पर भी उन्हें अपने विचार साझा करने को कहें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

अक्सर किसी समस्या के एक से ज़्यादा पहलू होते हैं जैसे कि दी गई गतिविधि में हमने देखा। कुछ विद्यार्थियों के लिए app ने काम आसान बना दिया था पर कुछ के लिए यह इतना बड़ा आकर्षण नहीं बन रहा था। कुछ नए विचार सोचने के लिए यह ज़रूरी है कि हम अलग-अलग तरह के उपयोगकर्ताओं को समझें, पूरी जानकारी हासिल करें और उसके आधार पर प्राथमिकताएँ तय कर पाएँ। यह प्रक्रिया हमें न सिर्फ़ नए अवसर पहचानने में मदद करती है बल्कि 'सबसे ज़रूरी समस्या' को ढूँढने में भी मदद करती है।

5.3 कहानी | शिव नादर

परिचय

हमने गतिविधि द्वारा समझा कि ज़रूरतों को पहचानना कितना महत्त्वपूर्ण है। ज़रूरतों के अंदर ही अवसर छुपा होता है। बहुत-सी ज़रूरतों में से कौन-सी ज़रूरत को प्राथमिकता देनी है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस ज़रूरत को पूरा करने का अवसर देखते हैं। अवसर को पहचानकर काम को बेहतर तरीके से किया जा सकता है।

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- पहचानी गई ज़रूरतों में प्राथमिकता देख पाना

भूमिका

खुशबू - अरे पता है,मेरी क्लास में सभी बच्चों ने अपने घर के बाहर जानवरों के लिए पानी पीने की व्यवस्था की है।

अंकित - यह व्यवस्था सभी बच्च ो ने कीये कैसे पता चला?

खुशबू - मेरे आग्रह करने पर सभी ने पानी रखकर उसकी फ़ोटो फ़ेसबुक पर साझा की।

अंकित - यह तो कमाल का आइडिया है! क्यों न इस campaign को अब हम पूरे स्कूल में शुरू करें!

ऊपर दिए गए संवाद में हमने जाना कि खुशबू और अंकित ने सोशल मीडिया के अनोखे प्रयोग को पहचाना। आइए शिव नादर की कहानी के माध्यम से समझते हैं कि उन्होंने अपने बिज़निस में लोगों की ज़रूरतों को समझते हुए कैसे अलग-अलग अवसरों को पहचाना और उन पर काम किया।

कहानी

तमिलनाडु के एक गाँव में जन्मे शिव नादर ने कोयंबटूर के पीएसजी कॉलेज ऑफ़ टेक्नोलॉजी से इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग की डिग्री ली। लगभग 22 वर्ष की उम्र में पुणे की एक कंपनी में कुछ समय काम करने के बाद उन्होंने दिल्ली आकर एक कंपनी के केलकुलेटर विभाग (divison) में काम करना शुरू किया। काम भी अपनी पसंद का था और वेतन भी अच्छा था, पर संतोष नहीं हो रहा था। वहीं उनकी मुलाकात कुछ अन्य साथियों से हुई जो उन्हीं की तरह कुछ चुनौतीपूर्ण कार्य करना चाहते थे। उन्होंने इन छह इंजीनियर साथियों के साथ मिलकर 1976 में माइक्रोकॉम्प (Microcomp) नाम की एक कंपनी बनाई। कम्प्यूटर्स बनाने के लिए जितना पैसा चाहिए था, वह उनके पास नहीं था। कंपनी ने टैली-डिजिटल कैलकुलेटर्स और कुछ दूसरे डिजिटल ऑफ़िस प्रोडक्ट बनाने का निर्णय लिया। जल्द ही कंपनी अच्छा खासा लाभ भी कमाने लगी।

उसी दौरान उत्तर प्रदेश सरकार अपने राज्य में आईटी को बढ़ावा देने के लिए बहुत-सी योजनाओं पर कार्य कर रही थी। निवेश के लिए आवश्यक पैसा भी था और काम भी मिल रहा था। बस फिर क्या था, शिव नादर की कंपनी ने 1976 में यूपी इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन की साझेदारी के साथ हिंदुस्तान कंप्यूटर लिमिटेड(एच.सी.एल) की स्थापना की।

1977 में सरकारी नीतियों की वजह से आई.बी.एम. जैसी बहु-राष्ट्रीय कंप्यूटर कंपनियों को भारत से जाना पड़ा। आई.बी.एम. के जाने से भारत के आई.टी. बाज़ार में एक ख़ालीपन आ गया। विदेशी कंपनियों के जाने के बाद ग्राहकों की ज़रूरतों को समझते हुए शिव नादर ने एक ही वर्ष में एच.सी.एल में भारत का पहला माइक्रो कंप्यूटर बनाकर सबको हैरान कर दिया। परन्तु ये मिनी कंप्यूटर ज़्यादा नहीं बिका, जिससे कंपनी

को काफ़ी निराशा हुई। पर शिव नादर को अपने मिनी कंप्यूटर पर भरोसा था। आगे चलकर इसी कंप्यूटर का एक हिस्सा, दुनियाभर में बनने वाले कंप्यूटर में इस्तेमाल होने वाला एक प्रमुख अंग बन गया। उस हिस्से को मिनी फ्लॉपी कहा जाता था, जो शुरूआत के करीब 15 साल तक कंप्यूटर का एक ज़रूरी हिस्सा बना रहा। ये मिनी फ्लॉपी बिक तो रही थी पर कंपनी अभी भी मुनाफ़ा नहीं कमा रही थी। उन्हें अपनी कंपनी को मज़बूत करने की ज़रूरत महसूस हुई।

अब 1980 में एच.सी.एल ने सिंगापुर में आई.टी. हार्डवेयर बेचने वाली 'फार ईस्ट कंपनी' की स्थापना की। शिव नादर इस व्यवसाय में कंपनी के सबसे बड़े शेयरधारक थे। आई.टी. एक नया क्षेत्र खुल रहा था और लोग इसमें अधिक नहीं जानते थे। उन्हें ट्रेनिंग की ज़रूरत थी तो कंपनी ने आई.टी. क्षेत्र में क्वालिटी एजुकेशन देने के लिए एन.आई.आई.टी की स्थापना करके इसका ज़िम्मा उठा लिया। यह इनकी एक बड़ी सफलता थी। अब चूँकि सरकारी नीति के तहत कंप्यूटर और उससे जुड़े सामान को विदेश में बेचना मुश्किल था, इसलिए कंपनी ने सॉफ़्टवेयर के क्षेत्र में भी काम करना शुरू किया।

शिव नादर ने बहुत-सी बड़ी कंपनियों के साथ व्यावसायिक साझेदारी एवं गठबंधन किया, जिनमें वे सफल रहे। ये प्रमुख कंपनियाँ - नोकिया, एचपी, सिस्को, तोशीबा और पैरेट सिस्टम्स आदि रहीं। आज एच.सी.एल 140 देशों के प्रोफ़ेशनल्स की टीम के साथ लगभग 32 देशों में अपने व्यवसाय को सफलतापूर्वक चला रही है। एच.सी.एल भारत की एक महत्वपूर्ण बहु-राष्ट्रीय कंपनी के रूप में विश्व भर में जानी जाती है।

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- शिव नादर ने अपने कैरियर की शुरूआत से किन-किन अवसरों को पहचानते हुए खुद को स्थापित किया?
- "अब चूँकि सरकारी नीति के तहत कंप्यूटर और उससे जुड़े सामान को विदेश में बेचना मुश्किल था, इसलिए कंपनी ने सॉफ़्टवेयर के क्षेत्र में भी काम करना शुरू किया।"
  इस बात से हमें अवसर पहचानने के बारे में क्या पता चलता है?

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

अवसर पहचान पाने के लिए यह ज़रूरी है कि हम बिल्कुल खुले मन से अपने सामने आ रही परिस्थितियों को देखें। निराश होने की बजाय उनमें छिपी संभावनाओं को देख सकें। जब कोई परिस्थिति हमारे मन के अनुसार नहीं होती, तब भी उसमें अवसर ढूँढे जा सकते हैं, जैसे शिव नादर ने भी किया। और यह तभी संभव है जब हम अपने काम और उस क्षेत्र में चल रहे तमाम ट्रेंड्स (trends) और ज़रूरतों के प्रति जागरूक हों।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

- अपने फ़ील्ड प्रोजेक्ट में अवसर पहचानने और उनमें से किसी एक को प्राथमिकता देने के लिए आप किन बातों का ध्यान रखेंगे?
- उपयोगकर्ताओं से प्रभावी तरीके से बात करने के बारे में इस यूनिट से आपने क्या सीखा?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

एक उपयोगी विचार सोच पाने के लिए ज़रूरी है कि हम इस प्रक्रिया में पहले गहराई से उपयोगकर्ता का नज़रिया समझें और मिली जानकारी के आधार पर अनेक विकल्पों की कल्पना कर पाएँ जो उनकी समस्याओं को सही तरीके से हल कर सकते हों। इसके बाद एक्शन लेने या करने के चरण पर जाना हमें अपने काम के प्रति ज़्यादा आत्मविश्वास दे सकता है, क्योंकि अब हमारे पास समस्या को ठीक से समझने और विकल्पों को प्राथमिकता के आधार पर चुनने के लिए ज़रूरी जानकारी उपलब्ध है।

R6V3D1

यूनिट 6 योजना बनाकर काम करना
Plan and Execute

फ़ैसिलिटेटर के लिए

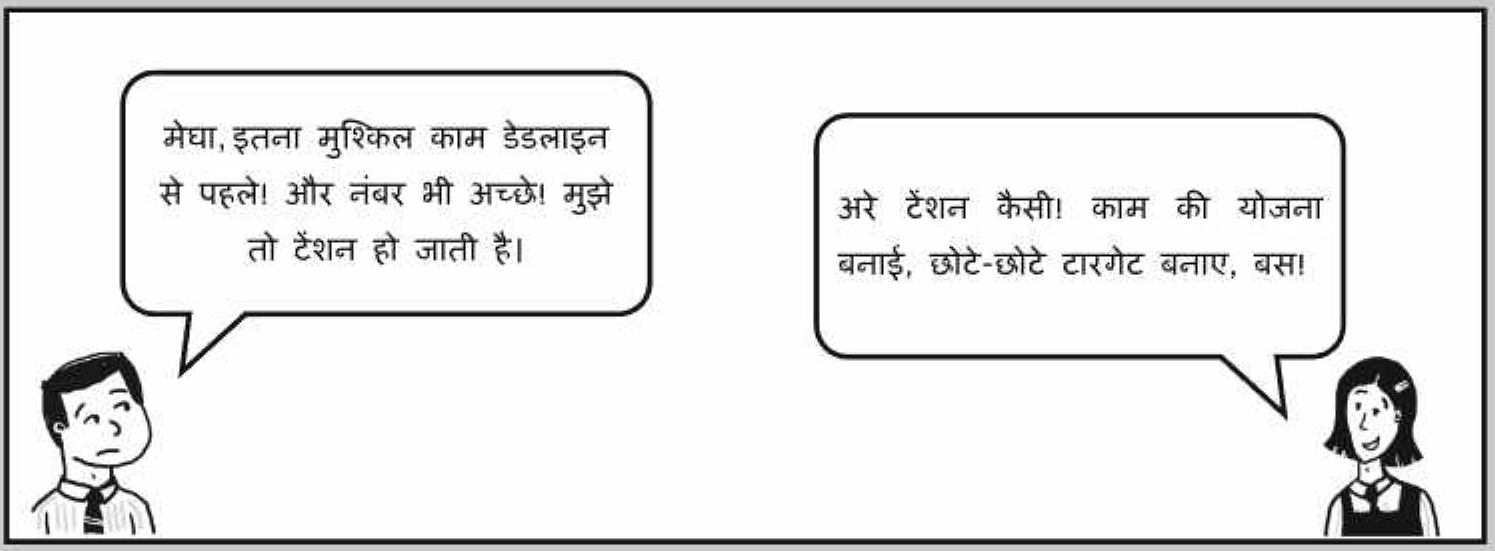

योजना के अनुसार कार्य करने से; समय प्रबंधन (time management), आवश्यक साधनों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण कारकों का ध्यान रखने से तथा कार्य को छोटे-छोटे चरणों में बाँट लेने से कार्य करने की प्रक्रिया सहज होती है। इससे तनाव कम होता है तथा परिणाम अपेक्षा के अनुरूप होता है।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

इस यूनिट में विद्यार्थी किसी भी कार्य को अच्छी तरह करने के लिए योजना बनाने का महत्त्व समझ पाएँगे। वे दिए गए कार्य को योजना बनाकर पूरा करेंगे। ऐसा करने के लिए निम्न क्षमताओं पर ध्यान होगा:

1. किसी कार्य को अच्छी तरह करने के लिए योजना बनाना
2. समय तथा संसाधनों का ध्यान रखते हुए योजना बनाना
3. कार्य को छोटे चरणों में बाँटना

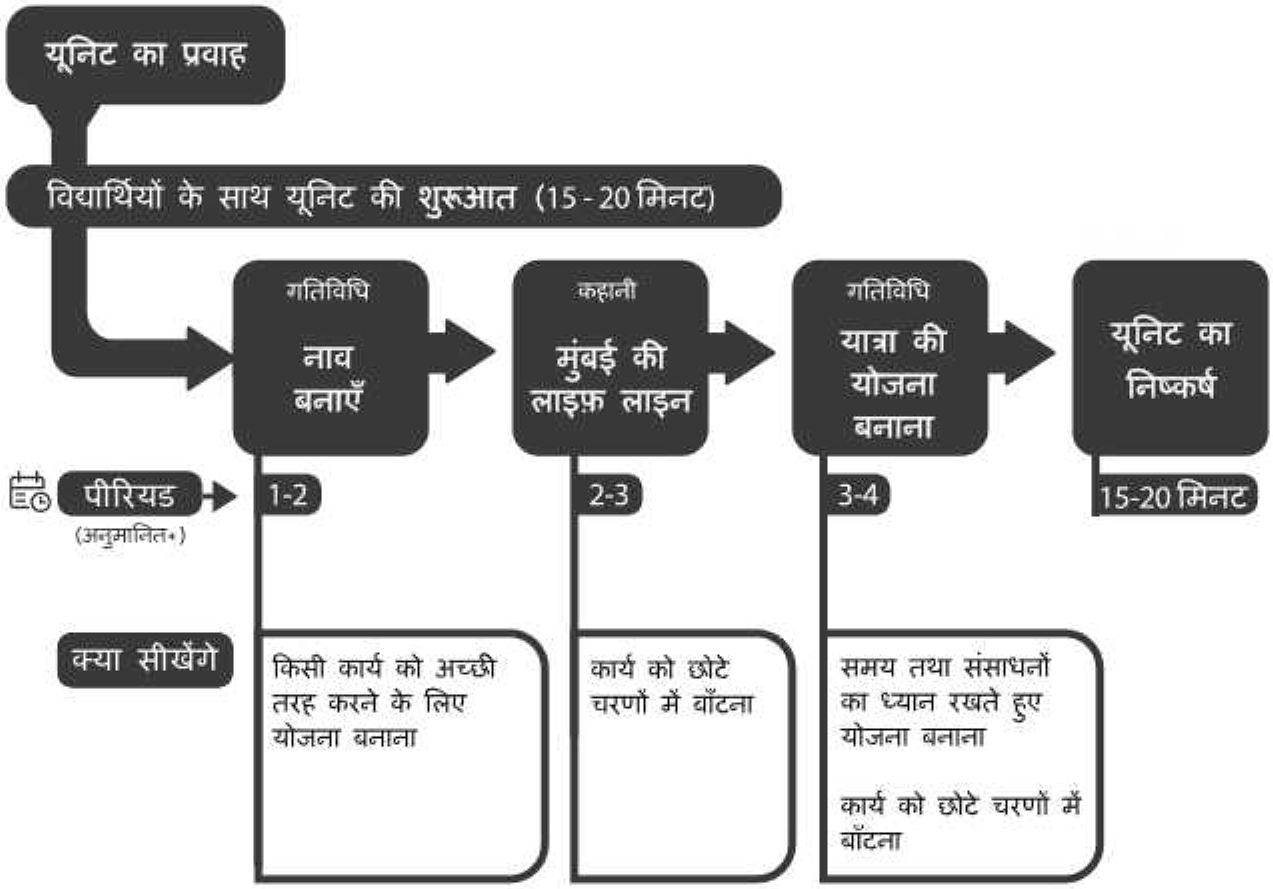

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

विद्यार्थियों से अपने साथ बैठे साथी के साथ निम्न प्रश्नों के बारे में चर्चा करने के लिए कहें। उनके उत्तर पूछकर बोर्ड पर लिखते जाएँ:

- क्या कभी ऐसा हुआ है कि आप कोई आवश्यक कार्य करना चाहते हों और वह समय पर या अच्छी तरह पूरा नहीं हुआ?
- ऐसा होने के क्या कारण हो सकते हैं?

किसी विद्यार्थी द्वारा बताए गए कारणों में 'योजना बनाकर कार्य को न करना' आ सकता है। यदि उनके द्वारा बताए गए कारणों में यह कारण नहीं आता तो विद्यार्थियों को बताएँ कि इन कारणों के साथ एक कारण 'योजना न बनाना' भी हो सकता है।

इस यूनिट में हम सीखेंगे कि योजना बनाकर काम करने से क्या होता है और योजना बनाते हुए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

6.1 गतिविधि | नाव बनाएँ

परिचय

अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए योजना बनाने का कौशल विकसित करना अनिवार्य है। बिना योजना के काम करना नामुमकिन तो नहीं है, लेकिन योजना के साथ किए गए काम को ज़्यादा कुशलता के साथ और कम समय में किया जा सकता है और सफलता तक पहुँचाया जा सकता है। इस गतिविधि में विद्यार्थी योजना बनाने से कार्य के परिणाम में आए सुधार का अनुभव करेंगे।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

1-2 पीरियड

क्या सीखेंगे

- किसी कार्य को अच्छी तरह करने के लिए योजना बनाना

सामग्री | हर समूह के लिए अख़बार के 2 पन्ने

फ़ैसिलिटेटर नोट

ध्यान दें कि समूह में प्रत्येक विद्यार्थी अवश्य भाग ले।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थियों के 5-6 के समूह बनाएँ और प्रत्येक समूह को अख़बार के 2 पन्ने दें।

<u>पहली बार नाव बनाना</u>

- प्रत्येक समूह को अगले 5 मिनट में इस अख़बार से ज़्यादा से ज़्यादा नाव बनानी हैं। 5 मिनट पूरे होने पर नोट करें कि प्रत्येक समूह ने कितनी नाव बनाई। ध्यान रखें कि:
  - विद्यार्थी किसी भी तरह की गोंद, पेस्ट, स्टेपलर, टेप, पिन, कैंची आदि का प्रयोग नहीं करें।
  - सभी समूह गतिविधि के इस पहले पड़ाव के बाद बचे हुए अख़बार फैसिलिटेटर को लौटा दें।

<u>दूसरी बार नाव बनाना</u>

- सभी समूहों को फिर से अख़बार के 2 पन्ने दें। उन्हें अगले 5 मिनट में योजना बनानी है कि उतने ही समय में उपलब्ध साधनों के साथ वे अपने पहले प्रयास से ज़्यादा नाव कैसे बनाएँगे।
- समूहों को फिर से नाव बनाने के लिए 5 मिनट का समय दें और अंत में नोट करें कि इस बार प्रत्येक समूह ने कितनी नाव बनाई।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करेंगे। फिर प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह में हुई चर्चा को संक्षेप में पूरी कक्षा को बताएगा।

- पहली बार की तुलना में आपके समूह ने दूसरी बार में कितनी नाव अधिक बनाईं?
- नाव बनाने के पहले और दूसरे प्रयास में क्या अंतर था? उदाहरण देते हुए विस्तार से बताएँ।
- नाव क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि जब आपने योजना बनाई हो और परिणाम पहले से बेहतर आए हों?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

निम्नलिखित तालिका बोर्ड पर बनाएँ। विद्यार्थी इस तालिका के बारे में अपने साथ बैठे विद्यार्थी के साथ चर्चा करें। फिर विद्यार्थियों के उत्तरों की मदद से तालिका के खाली स्थानों को पूरा करें।

कारक	बिना योजना के कार्य करना	योजना बनाकर कार्य करना
अपेक्षा के अनुरूप परिणाम आना		
कार्य समय पर होना		
तनाव होना		

तालिका पूरी हो जाने पर कुछ विद्यार्थियों से तालिका की जानकारी को अपने शब्दों में बताने के लिए कहें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

हमने इस गतिविधि में एक ही काम को दो बार किया - एक बार बिना योजना बनाए और दूसरी बार योजना के साथ। दूसरे प्रयास में हमने अनुभव किया कि कैसे सोच-समझकर बनाई गई योजना हमारे कार्य को बेहतर बनाती है। इस प्रक्रिया से हम कई बातों पर ध्यान देते हुए कार्य कर सकते हैं, जैसे - समय और सामग्री का उचित प्रयोग कैसे किया जाए, सर्वोत्तम परिणाम पाने के लिए क्या उपाय हो सकते हैं, कौन-कौन से साधन काम में लाए जा सकते हैं इत्यादि।

6.2 कहानी | मुंबई की लाइफ़ लाइन

परिचय

पिछली गतिविधि में हमने योजना बनाने के महत्त्व को समझा। अब हम मुंबई की लाइफ़ लाइन कहलाए जाने वाले 'मुंबई डब्बावाला' कहानी के माध्यम से जानेंगे कि कार्य को योजनाबद्ध तरीके से किया जाए तो बड़े से बड़ा काम भी सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे
- कार्य को छोटे चरणों में बाँटना

भूमिका

नेहा: कैसा रहा तुम्हारा मुंबई वाले काम का अनुभव?

रेखा: बहुत ही अच्छा! आफ़िस का माहौल अच्छा था, मेरी रूम पार्टनर मेरी दिल्ली वाली सहेली रिचा थी और सीखने को भी काफ़ी मिला। और वैसे भी दो महीने की ही बात थी, तो समय जल्दी निकल गया।

नेहा: ये तो सच में काफ़ी अच्छा था! पर दो महीने तक तुमने बाहर से खाना खाया?

रेखा: नहीं नहीं! नाश्ता और रात का खाना तो जहाँ ठहरे थे, वहाँ से मिल जाता था। सिर्फ़ लंच की समस्या थी तो वह भी हल हो गई। मुंबई डब्बावाला की मदद से घर जैसा गरमा-गरम खाना रोज़ मिलता था।

नेहा: अरे वाह! इस बारे में और बताओ।

रेखा: अच्छा तो सुनो!

कहानी

यह कहानी शुरू होती है करीब सवा सौ साल पहले से, जो आज भी जारी है। 1890 में एक बैंकर ने महादेव जी से कहा, "काश! कोई घर का बना पौष्टिक खाना मुझे दफ्तर में दे जाए।" महादेव हावजी सोचने लगे कि लंच में खाने की समस्या तो मुंबई में काम कर रहे सैकड़ों बाबू लोगों की है, क्योंकि उस समय न गैस थी और न कुकर। इतनी सुबह चूल्हे पर खाना नहीं बन पाता था। महादेव जी मन ही मन सोचते रहे कि ऑफ़िस जाने वालों को घर का खाना किस तरह से मिल सकता है? क्या किया जाए? खाना कैसे पहुँचाया जाए? आखिर लोग रोज़-रोज़ तो बाज़ार का खाना नहीं खा सकते।

फिर उन्होंने अपने मन में एक योजना बनाई, जिसकी चर्चा उन्होंने अपने समुदाय के कुछ साथियों से की। उनके समुदाय के गरीब अनपढ़ किसान अपनी आय बढ़ाने के लिए उनके साथ जुड़ने के लिए तैयार हो गए। जब सब तय कर लिया कि कैसे करना है तो पहले 100 ग्राहकों के लिए खाने का डिब्बा घर से ऑफ़िस पहुँचाने की शुरूआत की गई। डिब्बे एक स्थान पर इकट्ठे करके अलग-अलग स्थानों के लिए लोकल ट्रेन द्वारा पहुँचा दिए जाते और वहाँ से दूसरे व्यक्तियों की टीम उन डिब्बों को लेकर गंतव्य तक पहुँचा देती। सब इस सुविधा को बेहद पसंद करने लगे और धीरे-धीरे उनके ग्राहकों की संख्या लगातार बढ़ने लगी।

लगभग 66 वर्ष के बाद 1956 में "डब्बावालों" की एक रजिस्टर्ड कंपनी बन गई जो आज भी काम कर रही है। आँधी, बारिश या चिलचिलाती धूप में भी, डिब्बा हमेशा लंच टाइम से पहले ही ग्राहक को मिल जाता है। बिना किसी चूक के, सही ग्राहक तक, सही समय पर। चाहे इसके लिए उन्हें बीसवीं मंज़िल पर सीढ़ियाँ चढ़कर ही क्यों न जाना पड़े। है न कमाल की बात! आखिर ऐसा कैसे संभव हो पाता है?

आज 'डब्बावालों' के ग्राहकों की संख्या लाखों में हो गई है। ऐसे में योजना बनाकर काम करना और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। लोकल ट्रेन में निश्चित किए गए स्टेशनों पर, निश्चित समय में डिब्बों की अदला-बदली होती है। ट्रैफ़िक जाम से बचने के लिए ये रेहड़ी, साइकिल का प्रयोग करते हैं या पैदल ही चलते हैं। विशेष कोडिंग सिस्टम से पूरा डिब्बा सिस्टम संचालित होता है जो बहुत ही सरल है और जिसे कम पढ़े-लिखे डब्बावाले आसानी से समझ जाते हैं। लाखों घरों से डिब्बे दफ़्तर तक तथा दफ़्तर से खाली डिब्बे उन घरों तक पहुँचाए जाते हैं।

इस संगठन के कुछ खास नियम हैं जिन्हें इससे जुड़े हुए सब लोग पालन करते हैं, जैसे सफेद टोपी और वर्दी पहनना, जिससे कि दूर से ही इन्हें देखकर लोग रास्ता दे देते हैं। हर एक नए 'डब्बावाले' की 6 महीने की ट्रेनिंग होती है। इलाकों के हिसाब से 10 से 20 'डब्बावालों' का समूह होता है जिसका नेता समूह का एक सबसे अनुभवी सदस्य होता है।

इस कंपनी को सिक्स सिग्मा रेटिंग मिली है, जिसका मतलब है- 60 लाख बार कार्य करने में केवल एक गलती की संभावना। लाखों घरों से डिब्बे दफ़्तर तक तथा दफ़्तर से खाली डिब्बे उन घरों तक पहुँचाए जाते हैं।

आजकल 'डब्बावाला' संगठन, SMS व ऑनलाइन प्रणाली से भी अपने ग्राहकों को जोड़ रहा है। कई प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों से तथा कई बिज़निसमैन इनके काम के तरीके को समझने के लिए आते हैं। 'डब्बावालों' के कम पढ़े-लिखे होने के बावजूद इतने बढ़िया तरीके से, बिना कोई गलती किए सारा काम होता है। मुंबई के 'डब्बावाले' मानो मुंबई की लाइफ़-लाइन बन चुके हैं।

चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

सभी विद्यार्थी 5-6 के समूहों में निम्न प्रश्नों पर चर्चा करेंगे:

- 'मुंबई डब्बावाला' के काम करने में योजना बनाना किस तरह महत्त्वपूर्ण है?
- 'मुंबई डब्बावाला' का कार्य किन छोटे चरणों में बँटा होता है?
- 'डब्बावाला' के कार्य में गलती होने की संभावना न के बराबर होती है। वे ऐसा कैसे कर पाते हैं?

चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस कहानी में हमने देखा कि कार्य को योजनाबद्ध तरीके से करने से वह सफल होता है। एक बड़ा कार्य, जिसमें कई लोगों को एक साथ कार्य करना हो - वह भी छोटे-छोटे चरणों में बाँटने से कुशलता से किया जा सकता है।

6.3 गतिविधि | यात्रा की योजना बनाना

परिचय

किसी भी कार्य को अच्छी तरह पूरा करने के लिए योजना बनाना मददगार होता है। पर एक अच्छी योजना कैसे बनाई जाए? एक अच्छी योजना बनाते हुए क्या-क्या ध्यान रखना चाहिए? उसे हम इस गतिविधि के ज़रिए और अच्छी तरह समझ सकते हैं।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

3-4 पीरियड

क्या सीखेंगे

- समय तथा संसाधनों का ध्यान रखते हुए योजना बनाना
- कार्य को छोटे चरणों में बाँटना

सामग्री | कापी, पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

इस गतिविधि में विद्यार्थियों को योजना बनाते समय अपनी ओर से कोई सुझाव न दें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- यह गतिविधि करने के लिए विद्यार्थियों से कहें कि आपको अपने समूहों में शिक्षा से जुड़ी एक यात्रा की योजना बनानी है जिसके लिए आप अधिकतम 5,000 रुपये प्रति समूह का बजट रख सकते हैं।
- योजना बनाने में विद्यार्थियों को कई बातों को ध्यान में रखना होगा, जैसे वे कहाँ जाना चाहेंगे, कितना समय कहाँ चाहिए होगा, किन साधनों की आवश्यकता होगी, कैसे उस स्थान पर पहुँचेंगे, कहाँ ठहरना चाहेंगे, क्या खाना चाहेंगे, जिस जगह को चुना है, उस जगह जाकर क्या उद्देश्य पूरा होगा आदि।
(इन बिंदुओं को नोट करने के लिए विद्यार्थी नीचे दिए गए चार्ट का प्रयोग कर सकते हैं।)

- इन सब बातों का ध्यान रखते हुए उन्हें यात्रा की योजना बनाने के लिए छोटे लक्ष्य तथा कार्य निर्धारित करने हैं।
- विद्यार्थी अपनी योजना को एक कागज़ पर लिखेंगे।
- सभी समूह अपनी यात्रा की योजना को कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- अपनी यात्रा की योजना बनाते हुए आपने किन-किन बातों का ध्यान रखा?
- अपनी यात्रा की योजना बनाने के लिए आपने योजना को किन छोटे-छोटे चरणों में बाँटा?
(विद्यार्थी इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए अपने द्वारा बनाए गए चार्ट का प्रयोग कर सकते हैं।)

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

सभी समूह बारी-बारी से अन्य समूहों की योजना के बारे में सकारात्मक तथा आलोचनात्मक सुझाव देंगे।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि से हमने सीखा कि कोई भी चुनौती या कार्य बहुत बड़ा नहीं है। अगर कार्य को छोटे-छोटे चरणों में बाँटकर योजना बनाई जाए और योजना का सही तरीके से पालन करते हुए समय व उपलब्ध संसाधनों का भी ध्यान रखा जाए तो प्रत्येक कार्य सफलता से पूरा किया जा सकता है।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- किसी भी कार्य को करने के लिए योजना बनाते समय किन पहलुओं पर विचार करना बेहतर होता है?
- कार्य को विभिन्न छोटे चरणों में बाँटने और हर छोटे चरण के लिए समय तथा अपेक्षित परिणाम निर्धारित करने से कार्य पर क्या फर्क पड़ता है?

फ़ील्ड प्रोजेक्ट और यह यूनिट

- अपने फ़ील्ड प्रोजेक्ट की योजना बनाते हुए आप किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?
- फ़ील्ड प्रोजेक्ट करते हुए आप अपने कार्य को किन छोटे चरणों में बाँटेंगे?

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

किसी कार्य को सफल बनाने के लिए योजना बनाना जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही महत्त्वपूर्ण है योजना बनाते हुए समय, साधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखना और कार्य को छोटे चरणों में बाँटकर पूरा करना।

यूनिट **7**

विश्लेषण करके सीखना
Analyze and Learn

R8Y5R7

फ़ैसिलिटेटर के लिए

साथी से सीखना

जानकारी खोजकर सीखना

खुद करके सीखना

सीखने के बहुत तरीके होते हैं। कई बार हम किसी शिक्षक से, अपने परिवार या दोस्तों से कुछ सीखते हैं और कई बार खुद से। खुद से सीखने के सबके अलग-अलग तरीके हो सकते हैं; जैसे परिस्थितियों और अपने अनुभवों का विश्लेषण करना। इस यूनिट में हम सीखने के तरीकों को जानेंगे, विश्लेषण को समझेंगे और खुद की समझ बढ़ाएँगे।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

इस यूनिट में विद्यार्थी विश्लेषण करने की क्षमता को विकसित करेंगे। इसके लिए वे निम्न क्षमताओं का अभ्यास करेंगे -

1. सीखने के अलग-अलग तरीकों को पहचानना
2. विश्लेषण करके सीखना

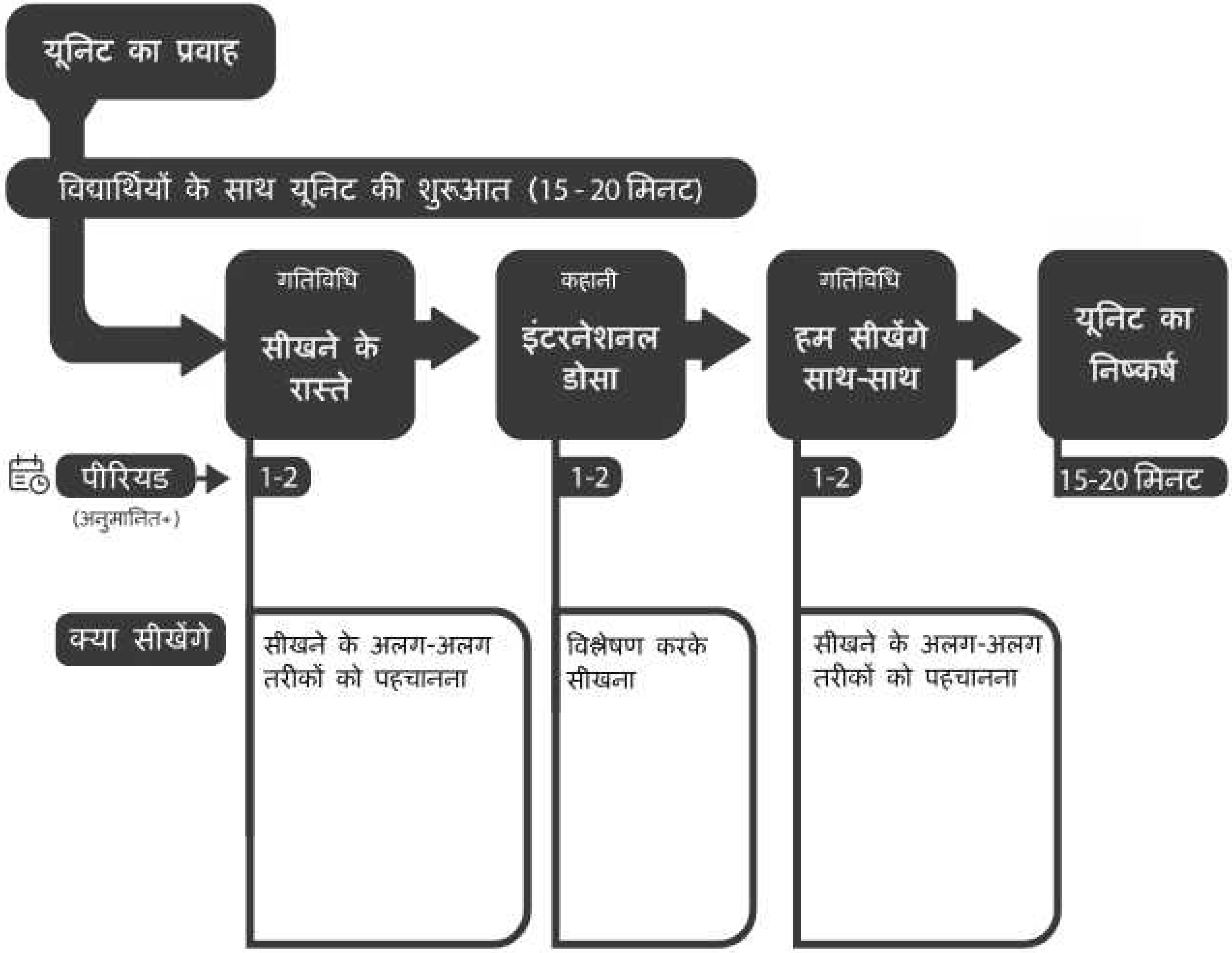

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

यूनिट को शुरू करने के लिए विद्यार्थियों से पूरी कक्षा में निम्न सवालों पर चर्चा करें -

- क्या आप बता सकते हैं कि आप कैसे सीखते है?

4-5 विद्यार्थियों से उत्तर लेकर उन्हें बताएँ -

हम अपने हर अनुभव से सीखते हैं, चाहे हम किसी कार्य को करने में सफल हों या असफल। हमें निरंतर अनुभवों का विश्लेषण करके सीखना चाहिए। विश्लेषण से हमारा मतलब है कि किसी कार्य या भावना को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के आपसी संबंध और निर्भरता का आकलन करना। इस यूनिट में हम सीखने के अलग-अलग तरीकों का अभ्यास करेंगे और विश्लेषण करके सीखने के बारे में समझेंगे।

7.1 गतिविधि | सीखने के रास्ते

परिचय

हम सबमें अनेक क्षमताएँ हैं। किसी एक क्षमता को विकसित करने के अनेक तरीके हो सकते हैं। उदाहरण के लिए खाना बनाना सीखना। हो सकता है कोई व्यक्ति एक व्यंजन बार-बार बनाकर उसे अच्छे से बनाना सीखे और दूसरा व्यक्ति किसी को खाना बनाते हुए देखते-देखते सीखे। इस गतिविधि में हम सीखने के अलग-अलग तरीकों को पहचानेंगे।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

क्या सीखेंगे — 1-2 पीरियड

- सीखने के अलग-अलग तरीकों को पहचानना

फ़ैसिलिटेटर नोट

- सुनिश्चित करें कि गतिविधि में दिया गया प्रत्येक विषय किसी न किसी समूह ने चुन लिया हो।

कैसे करें — चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थियों के 5-6 के समूह बनाएँ।
- समूह का हर विद्यार्थी निम्न "सीखने के तरीकों" में से कोई एक चुने। - (समूह का हर विद्यार्थी सीखने का अलग-अलग तरीका चुने।)
  - इंटरनेट के माध्यमों जैसे - गूगल सर्च, सोशल मीडिया द्वारा सीखना।
  - लोगों से मिलकर, बात करके सीखना।
  - खुद से बार-बार अभ्यास (practice) करके सीखना।
  - समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकों आदि द्वारा पढ़कर सीखना।
  - किसी व्यक्ति, रेडियो, म्यूज़िक आदि को सुनकर सीखना।
  - यू-ट्यूब व अन्य वीडिओ (video), प्रस्तुतियाँ (presentations), पोस्टर (posters) आदि द्वारा देखकर सीखना।
- चुने हुए विषय के बारे में निम्न प्रश्नों के उत्तर सोचें और अपनी कॉपी में लिखें -
  - सीखने के इस तरीके से आपने क्या समझा/जाना?
  - इस तरीके से सीखने के क्या फ़ायदे हो सकते हैं?
- इसके लिए 10 मिनट का समय है।
- इसके बाद विद्यार्थी समूह में अपने चुने हुए "सीखने के तरीके" के बारे में 2-3 मिनट में बताएँ।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

गतिविधि के बाद विद्यार्थियों को अपने समूह में निम्न प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए कहें-

- आपको सीखने के कौन-से तरीके अपने लिए सबसे ज़्यादा उपयोगी लगे और क्यों?
- आप अलग-अलग परिस्थितियों में विभिन्न तरीकों से कैसे सीख सकते हैं? उदाहरण देकर बताएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

चर्चा कर लेने के बाद हर समूह से कुछ विद्यार्थियों को पूरी कक्षा के साथ अपनी बात को साझा करने के लिए आमंत्रित करें। जब एक विद्यार्थी पूरी कक्षा के साथ अपने विचार साझा कर ले, तब उसी विद्यार्थी को दूसरे समूह के किसी विद्यार्थी को आमंत्रित करने के लिए कहें। इसी तरह यह विद्यार्थी अपनी बात साझा करने के बाद तीसरे समूह से किसी विद्यार्थी को आमंत्रित करे। यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक सभी समूहों की बारी न आ जाए।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि में हमने सीखने के अलग-अलग तरीकों के बारे में जाना और खुद के सीखने के तरीकों पर भी चिंतन किया। साथ-साथ हमने समझा कि अलग-अलग परिस्थितियों और हमारी रुचियों के अनुसार भी हम विभिन्न तरीकों से सीखते हैं। अगर हमें एक तरीके से कम समझ आ रहा है तो हमें अपनी समझ बढ़ाने के लिए किसी और तरीके से उसे समझने और सीखने की कोशिश करनी चाहिए।

7.2 कहानी | इंटरनेशनल डोसा

परिचय

पिछली गतिविधि में हमने सीखने के विभिन्न तरीकों को समझा और जाना कि हर परिस्थिति में अलग-अलग तरीकों द्वारा सीखकर आगे बढ़ा जा सकता है। अब हम प्रेम गणपति की कहानी सुनेंगे जिन्होंने अपनी जिज्ञासा और विश्लेषण द्वारा लगातार सीखते हुए अपने व्यवसाय को दूर-दूर तक पहुँचाया।

1-2 पीरियड

क्या सीखेंगे

- विश्लेषण करके सीखना

भूमिका

रानी - अरे! तुमसे अभी तक ये माला नहीं बनी?

जेनी - अब तुम फिर से चींटी के दीवार पर चढ़ने का उदाहरण मत देना।

रानी - नहीं! आज मैं तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति की कहानी सुनाऊँगी जिन्होंने चींटी वाले उदाहरण को सच कर दिखाया। उनके हर क़दम पर मुश्किलें और अवसर एक साथ खड़े थे। उन्होंने उस दौरान कैसे अलग-अलग परिस्थितियों का विश्लेषण करके सीखा और सफल हुए, आइए सुनते हैं।

कहानी

प्रेम गणपति का जन्म 1973 में तमिलनाडु के तूतीकोरिन जिले में हुआ जहाँ वे अपने 5 भाई-बहन व माता-पिता के साथ रहते थे। उनके कस्बे के युवा 10वीं कक्षा के तुरंत बाद कपड़े की दुकान, बर्तनों की दुकान या जनरल स्टोर में काम करने लगते थे। उन्होंने भी ऐसा ही किया और वे चेन्नई में एक कॉफ़ी शॉप पर काम करने लगे जहाँ उनके पिता व भाई भी काम करते थे। भले ही वे 10वीं तक पढ़े हों लेकिन वे हमेशा कुछ बड़ा और ऐसा करने के लिए व्याकुल रहते थे, जिसमें उन्हें पूर्ण संतुष्टि मिले।

सुनने में थोड़ा फ़िल्मी लग सकता है, लेकिन जब प्रेम 17 साल के थे, तब वे किसी जानकार के साथ काम की तलाश में मुंबई चले आए। परंतु वह जानकार उन्हें मुंबई रेलवे स्टेशन पर छोड़कर कहीं गायब हो गया और फिर कभी नहीं दिखा। आप ही की उम्र का वह इंसान एक अनजान शहर में अकेले खड़ा था, जिसे न वहाँ की भाषा आती थी, न ही उसके पास पैसे बचे थे। जिस तरह कोई महानगर हर प्रवासी व्यक्ति को अपने पल्लू में जगह दे देता है, उसी तरह प्रेम को भी मुंबई शहर का सहारा मिला और उन्हें एक भोजनालय में बर्तन धोने का काम मिल गया।

कुछ समय बाद वे एक रेस्टोरेंट में बैरे (waiter) का काम करने लगे। उनकी ख़ुशी का ठिकाना न था क्योंकि अब तक के अनुभव वे वह यह समझ चुके थे कि इस काम में उन्हें अलग-अलग लोगों से मिलने का और उनसे दुनिया के बारे में जानने का मौका मिलेगा। धीरे-धीरे उन्हें नियमित आने वाले ग्राहकों के खाने-पीने की पसंद-नापसंद याद हो गई थी। उनके मिलनसार व्यवहार से लोग प्रभावित होकर जाते थे।

कुछ महीने बाद, 20,000 रुपये लगाकर प्रेम ने सड़क के किनारे डोसा और इडली का स्टॉल लगाया। वे अकसर बड़ी-बड़ी इमारतों के नाम में प्लाज़ा शब्द देखा करते थे। उन्होंने इसका अर्थ शब्दकोश (dictionary) में ढूँढ़ा और जाना कि बाज़ार के लिए बने एक खुले सार्वजनिक स्थान को प्लाज़ा कहते है। इससे प्रभावित होकर उन्होंने अपने स्टॉल का नाम "डोसा प्लाज़ा" रखा। उन्हें इडली और डोसा बनाने के बारे में कुछ नहीं पता था। वे अपने पड़ोस में रह रहे दक्षिण भारतीय परिवार से बना बनाया घोल ले लिया करते थे और बार-बार इडली डोसा बनाते हुए, हो रही गलतियों से सीखते हुए, अपनी प्रक्रिया को लगातार बेहतर करते थे। धीरे-धीरे उन्होंने घोल भी खुद बनाना शुरू कर दिया। इस प्रकार वे बनाते-बनाते विश्लेषण करके सीखते। आखिरकार वे बहुत स्वादिष्ट इडली व डोसे बनाने लगे।

उन्होंने देखा कि आसपास के भोजनालय में सफ़ाई का ध्यान नहीं रखा जाता, जिस वजह से ग्राहक भी कम आते हैं। प्रेम ने अपने स्टॉल को एकदम साफ़ और भोजन बनाने की प्रक्रिया को एकदम स्वच्छ रखा, जिससे बड़ी-बड़ी गाड़ियों से भी लोग उनका डोसा और इडली खाने आने लगे।

वे जिस किराए के कमरे में रहते थे, वहाँ उनके साथ एक इंजीनियरिंग कॉलेज का छात्र रहता था। उसने प्रेम को ई-मेल आई-डी बनाना और इंटरनेट पर जानकारी ढूँढना सिखाया। प्रेम अकसर दोपहर 3-6 बजे के बीच साइबर कैफे जाकर अपने दिमाग में चल रहे प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ा करते थे और अपने काम को बेहतर करते जाते थे। कुछ महीने बाद उन्हें पास ही में खुल रहे मॉल के फ़ूड कोर्ट में अपना स्टॉल लगाने का प्रस्ताव मिला, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। वे अलग-अलग विधि से डोसे बनाते और अपने स्टॉल पर नियमित आने वाले कॉलेज के छात्रों को चखाते। इस प्रकार वे 100 से भी ज़्यादा प्रकार के डोसे बनाने लगे। अपने व्यवसाय को बड़ा करने के लिए वे इसी तरह अपने अनुभवों का विश्लेषण करके नए-नए प्रयोग करते रहे।

आज भारत में डोसा प्लाज़ा के 78 रेस्टोरेंट हैं। इनकी फ्रैंचाइज़ी (franchise) तीन देशों- संयुक्त अरब अमीरात, न्यूज़ीलैंड व ओमान में भी हैं। ये सब प्रेम गणपति के विश्लेषण करके सीखने की इच्छा से संभव हो पाया। वे लगातार अपने काम को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों को समझते रहे और उसके अनुसार विभिन्न तरीकों से सीखते रहे जैसे - किसी व्यक्ति से सीखना, खुद से अभ्यास करके सीखना, इंटरनेट, अलग-अलग लोगों से बात करना, अपने आसपास की स्थितियों का अवलोकन करना आदि।

प्रेम गणपति के शब्दों में- "असली स्टूडेंट को हर इंसान से, हर अनुभव से कुछ न कुछ सीखने को मिलता है।"

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

कहानी सुनाने के बाद पूरी कक्षा में विद्यार्थियों के साथ निम्न प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए कहें-

- इस कहानी की किस बात ने आपको सबसे ज़्यादा प्रभावित किया और क्यों?
- प्रेम गणपति ने कौन-कौन सी परिस्थितियों का विश्लेषण करके उनसे सीखा?
- अगर आपकी किसी से अनबन हो जाती है तो आप कैसे विश्लेषण करते हैं?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

"इंटरनेशनल डोसा" कहानी में हमने जाना कि कैसे प्रेम गणपति ने हर परिस्थिति में अलग-अलग माध्यमों से सीखा और उससे विकसित हुए विचारों को अपने व्यवसाय में इस्तेमाल किया। उन्होंने अपने अनुभवों और कार्यों का भी विश्लेषण करके लगातार सुधारा और उसे एक बड़े मुकाम पर पहुँचाया। इसी प्रकार हमें भी अपने सीखने के दायरे को बड़ा करके लगातार अलग-अलग तरीकों को खोजना चाहिए और उन्हें अपनाना चाहिए।

7.3 गतिविधि | हम सीखेंगे साथ-साथ

परिचय

'इंटरनेशनल डोसा' कहानी में हमने जाना कि प्रेम गणपति ने हर परिस्थिति को पहले समझा और फिर उस पर कोई ऐक्शन (action) लिया। और साथ ही साथ अलग-अलग तरीकों से सीखकर अपने काम को एक अलग मुकाम पर पहुँचाया। इस गतिविधि में हम Peer Learning (एक-दूसरे से सीखना) का अभ्यास करेंगे।

सामूहिक कार्य

1-2 पीरियड

क्या सीखेंगे

- सीखने के अलग-अलग तरीकों को पहचानना

सामग्री | इस गतिविधि के लिए एक खुले स्थान की आवश्यकता होगी।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- सुनिश्चित करें कि दोनों बार अंदर वाले गोले में 10 नए विद्यार्थी चर्चा का हिस्सा बनें।
- बाहर बैठे विद्यार्थियों को अंदर गोले में आकर अपने विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- ध्यान रखें कि चर्चा के 5 मिनट बाद ही नए विद्यार्थी अंदर आ सकते हैं।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- सभी विद्यार्थी कक्षा में दो संकेंद्रित गोलों (Concentric Circles) में इस तरह बैठ जाएँ।

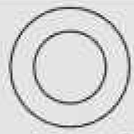

- किन्हीं 10 विद्यार्थियों को अंदर वाले गोले में बैठने के लिए आमंत्रित करें और बाकी सभी विद्यार्थियों को बाहर वाले गोले में बैठने को कहें।
- अब विद्यार्थियों को बताएँ कि इस गतिविधि में अंदर बैठे विद्यार्थियों को दैनिक जीवन के किसी विषय पर चर्चा करनी होगी जो बाहर बैठे विद्यार्थी ध्यान से सुनेंगे।
- फ़ैसिलिटेटर किसी एक विषय का चयन करें। (उदाहरण - रोज़ाना की ज़िंदगी में व्हाट्सएप्प (Whatsapp) का प्रभाव, इत्यादि)
- विद्यार्थियों को चुने गए विषय के लाभ, हानि व अन्य बातों पर चर्चा करते हुए एक आपसी सहमति बनानी है।
- चर्चा के बीच में अगर किसी बाहर बैठे विद्यार्थी को चर्चा में भाग लेना हो तो वह-
  - अंदर बैठे किसी विद्यार्थी के कंधे पर हाथ रखे और वे दोनों विद्यार्थी अपनी जगह आपस में बदल लें।
- इस तरह से चर्चा 10 से 15 मिनट तक चल सकती है।
- यह गतिविधि 2 बार दोहराएँ।
  - नया विषय देते हुए 10 नए विद्यार्थियों को अंदर वाले गोले में बैठने के लिए आमंत्रित करें।
  - उदाहरण- "स्कूल मैगज़ीन (magazine) कैसी होनी चाहिए?"

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी दो-दो के जोड़े में निम्न प्रश्नों के बारे में सोचें और चर्चा करें-

- इस गतिविधि से आपने क्या-क्या सीखा? विस्तार में बताएँ।
- आप सीखने के इस तरीके को अपने दैनिक जीवन में कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

चर्चा कर लेने के बाद कुछ विद्यार्थियों को पूरी कक्षा के साथ गतिविधि से हुई सीख को साझा करने के लिए आमंत्रित करें। जब एक विद्यार्थी पूरी कक्षा के साथ साझा कर ले, तब उसी विद्यार्थी को दूसरे किसी विद्यार्थी को आमंत्रित करने के लिए कहें जो पूरी कक्षा के सामने कम बोलता हो। यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक कम से कम 6 विद्यार्थी अपनी बात साझा न कर लें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि में हमने अपने साथियों की बातों को सुनकर अपने विचारों का दायरा बढ़ाया और उन्हें साझा किया। हम सभी के अनुभव और कौशल अलग-अलग होते हैं। ऐसे में ध्यान से सुनना, अपने अनुभवों पर विचार करना और दूसरों के अनुभवों से भी सीखकर आगे बढ़ना बहुत ज़रूरी हो जाता है।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- किसी ऐसे कार्य के बारे में बताएँ जो आप हमेशा से सीखना चाहते हैं। आप उसे किन-किन माध्यमों से सीख सकते हैं?
- अपने अनुभवों का विश्लेषण करके क्या आप अपने बारे में कुछ नया जान सके? विस्तार से बताएँ।

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

इस यूनिट में आपने सीखने के अलग-अलग तरीकों को जाना और अपने अनुभवों का विश्लेषण करने की महत्ता को समझा। हमारे जीवन में समय के साथ-साथ अनेक नए लोग, नई परिस्थितियाँ हमेशा आती रहेंगी। अगर हम अपनी भावनाओं और अनुभवों के प्रति सजग रहें तो हम हर परिस्थिति का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे, साथ ही अपने आसपास के लोगों से भी सीखने में नहीं हिचकिचाएँगे।

यूनिट 8

गिरकर सँभलना
Bouncing Back from Failures

X5P9T9

फ़ैसिलिटेटर के लिए

हम अपनी असफलताओं एवं अनिश्चितताओं को लेकर चिंतित और परेशान क्यों हो जाते हैं? असफल होना बुरा नहीं हैं। अगर हम अपनी असफलताओं को एक अवसर की तरह समझें तो वे हमें अपने कार्य को नए और बेहतर तरीके से करने का एक मौका देती हैं और सफलता की तरफ़ ले जा सकती हैं। इस प्रकार का सकारात्मक दृष्टिकोण न केवल हमारा आत्मविश्वास बढ़ाता है बल्कि इससे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नए तरीकों को आज़माने की प्रेरणा भी देता है।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

इस यूनिट में विद्यार्थी कार्य में असफलता मिलने के बावजूद प्रयास जारी रखना सीखेंगे। इसके लिए वे निम्नलिखित क्षमताओं का अनुभव व अभ्यास करेंगे -

1. दृढ़ बने रहना
2. असफलता से सीखना
3. असफलता का स्वयं एवं दूसरों पर प्रभाव समझना

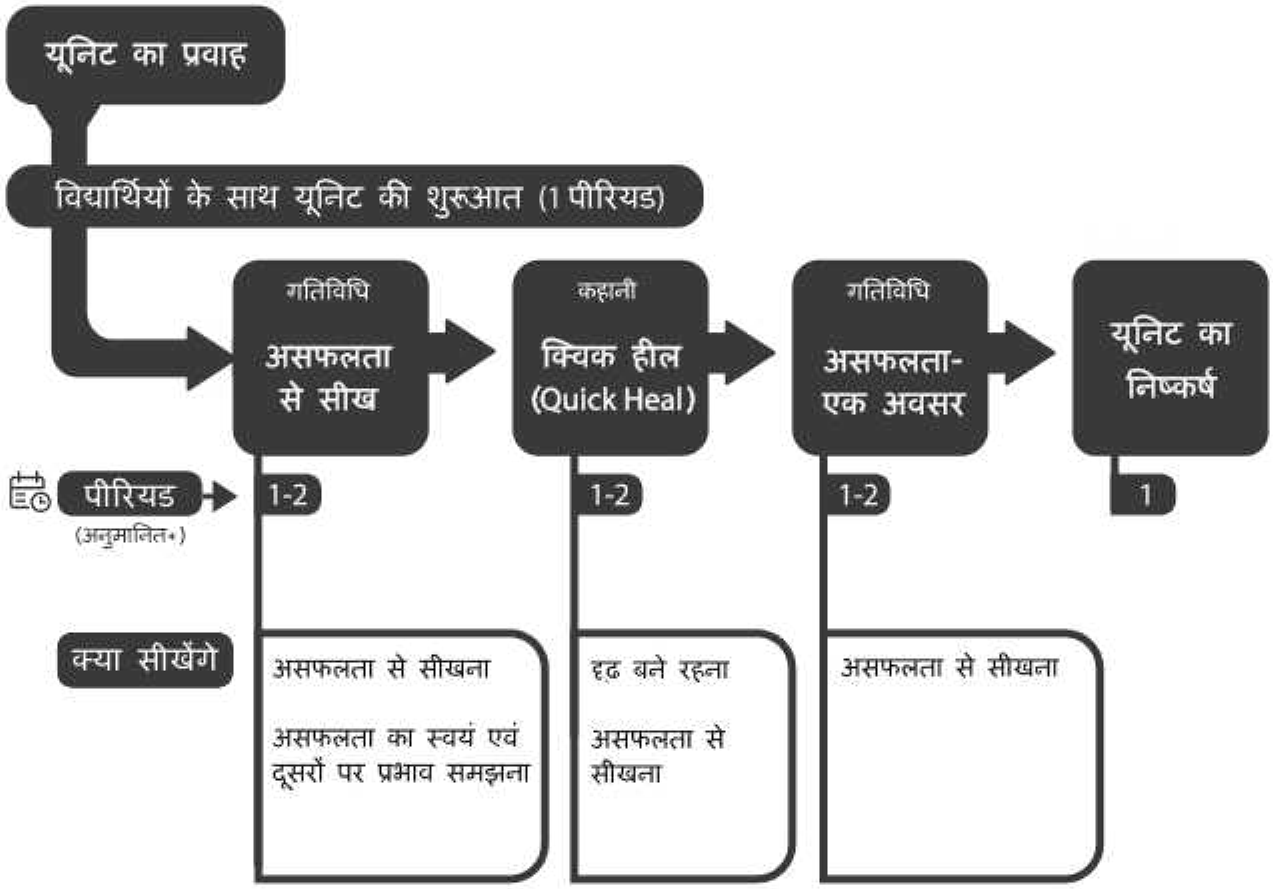

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

विद्यार्थियों को अपनी निजी ज़िंदगी से कोई ऐसा उदाहरण देने को कहें जब उन्हें कोई असफलता मिली हो। उसके बाद विद्यार्थियों से निम्न सवाल पूछें -

- जब आप किसी काम में असफल होते हैं तब आप उसे दोबारा करने के बारे में क्या सोचते हैं?

यदि शिक्षक भी सहजता से अपनी किसी असफलता का उदाहरण साझा करना चाहते हैं, तो कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों को अपनी बात खुलकर कहने का प्रोत्साहन मिलेगा और असफलता से जुड़ी शर्मिंदगी को वे खुद पर हावी नहीं होने देंगे।

8.1 गतिविधि | असफलता से सीख

परिचय

कई बार असफलताएँ हमारे आगे बढ़ने में रुकावट बनती हैं परन्तु सकारात्मक नज़रिए से देखें तो नए कौशल सीखने के अवसर भी प्रदान करती हैं। इसलिए रुक जाने के बजाय अलग-अलग तरीके से प्रयास करना हमें आगे की राह दिखाता है। अब हम देखेंगे कि क्या हम नाकाम होकर दोबारा कोशिश करने के लिए तैयार हैं?

सामूहिक कार्य: 2-2 विद्यार्थी

1-2 पीरियड

क्या सीखेंगे

- असफलता से सीखना
- असफलता का स्वयं एवं दूसरों पर प्रभाव समझना

सामग्री | अख़बार की डबल शीट (प्रत्येक समूह)

फ़ैसिलिटेटर नोट

- गतिविधि के दौरान कक्षा में कुछ अव्यवस्था हो सकती है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थियों के दो-दो के जोड़े बनाएँ।
- प्रत्येक जोड़ा दिए गए अख़बार की डबल शीट पर खड़ा होगा।
- हर जोड़े को अख़बार पर खड़े हुए, केवल पैरों का इस्तेमाल करके, अख़बार को बिना फाड़े, उल्टा पलटना होगा।
- पहले एक मिनट के बाद सभी रुक जाएँगे, और जो जोड़े पहली पारी में अख़बार नहीं पलट पाए हों, वे दूसरी बार एक मिनट का समय लेकर फिर कोशिश करेंगे।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

'असफलता से सीख' के बाद जोड़ों में ही विद्यार्थियों से इन सवालों पर बात करने को कहें-

- असफलता मिलने पर आपकी और आपके साथी की क्या प्रतिक्रिया रही और उसका एक-दूसरे पर क्या प्रभाव पड़ा?
- यह गतिविधि सरल नहीं थी। आपने पहले प्रयास से ऐसा क्या सीखा जिसने आपके दूसरे प्रयास को बेहतर बनाया?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

चर्चा कर लेने के बाद कुछ जोड़ों को पूरी कक्षा के साथ अपनी बात साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

अकसर साथ में काम करते समय हम इस बात को भूल जाते हैं कि हमारे मूड, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं का दूसरों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। असफलताओं से सीखने वाला एक व्यक्ति असफल होने के समय भी समूह में सकारात्मक माहौल बनाता है जबकि दूसरों को दोष देने वाला व्यक्ति समूह में नकारात्मक भावना पैदा करता है। प्रभावी रूप से दूसरों के साथ काम करने के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि हम कठिन परिस्थितियों में भी शांति से काम करते रहें।

8.2 कहानी | Quick Heal (क्विक हील)

परिचय

पिछली गतिविधियों से हमने जाना कि अगर हम लगातार कोशिश करते रहें तो चुनौतियों पर काबू पाया जा सकता है। अब हम एक कहानी के माध्यम से एक ऐसे व्यक्ति के बारे में जानेंगे जो सफलता तक इसलिए पहुँचा क्योंकि असफलताओं के बाद भी वह लगातार कोशिश करता रहा। जब हम अपने कार्य को पूरा करने के लिए लगातार प्रयास करते हैं, तो इससे यह पता चलता है कि हमें अपने प्रयासों पर दृढ़ विश्वास है और यही सफलता का मूल-मंत्र भी है।

1-2 पीरियड

क्या सीखेंगे
- दृढ़ बने रहना
- असफलता से सीखना

भूमिका

फ़ैसिलिटेटर निम्न प्रश्नों के साथ कहानी आरंभ कर सकते हैं-
- क्या आप जानते हैं कि एंटी-वायरस क्या होता है? कौन-कौन से एंटी-वायरस बाज़ार में उपलब्ध हैं? एंटी-वायरस एक ऐसा सॉफ़्टवेयर होता है जो कंप्यूटर में छुपे वायरस को खत्म कर देता है।
- क्विक हील भारत में बना एक ऐसा ही एंटी-वायरस है। जानते हैं क्विक हील किसने बनाया है? आइए उनकी कहानी सुनते हैं।

कहानी

कैलाश और संजय काटकर अपने माता-पिता और छोटी बहन के साथ पुणे में 10'x12' के एक कमरे में रहते थे। उनके पिता अपने तीनों बच्चों की शिक्षा का खर्च पूरा करने के लिए नौकरी के बाद घर पर भी मशीनें रिपेयर करते थे। उधर बड़े बेटे कैलाश ने पढ़ाई छोड़कर रेडियो ठीक करने का काम शुरू कर दिया। फिर उन्होंने बैंकों में लेज़र प्रिंटिंग मशीनों को ठीक करने का काम भी किया और अपनी रिपेयर वर्कशॉप खोली। छोटा भाई संजय इंजीनियर बनना चाहता था और उसने कम्प्यूटर साइंस कोर्स में दाख़िला ले लिया।

इसी बीच भारत में कम्प्यूटर का उपयोग बढ़ा और उन्हें ठीक करने की चुनौती सामने आने लगी। उन दिनों इंटरनेट नहीं था। कम्प्यूटर में यदि फ्लॉपी द्वारा कोई वायरस आ जाता तो उसे ठीक करने का उस समय कोई भी प्रावधान (Provision) नहीं था। कम्प्यूटर ख़राब होकर बेकार हो जाते थे। संजय के मन में कम्प्यूटर वायरस के बारे में जानने की इच्छा और अधिक जाग गई। बहुत दिनों तक वे अपने भाई की रिपेयर वर्कशॉप में कम्प्यूटर्स पर काम करते रहे। अपने अनुभव और मेहनत के कारण धीरे-धीरे संजय ने एक ऐसा सॉफ़्टवेयर बनाया जो वायरस को हटा सकता था। उन्होंने अपने कॉलेज की लैब में भी वायरस से खराब हुए कई कम्प्यूटर ठीक कर दिए।

मास्टर डिग्री हासिल करते हुए संजय ने अलग-अलग कंपनियों में नौकरी के लिए आवेदन देना शुरू किया। तब बड़े भाई कैलाश ने उन्हें अपने साथ जुड़ने को कहा। बढ़िया कम्पनी में अच्छी तनख़्वाह पर नौकरी करने या विदेश जाने के प्रलोभन को छोड़कर संजय ने बिना किसी हिचकिचाहट के कैलाश के साथ मिलकर 1995 में एक कंपनी की शुरुआत की।

उनकी राह बेहद कठिन थी। एंटी-वायरस का महत्त्व लोगों को समझ नहीं आ रहा था। शुरू-शुरू के 8-9 महीने में वे केवल एक-दो क्विक हील एंटी-वायरस ही बेच पाए। भारतीय विक्रेता केवल विदेशी कंपनियों के उत्पाद बेचना चाहते थे। तब उन्होंने अपने एंटी-वायरस को प्रचार के लिए फ़्री में बाँटना शुरू किया। कंपनी बनने के बाद एक साल बीता, दो साल बीते पर कारोबार आगे नहीं बढ़ रहा था। इन परिस्थितियों में अपने बचपन के संघर्ष का अनुभव उनके बहुत काम आया। उन्हें पूरा विश्वास था कि टेक्नोलॉजी के बढ़ने से, वायरस की समस्या और भी बढ़ेगी और उनके एंटी-वायरस सॉफ़्टवेयर की माँग भी ज़रूर बढ़ेगी। इस विश्वास के साथ वे अपने संघर्ष में डटे रहे, और हुआ भी ऐसा ही। जैसे-जैसे इंटरनेट का उपयोग बढ़ता गया, वैसे-वैसे कई तरह के वायरस आने लगे। क्विक हील के पास उनका समाधान तो था ही, इसलिए उनके कारोबार में वृद्धि होने लगी। 1998 में उन्होंने अपने रिपेयरिंग के काम को बंद कर दिया और अब वे पूरी तरह से एंटी-वायरस सॉफ़्टवेयर बनाने और बेचने के काम में जुट गए।

1999 में कंपनी को फिर आर्थिक कठिनाइयाँ आईं और उनके लिए कर्मचारियों को वेतन देना भी मुश्किल हो गया। सॉफ़्टवेयर बनाने के लिए उन्हें सॉफ़्टवेयर इंजीनियर की ज़रूरत थी। उन दिनों भारत में योग्य सॉफ़्टवेयर इंजीनियर मिलना मुश्किल होता था, क्योंकि सभी अच्छे वेतन पर बाहरी देशों में काम करना चाहते थे।

ऐसी स्थिति में भी दोनों भाइयों ने हिम्मत न हारकर अपनी परिस्थिति को निष्पक्ष नजरिए से परखा। ग्राहकों की नज़र में बहुराष्ट्रीय कंपनियों (MNC) के उत्पाद की तुलना में क्विक हील के फ़ायदे बहुत थे। उन्हें अपनी इंटरनेशनल छवि पर काम करते हुए कम इंजीनियर्स के साथ ज़्यादा एंटी-वायरस बनाने के लिए ऑटोमेशन की तकनीक पर भी काम करना था। संजय ऑटोमेशन से लगातार नए-नए एंटी-वायरस बनाते रहे। मेहनत रंग लाई और क्विक हील को इंटरनेशनल मान मिला और कंपनी का विस्तार भी होता रहा। 5 साल इन चुनौतियों से जूझते हुए भी उन्होंने बाज़ार में अपनी एक पहचान बना ली। साथ ही लोगों को यह विश्वास दिलाया कि भारत में बना हुआ एक सस्ता एंटी-वायरस भी बेहतर परिणाम दे सकता है। धीरे-धीरे सफलता की ऊँचाइयाँ छूते हुए 2010 में विदेशों तक इनका कारोबार फैला। आज इनकी कंपनी लगभग 400 करोड़ का व्यापार कर रही है और लगभग 1000 कर्मचारी इनके साथ काम कर रहे हैं। अब क्विक हील एंटी-वायरस से विकसित होकर एक बड़ी 'सायबर सेक्योरिटी सोल्युशंस' कंपनी बनकर विश्वस्तर पर उभरकर आई है।

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- इतनी बाधाओं के बावजूद संजय और कैलाश को हिम्मत कहाँ से मिली होगी?
- कैलाश और संजय इस काम को हताश होकर छोड़ देते तो क्या होता?
- आपके जीवन में कैसी बाधाएँ आई हैं? उन बाधाओं को पार करने के लिए आपकी हिम्मत के स्रोत क्या रहे हैं?

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

क्विक हील एंटी-वायरस बनाने वाले संजय और उनके भाई कैलाश की कहानी हमें अपने प्रयासों के प्रति दृढ़ विश्वास रखने और अपने प्रयासों को निरंतर करते रहने के लिए प्रेरणा देती है। यदि शुरू की असफलताओं से घबराकर कार्य को बीच में ही छोड़ दिया जाए तो असफलता तो निश्चित ही है, लेकिन यदि हम अपने प्रयासों को निरंतर करते रहें तो हमारे सफल होने की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है।

8.3 गतिविधि | असफलता - एक अवसर

परिचय

जीवन में बहुत बार मुश्किल स्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में गलतियाँ या असफल होने के डर से, हम उन स्थितियों से भागने की कोशिश करते हैं। मगर कई बार ऐसी स्थितियाँ भी आती हैं जब चुनौती समझकर हम उनका सामना करते हैं। क्यों न इसे स्थायी आदत बना लिया जाए? हम इसे एक आदत कैसे बना सकते हैं, एक गतिविधि के ज़रिए इसको समझने की कोशिश करते हैं।

एकल कार्य

क्या सीखेंगे 1-2 पीरियड

- असफलता से सीखना

सामग्री | नोटबुक पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

- ध्यान रखें कि विद्यार्थी एक दूसरे की असफलताओं का मज़ाक न बनाएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थियों को 2-3 मिनट का समय दें। अपनी किसी असफलता के बारे में सोचने को कहें।
- विद्यार्थियों को इस असफलता को इन तीन सवालों के माध्यम से अपनी नोटबुक में लिखने को कहें:
  - आप कब असफल हुए?
  - जब आपको असफलता का सामना करना पड़ा तो आपको कैसा लगा?
  - आपने अपनी असफलता से क्या सीखा?
- इसके बाद 4-5 विद्यार्थियों को स्वेच्छा से अपनी असफलता के बारे में पूरी कक्षा के सामने बात करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

गतिविधि के बाद विद्यार्थियों को 5-6 के समूह में इन सवालों पर चर्चा करने को कहें -

- अकसर असफलता के बाद हम उस काम को करने का प्रयास छोड़ देते हैं। ऐसा क्यों होता है?
- असफलता के बावजूद भी उस पर लगे रहने के लिए किस प्रकार का रवैया अपनाना ज़रूरी है?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

चिंतन एवं चर्चा के बाद प्रत्येक समूह से कुछ विद्यार्थियों को अपने समूह में हुई चर्चा को पूरी कक्षा के साथ साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

जीवन में हमें तमाम तरह की असफलताओं का सामना करना पड़ता है। इनसे हमें निराश नहीं होना चाहिए। असफलताओं से प्राप्त सीख भविष्य में हमें मदद करती है। यह ज़रूरी नहीं है कि हम हर बार पहले ही प्रयास में सफल हो जाएँ। बार-बार किए गए प्रयास से हमें और बेहतर परिणाम मिलते हैं।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

इस यूनिट के बाद अब आप अपने लिए कोई ऐसी रणनीति (strategy) बनाएँ जो आपको प्रयत्न करते रहने और असफलताओं से सीखने के लिए प्रेरित करेगी। अपने पास के साथी से इस पर चर्चा करें।

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

दैनिक जीवन में किसी काम को करते हुए कभी हम कामयाब हो जाते हैं तो कभी नहीं भी होते। यह एक सामान्य सी बात है। कभी-कभी एक ही बार में सफलता नहीं मिलती। नाकाम होना और बार-बार नाकाम होना हमें अपनी ग़लतियों से सीखने का अवसर प्रदान करता है और ग़लतियों से सीखकर हम काम को बेहतर तरीके से कर पाते हैं। इससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है और इच्छाशक्ति भी दृढ़ होती जाती है। दुनिया के बड़े-बड़े आविष्कार इसी प्रकार हुए हैं।

थॉमस एडीसन 1000 बार प्रयास करने के बाद ही बल्ब बना पाए थे। उनसे किसी ने पूछा "इतनी बार नाकामयाब होने के बाद भी वह रुके क्यों नहीं?" एडीसन ने जवाब दिया कि, "मैंने 1000 तरीके खोज लिए हैं जिनकी मदद से बल्ब नहीं बनाया जा सकता।"

C-1 माइंडफुलनेस Mindfulness

E5V8T8

माइंडफुलनेस (Mindfulness) का अर्थ है पूरा ध्यान देते हुए वर्तमान के प्रति सजग बने रहने की अवस्था। माइंडफुलनेस की प्रक्रिया का उद्देश्य बच्चों को अपने वातावरण, संवेदनाओं, विचारों एवं भावनाओं के प्रति सजग करना है जिससे वे अपने सामान्य व्यवहार में सोच-विचार करके बेहतर प्रतिक्रिया (response) देने में सक्षम हो जाएँ। यह एक सरल प्रक्रिया है जो कोई भी, कहीं भी और कभी भी कर सकता है। माइंडफुलनेस के अभ्यास से कई फ़ायदे हैं:

ध्यान बनाए रखना - पढ़ाई या अन्य काम, स्कूल में या घर पर

काम के प्रति सजग रहना - काम या बात, सही है या गलत

ध्यान रखने की बातें

करें

- स्वयं की सक्रिय भागीदारी और सजगता
- प्यार, सौहार्द, विनम्रता, शांत वातावरण
- सहजता और भागीदारी

न करें

- शब्द या मंत्र का उच्चारण
- तनावपूर्ण अभिव्यक्ति, जैसे- डाँट, सख़्त शब्द, दबाव
- विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार से टोकना

माइंडफुलनेस का कार्यक्रम

हर रोज़ की क्लास में माइंडफुलनेस Everyday Mindfulness	हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस Monthly Mindfulness
शुरूआत : माइंडफुल चेक-इन (3-5 मिनट)	**शुरूआत :** माइंडफुल चेक-इन (3-5 मिनट)
साधारण EMC क्लास प्रत्येक दिन की EMC क्लास में केवल चेक-इन और चेक-आउट की प्रक्रिया होगी।	**माइंडफुलनेस का विस्तृत सत्र (कोई भी एक) -** • माइंडफुलनेस का परिचय • Mindful Listening • Mindful Silence • Mindful Breathing
अंत : साइलेंट चेक-आउट (1-2 मिनट)	**अंत :** साइलेंट चेक-आउट (1-2 मिनट)

हर रोज़ की क्लास में माइंडफुलनेस (Everyday Mindfulness)

शुरूआत : माइंडफुल चेक-इन (Mindful Check In): 3-5 मिनट

निर्देश

- माइंडफुल चेक-इन के द्वारा हम अपना ध्यान पहले से कर रहे कार्य से हटाकर, वर्तमान में लेकर आते हैं। इसका अभ्यास कभी भी, कहीं भी हो सकता है।
- चेक-इन शुरू करने से पहले अपनी जगह पर आराम से बैठ जाइए।
    - आरामदायक स्थिति में बैठकर, चाहें तो कमर सीधी करके आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में मुश्किल महसूस हो रही हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
    - अपने हाथ डेस्क पर या अपनी सुविधानुसार रख सकते हैं।
- अपना ध्यान पहले अपने आसपास के वातावरण में उत्पन्न हो रही आवाज़ों पर ले जाएँ और उसके बाद अपनी साँसों की प्रक्रिया पर ले जाएँगे।
    - ये आवाज़ें धीमी हो सकती हैं...या तेज़, रुक-रुककर आ सकती हैं...या लगातार।

      (20 सेकंड रुकें)
    - जैसी भी हों, इन आवाज़ों के प्रति सजग हो जाएँ। ध्यान दें कि ये आवाज़ें दूर से या रही हैं या पास से।

      (30 सेकंड रुकें)
    - अब अपना ध्यान अपनी साँसों पर लेकर जाएँ। साँसों के आने और जाने पर ध्यान दें।
    - साँसों को किसी प्रकार बदलने की कोशिश न करें। केवल अपनी साँसों के प्रति सजग हो जाएँ।

      (10 सेकंड रुकें)
    - ध्यान दें कि साँस कब अंदर आ रही है और कब बाहर जा रही है। अंदर आने और बाहर जाने वाली साँस में कोई अंतर है या नहीं। क्या ये साँसें ठंडी हैं या गरम...तेज़ी से आ रही हैं या आराम से....हल्की हैं या गहरी।
    - अपनी हर साँस के प्रति सजग हो जाएँ।

      (20 सेकंड रुकें)
    - धीरे-धीरे अपना ध्यान अपने बैठने की स्थिति पर ले आएँ और जब भी ठीक लगे, अपनी आँखें खोल सकते हैं।

अंत : साइलेंट चेक आउट (Silent Check Out): 1- 2 मिनट

फ़ैसिलिटेटर नोट

- साइलेंट चेक आउट के बाद कोई भी प्रश्न न पूछें।
- अगर कोई विद्यार्थी अपना अनुभव साझा करना चाहता है तो उसे मौका दे सकते हैं।

निर्देश

- कक्षा का अंत हम साइलेंट चेक आउट से करेंगे।
- अपनी इच्छा अनुसार आँखें बंद रखें या खुली रखकर नीचे की ओर देखें।
- आज की गई गतिविधियों से उत्पन्न विचारों और भावनाओं पर मनन (reflection) करें।
- साइलेंट चेकआउट के लिए 1-2 मिनट देने हैं और कोई निर्देश नहीं दिया जाएगा।

हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस (Monthly Mindfulness)

सत्र 1 माइंडफुलनेस का परिचय

शुरूआत : माइंडफुल चेक-इन (Mindful Check In): 3-5 मिनट

गतिविधि: माइंडफुलनेस का परिचय: 20-30 मिनट

फ़ैसिलिटेटर नोट

- हर महीने के पहले सोमवार को दिए गए 4 सत्र में से कोई भी एक चुनकर, उस सत्र में दी गई माइंडफुलनेस गतिविधि विद्यार्थियों को करवाएँ।
- नीचे दिए गए बिंदुओं पर विद्यार्थियों से उनके स्तर के अनुसार, उनके जीवन से संबंधित उदाहरणों पर चर्चा करें।
- सभी विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए प्रेरित करें और सभी उत्तरों को ध्यान से सुनें।

निर्देश

"EMC क्लास में हर महीने के पहले सोमवार को आप माइंडफुलनेस की अलग-अलग गतिविधियाँ करेंगे।"

प्रश्न

- क्या कोई बताना चाहेगा कि आपके अनुसार माइंडफुलनेस क्या है?
- पिछले साल माइंडफुलनेस के अभ्यास से आपको क्या मदद मिली?

निर्देश

- "शांत बैठकर, आँखें बंद रखकर मन में जो भी विचार आते हैं, उन्हें आने दें।"
  (1 मिनट रुकें)
- अब आँखें खोलें।

प्रश्न

- कितने विद्यार्थियों के विचार बीते हुए पल/घटना के बारे में थे?
- कितने विद्यार्थियों के विचार आने वाले पल की प्लानिंग/चिंता के बारे थे?
- कितने विद्यार्थियों के विचार इस पल या वर्तमान के बारे में थे?

साझा करें

- ज़्यादातर यह पाया जाता है कि अधिकतर विचार भूतकाल या भविष्य में रहते हैं, जबकि हम कार्य वर्तमान में करते हैं।
- Mind full का अर्थ है कि दिमाग पहले से ही तमाम तरह की बातों से भरा हुआ है, उलझन में है।
- Mindful का अर्थ है पूरे ध्यान के साथ कोई भी क्रिया करना। इस अभ्यास को माइंडफुलनेस कहते हैं। वर्तमान में बने रहना, अभी के प्रति सजग तथा सचेत रहना ही माइंडफुलनेस है।
  माइंडफुलनेस के अभ्यास से-
  - पढ़ाई के दौरान ध्यान कक्षा में बनाए रखने में मदद होती है। स्कूल में या घर पर पढ़ाई करते वक़्त फ़ोकस बनाए रखने में मदद मिलती है।
  - ध्यान देने के अभ्यास से तनाव, उदासी, चिंता, अकेलापन जैसी परेशानियाँ कम होती हैं।
  - यदि हर क्षण हमारा ध्यान जो कार्य कर रहे हैं, उस पर होगा तो कार्य जल्दी, बेहतर तरीके से और बिना तनाव के कर पाएँगे।

अंत : साइलेंट चेक आउट (Silent Check Out): 1- 2 मिनट

हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस (Monthly Mindfulness)

सत्र 2 Mindful Listening

शुरूआत : माइंडफुल चेक-इन (Mindful Check In): 3-5 मिनट

गतिविधि: Mindful Listening

A | ध्यान देने की प्रक्रिया पर चर्चा: 10 मिनट

- 2-3 मिनट का समय लेकर माइंडफुलनेस से स्वयं में आए बदलावों के बारे में सोचें। पिछले महीने की गई माइंडफुलनेस गतिविधि के अनुभव के बारे में भी सोचें। इन गतिविधियों का प्रयोग क्या आपने EMC क्लास के अलावा किया?
- माइंडफुलनेस के अभ्यास से अपने जीवन में कुछ फ़र्क महसूस कर रहे हैं?
    - मानसिक तनाव (Stress)
    - भावों का एहसास - सुख, दुःख, क्रोध आदि
    - क्लास में ध्यान
- माइंडफुलनेस गतिविधि से संबंधित कोई विशेष अनुभव, चुनौतियाँ या प्रश्न हैं?

B | Mindful Listening: 5 मिनट

चरण - 1

- आज आप शांत बैठकर अपने आसपास की आवाज़ों पर ध्यान देने वाले हैं। इसी को Mindful Listening कहते हैं।
- सभी विद्यार्थी आरामदायक स्थिति में बैठकर, कमर सीधी कर आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में असहज महसूस हो रहा हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
- आँखें बंद करने के बाद कक्षा में आने वाली विभिन्न आवाज़ों को सुनें। ये आवाज़ें पंखे की, ट्रैफ़िक की, किसी के बात करने की, किसी के हँसने इत्यादि की हो सकती हैं।
- अपना ध्यान अपने आसपास के वातावरण से आती हुई आवाज़ों पर ले जाएँ। आवाज़ अच्छी है या बुरी ऐसा सोचे बिना, उन्हें केवल ध्यान देकर सुनने का प्रयास करें।
- अगर किसी को लगे कि उसका ध्यान आवाज़ों से हट गया है तो वह इस बारे में सजग हो जाए और अपना ध्यान वापस आवाज़ों पर लाने का प्रयास करे।

यह 1-2 मिनट तक करवाएँ।
आँखें खोलकर कक्षा से सामूहिक रूप में पूछें - कौन-कौन सी आवाज़ें सुनीं?

चरण - 2

- दोबारा से आरामदायक स्थिति में बैठें, कमर सीधी करें और धीरे-धीरे आँखें बंद करें।
- वातावरण में उपस्थित आवाज़ों को फिर से सुनें। हो सकता है कुछ आवाज़ों पर पहले ध्यान न गया हो।
- ध्यान दें - कौन-कौन सी आवाज़ें वातावरण में हैं? कौन-कौन सी ऐसी आवाज़ें हैं जो आपको लगातार सुनाई दे रही हैं?
- आवाज़ें अच्छी हैं या बुरी, ऐसा सोचे बिना उन्हें केवल ध्यान देकर सुनने का प्रयास करें।
- अगर किसी को लगे कि उसका ध्यान आवाज़ों से हट गया है तो वे इस बारे में सजग होकर अपना ध्यान वापस आवाज़ों पर लाने का प्रयास करें।

यह 2-3 मिनट तक करवाएँ।

C | गतिविधि में चर्चा के लिए प्रस्तावित बिंदु: 15 मिनट

- इस गतिविधि के दौरान आपको कैसा अनुभव हुआ?
- क्या पहली और दूसरी बार के ध्यान से सुनने के अनुभव में कोई अंतर था?
- किनका ध्यान आवाज़ों से भटका? (हाथ उठवाया जा सकता है।)
- यदि आपका ध्यान भटका तो क्या आप उसे वापस आवाज़ों पर ला पाए?

अंत : साइलेंट चेक आउट (Silent Check Out): 1- 2 मिनट

हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस (Monthly Mindfulness)

सत्र 3 Mindful Silence

शुरूआत : माइंडफुल चेक-इन (Mindful Check In): 3-5 मिनट

गतिविधि: Mindful Listening

A | ध्यान देने की प्रक्रिया पर चर्चा: 10 मिनट

- 2-3 मिनट का समय लेकर माइंडफुलनेस से स्वयं में आए बदलावों के बारे में सोचें। पिछले महीने की गई माइंडफुलनेस गतिविधि के अनुभव के बारे में भी सोचें। इन गतिविधियों का प्रयोग क्या आपने EMC क्लास के अलावा किया?
- माइंडफुलनेस के अभ्यास से अपने जीवन में कुछ फ़र्क महसूस कर रहे हैं?
    - मानसिक तनाव (Stress)
    - भावों का एहसास - सुख, दुःख, क्रोध आदि
    - क्लास में ध्यान
- माइंडफुलनेस गतिविधि से संबंधित कोई विशेष अनुभव, चुनौतियाँ या प्रश्न हैं?

B | Mindful Silence: 5 मिनट

चरण - 1

- सभी विद्यार्थी आरामदायक स्थिति में बैठकर, कमर सीधी कर आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में असहज महसूस हो रहा हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
- आँखें बंद करने के बाद कक्षा में आने वाली विभिन्न आवाज़ों को सुनें। ये आवाज़ें पंखे की, ट्रैफ़िक की, किसी के बात करने की, किसी के हँसने इत्यादि की हो सकती हैं।

यह 1-2 मिनट तक करवाएँ।

चरण - 2

- धीरे-धीरे अपना ध्यान इन आवाज़ों के बीच की ख़ामोशी पर लाएँ। इस ख़ामोशी को सुनने/ महसूस करने का प्रयास करें तथा अपना ध्यान इस ख़ामोशी पर केंद्रित करें।
- अगर किसी को लगे कि उनका ध्यान ख़ामोशी से हट गया है तो वह इस बारे में सजग हो जाए और अपना ध्यान वापस ख़ामोशी पर लाने का प्रयास करे।

यह गतिविधि 2-3 मिनट तक करवाएँ।

C | गतिविधि में चर्चा के लिए प्रस्तावित बिंदु: 15 मिनट

- आपका अनुभव कैसा रहा?
- पहले आवाज़ों पर और उसके बाद ख़ामोशी पर ध्यान देने के अनुभव किस तरह अलग थे?
- क्या ख़ामोशी को सुनना मुश्किल था? इसका क्या कारण रहा होगा?
- क्या आपने पहले भी कभी वातावरण में ख़ामोशी को महसूस किया था?

अंत : साइलेंट चेक आउट (Silent Check Out): 1- 2 मिनट

हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस (Monthly Mindfulness)

सत्र 4 Mindful Breathing

शुरूआत : माइंडफुल चेक-इन (Mindful Check In): 3-5 मिनट

गतिविधि: Mindful Listening

A | ध्यान देने की प्रक्रिया पर चर्चा: 10 मिनट

- 2-3 मिनट का समय लेकर माइंडफुलनेस से स्वयं में आए बदलावों के बारे में सोचें। पिछले महीने की गई माइंडफुलनेस गतिविधि के अनुभव के बारे में भी सोचें। इन गतिविधियों का प्रयोग क्या आपने EMC क्लास के अलावा किया?
- माइंडफुलनेस के अभ्यास से अपने जीवन में कुछ फ़र्क महसूस कर रहे हैं?
    - मानसिक तनाव (Stress)
    - भावों का एहसास - सुख, दुःख, क्रोध आदि
    - क्लास में ध्यान
- माइंडफुलनेस गतिविधि से संबंधित कोई विशेष अनुभव, चुनौतियाँ या प्रश्न हैं?

B | Mindful Breathing: 5 मिनट

चरण - 1

- Mindful Breathing में हम अपना ध्यान अपनी साँस पर लेकर आते हैं और हर अंदर-बाहर आती जाती साँस पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- सभी विद्यार्थी आरामदायक स्थिति में बैठकर, कमर सीधी कर आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में असहज महसूस हो रहा हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
- अपने शरीर के अंदर आती तथा बाहर जाती प्रत्येक साँस पर ध्यान दें।
- अपने पेट पर एक हाथ रखें।
- श्वास के साथ-साथ इस बात पर ध्यान दें कि साँस लेते और छोड़ते समय पेट कब अंदर की तरफ़ जाता है और कब बाहर की ओर फूलता है।

यह 1-2 मिनट तक करवाएँ।

प्रश्न:

- क्या आपने अपने पेट को फूलते और अंदर जाते हुए महसूस किया?
- आपका पेट कब अंदर गया और कब बाहर की ओर फूला?

चरण - 2

- गतिविधि को दोबारा 1-2 मिनट के लिए करवाएँ।
- एक बार फिर विद्यार्थियों को ध्यान से जाँचने के लिए बोलें कि साँस लेने तथा छोड़ने और पेट के अंदर और बाहर होने में क्या संबंध है?

C | गतिविधि में चर्चा के लिए प्रस्तावित बिंदु: 15 मिनट

- सामान्यतः साँस लेते समय क्या आपका ध्यान पेट के अंदर-बाहर होने पर जाता है?
- पेट और श्वास पर ध्यान देने से क्या साँस की गति में बदलाव आता है?
- साँस गहरी व ध्यानपूर्वक लेने का अनुभव कैसा था?

अंत : साइलेंट चेक आउट (Silent Check Out): 1- 2 मिनट

C-2 स्टूडेंट स्पेशल
Student Special

Z4D8V3

स्टूडेंट स्पेशल, EMC का वह हिस्सा है जिसमें विद्यार्थी विभिन्न मज़ेदार गतिविधियों का स्वयं संचालन करके आपसी संवाद एवं अभिव्यक्ति के ज़रिए अपना आत्मविश्वास बढ़ाते हैं। स्टूडेंट स्पेशल गतिविधियों में विद्यार्थी सीमित समय में विचारों का विभिन्न तरीकों से आदान प्रदान करना, रचनात्मक फ़ीडबैक प्राप्त करना, और संचालन करते-करते योजना बनाकर काम करना सीखते हैं।

स्टूडेंट स्पेशल

- Just A Minute (JAM)
- जल्दी डिबेट

अभ्यास

- Eye Contact
- हाथ और चेहरे के हावभाव
- समय का उपयोग
- आवाज़ का उतार चढ़ाव

रचनात्मक फ़ीडबैक

क्षमताएँ

- प्रभावी संचार
- आत्मविश्वास
- योजना बनाकर काम करना

गतिविधियों का परिचय

Just A Minute (JAM)	• किसी भी विद्यार्थी को स्पीकर चुनकर स्टेज पर बुलाया जाएगा। • स्पीकर से एक प्रश्न पूछा जाएगा जिसका वह पूरी कक्षा के सामने 1 मिनट में उत्तर देगा।
जल्दी डिबेट	• किसी एक विषय के पक्ष में बोलने के लिए 3 और विपक्ष में बोलने के लिए 3 विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाएगा। • दोनों टीम के सदस्य एक के बाद एक अपने तर्क रखेंगे।

स्टूडेंट स्पेशल क्लास की संरचना

समय सारणी	• साप्ताहिक : प्रत्येक शनिवार का EMC पीरियड • अतिरिक्त : कोई भी खाली पीरियड
संचालन टीम	• 5 विद्यार्थियों की टीम JAM और जल्दी डिबेट में से कोई एक गतिविधि चुनेगी और उस गतिविधि का संचालन करेगी। • क्लास के अंत में अगली क्लास की संचालन टीम का चयन किया जाएगा। • हर बार नए विद्यार्थियों को मौका मिलेगा।
फ़ैसिलिटेटर की भूमिका	• पहली बार संचालन टीम का चयन करने और गतिविधि शुरू करने के लिए मदद करेंगे। • गतिविधि के संचालन में कोई कठिनाई होती है तो सहायता के लिए उपलब्ध रहेंगे।

गतिविधि 1 | Just A Minute (JAM) | भूमिकाएँ

एंकर

- माइंडफुलनेस के साथ क्लास शुरू करेगा।
- संचालन टीम के सदस्यों का परिचय देगा।
- सेशन प्लान के मुताबिक संचालन टीम के सदस्यों को स्टेज पर आमंत्रित करेगा।

एंकर और मास्टर ऑब्ज़र्वर: क्लास के अंत में अगली क्लास की संचालन टीम की रचना करेंगे।

जोक मास्टर

क्लास को एक मज़ेदार चुटकुला सुनाएगा। (1 मिनट में)

JAM मास्टर

- गतिविधि का संचालन करेगा।
- उन विद्यार्थियों को बोलने का मौका देगा जिन्होंने पहले नहीं बोला है।
- स्पीकर से पूछने के लिए प्रश्नों के साथ तैयार रहेगा।

उदाहरण के लिए प्रश्न यूनिट के अंत में दिए गए हैं।

मास्टर ऑब्ज़र्वर

- एंकर और JAM मास्टर को रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन (अवलोकन) नोट करेगा।
- हर स्पीकर के आसपास बैठे 3 विद्यार्थी स्पीकर को ऑब्ज़र्व करेंगे और उसे रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन नोट करेंगे।

ऑब्ज़रवेशन के मुद्दे

- क्या वे क्लास के साथ Eye Contact रखते हैं?
- क्या वे हाथ और चेहरे से अपने हावभाव व्यक्त करते हैं?
- क्या वे आवाज़ के उतार-चढ़ाव से अपनी बात को प्रभावी बनाते हैं?

फ़ीडबैक देते हुए क्या साझा करें?

- दो चीज़ें जो उन्होंने अच्छी कीं।
- एक चीज़ जो वे अगली बार बेहतर सकते हैं।

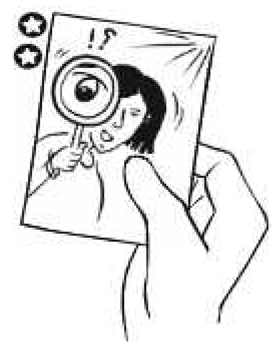

एंकर और मास्टर ऑब्ज़र्वर: क्लास के अंत में अगली क्लास की संचालन टीम की रचना करेंगे।

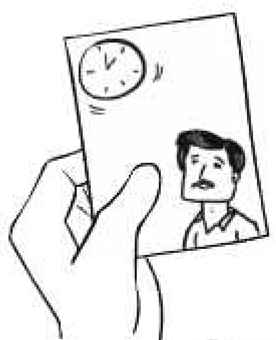

टाइमकीपर

- वहाँ बैठेगा जहाँ से स्पीकर उसे देख पाए।
- बचा हुआ समय दर्शाने के लिए हरा, पीला और लाल कार्ड रखेगा।
- 30 सेकंड बचे - **हरा** कार्ड, 15 सेकंड बचे - **पीला** कार्ड, समय समाप्त - **लाल** कार्ड

गतिविधि के बाद : टाइम रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा -

- क्या कक्षा समय अनुसार चली?
- किन स्पीकर्स ने 30 सेकंड से कम या 1 मिनट से अधिक समय लिया?

5-7 मिनट

(एंकर करे:)

- माइंडफुलनेस के साथ क्लास शुरू करे।
- संचालन टीम के सदस्यों का परिचय दे।
- टाइमकीपर को कार्ड के साथ अपना स्थान लेने के लिए कहे।

⇄ जोक मास्टर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

(जोक मास्टर करे:)

- क्लास को एक मज़ेदार चुटकुला सुनाए। (1 मिनट)

⇄ मास्टर ऑब्ज़र्वर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

(मास्टर ऑब्ज़र्वर करे:)

- सूचना दे: हर स्पीकर के आसपास बैठे 3 विद्यार्थी स्पीकर को ऑब्ज़र्व करेंगे और उसे रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन नोट करेंगे।
- ऑब्ज़रवेशन के मुद्दे साझा करे: क्या ऑब्ज़र्व करना है और फ़ीडबैक कैसे देना है।

⇄ JAM मास्टर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

12-15 मिनट

(JAM मास्टर करे:)

- JAM मास्टर किसी भी एक विद्यार्थी को स्पीकर चुने, और उसे स्टेज पर आमंत्रित करे।
  - JAM मास्टर स्पीकर को एक मज़ेदार प्रश्न पूछे।
  - स्पीकर उस प्रश्न का उत्तर 30 सेकंड से 1 मिनट में क्लास को बताए।
  - पूरी कक्षा ताली बजाकर स्पीकर का उत्साह बढ़ाएगी।
- अलग-अलग स्पीकर्स के साथ इस प्रक्रिया को 10-15 मिनट तक दोहराए।

(नोट : JAM मास्टर उन विद्यार्थियों को आमंत्रण दे जिन्होंने पहले नहीं बोला है।)

⇄ मास्टर ऑब्ज़र्वर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

7-9 मिनट

(मास्टर ऑब्ज़र्वर करे:)

- एंकर और JAM मास्टर के लिए फ़ीडबैक साझा करे। (1-2 मिनट)
- हर स्पीकर के 3 ऑब्ज़र्वर को स्पीकर के साथ बैठकर फ़ीडबैक देने के लिए कहे। (2-3 मिनट)
- बचे हुए समय के मुताबिक 2 से 5 ऑब्ज़र्वर कक्षा के सामने फ़ीडबैक साझा करें। (3-4 मिनट)

⇄ टाइमकीपर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

(टाइमकीपर करे:)

- टाइम रिपोर्ट प्रस्तुत करे। **(1-2 मिनट)**
  - क्या कक्षा समय अनुसार चली?
  - किन स्पीकर्स ने 30 सेकंड से कम या 1 मिनट से अधिक समय लिया?

1-2 मिनट

(एंकर + मास्टर ऑब्ज़र्वर करें:)

- तालियों के साथ क्लास समाप्त करें।
- अगली क्लास के लिए संचालन टीम चुनें।

एंकर

- माइंडफुलनेस के साथ क्लास शुरू करेगा।
- संचालन टीम के सदस्यों का परिचय देगा।
- सेशन प्लान के मुताबिक संचालन टीम के सदस्यों को स्टेज पर आमंत्रित करेगा।

एंकर और मास्टर ऑब्ज़र्वरः क्लास के अंत में अगली क्लास की संचालन टीम का चयन करेंगे।

जोक मास्टर

क्लास को एक मज़ेदार चुटकुला सुनाएगा। (1 मिनट में)

डिबेट मास्टर

- गतिविधि का संचालन करेगा।
- उन विद्यार्थियों को बोलने का मौका देगा जिन्होंने पहले नहीं बोला है।
- डिबेट के विषय पहले से तैयार करके रखेगा।

उदाहरण के लिए विषय यूनिट के अंत में दिए गए हैं।

मास्टर ऑब्ज़र्वर

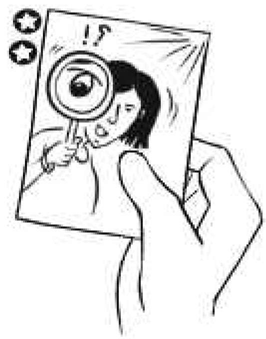

- एंकर और डिबेट मास्टर को रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन (अवलोकन) नोट करेगा।
- हर स्पीकर के आसपास बैठे 3 विद्यार्थी स्पीकर को ऑब्ज़र्व करेंगे और उसे रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन नोट करेंगे।

क्या ऑब्ज़र्व करें?

- क्या वे क्लास के साथ Eye Contact रख पाते हैं?
- क्या वे हाथ और चेहरे से अपने हावभाव व्यक्त कर पाते हैं?
- क्या वे आवाज़ के उतार-चढ़ाव से अपनी बात को प्रभावी बना पाते हैं?

फ़ीडबैक देते हुए क्या साझा करें ?

- दो चीज़ें जो उन्होंने अच्छी कीं।
- एक चीज़ जो वे अगली बार बेहतर कर सकते हैं।

एंकर और मास्टर ऑब्ज़र्वरः क्लास के अंत में अगली क्लास की संचालन टीम का चयन करेंगे।

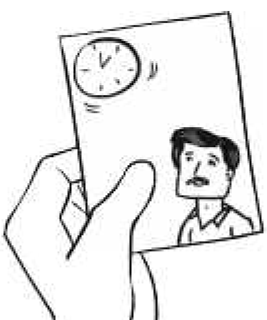

टाइमकीपर

- वहाँ बैठेगा जहाँ से स्पीकर उसे देख पाए।
- बचा हुआ समय दर्शाने के लिए हरा, पीला और लाल कार्ड रखेगा।
- 30 सेकंड बचे - **हरा** कार्ड, 15 सेकंड बचे - **पीला** कार्ड, समय समाप्त - **लाल** कार्ड

गतिविधि के बादः टाइम रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा -

- क्या कक्षा समय अनुसार चली?
- किन स्पीकर्स ने 30 सेकंड से कम या 1 मिनट से अधिक समय लिया?

5-7 मिनट

एंकर करे:

- माइंडफुलनेस के साथ क्लास शुरू करे।
- संचालन टीम के सदस्यों का परिचय दे।
- टाइमकीपर को कार्ड के साथ अपना स्थान लेने के लिए कहे।

⇄ जोक मास्टर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

जोक मास्टर करे:

- क्लास को एक मज़ेदार चुटकुला सुनाए। (1 मिनट)

⇄ मास्टर ऑब्ज़र्वर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

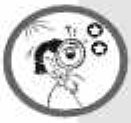

मास्टर ऑब्ज़र्वर करे:

- सूचना दे: हर स्पीकर के आसपास बैठे 3 विद्यार्थी स्पीकर को ऑब्ज़र्व करेंगे और उसे रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन नोट करेंगे।
- ऑब्ज़रवेशन के मुद्दे साझा करे: क्या ऑब्ज़र्व करना है और फ़ीडबैक कैसे देना है।

⇄ डिबेट मास्टर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

12-15 मिनट

डिबेट मास्टर करे:

- डिबेट के विषय की घोषणा करे।
- 3 विद्यार्थियों को पक्ष में तथा 3 विद्यार्थियों को विपक्ष में बोलने के लिए आमंत्रित करे।

नोट : डिबेट मास्टर उन विद्यार्थियों को आमंत्रण दें जिन्होंने पहले नहीं बोला है।

  - दोनों टीम से, एक विद्यार्थी पक्ष से और एक विपक्ष से, बारी-बारी से अपना पक्ष 1 मिनट में रखे।
  - सभी स्पीकर के बोल लेने के बाद दोनों टीम से एक-एक विद्यार्थी अपने पक्ष के मुख्य बिंदु 1 मिनट में प्रस्तुत करे।
- दर्शकों का मत लेकर जानें कि किस टीम ने अपने तर्क को बेहतर तरीके से प्रस्तुत किया।
- क्लास के विद्यार्थी दोनों टीम के प्रयासों की तालियों से सराहना करें।

⇄ मास्टर ऑब्ज़र्वर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

7-9 मिनट

मास्टर ऑब्ज़र्वर करे:

- एंकर और डिबेट मास्टर के लिए फ़ीडबैक साझा करे। (1-2 मिनट)
- हर स्पीकर के 3 ऑब्ज़र्वर को स्पीकर के साथ बैठकर फ़ीडबैक देने के लिए कहे। (2-3 मिनट)
- बचे हुए समय के मुताबिक 2 से 5 ऑब्ज़र्वर कक्षा के सामने फ़ीडबैक साझा करें। (3-4 मिनट)

⇄ टाइमकीपर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

टाइमकीपर करे:

- टाइम रिपोर्ट प्रस्तुत करे - **(1-2 मिनट)**
  - क्या कक्षा समय अनुसार चली?
  - किन स्पीकर्स ने 30 सेकंड से कम या 1 मिनट से अधिक समय लिया?

1-2 मिनट

एंकर + मास्टर ऑब्ज़र्वर करें:

- तालियों के साथ क्लास समाप्त करें।
- अगली क्लास के लिए संचालन टीम चुनें।

उदाहरण के लिए

Just A Minute (JAM)

स्पीकर के लिए प्रश्न

- आपका सबसे मनपसंद खेल कौन-सा है और क्यों?
- आप अपने जीवन में क्या करने का सपना देखते हैं?
- यदि आप 1 दिन के लिए विद्यालय के प्रिंसिपल बन जाएँ तो आप विद्यालय में क्या-क्या बदलाव लाएँगे?
- कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में बताइए जो आपको उदास कर देती हैं?
- सड़कों पर वाहनों की संख्या कम करने के लिए क्या किया जा सकता है?
- अगर मैं एक जानवर होता तो कौन-सा जानवर होता? क्यों?
- आपको कौन-सा सामाजिक रिवाज पसंद है? क्यों?
- अगर अमर रहना मुमकिन होता, तो क्या आप अमर रहना पसंद करते? क्यों?
- आप रात में देखे हुए एक सपने की कहानी बताइए।
- मान लीजिए कि आप किसी कमरे का दरवाज़ा हैं। अपने जीवन के एक दिन के बारे में बताइए।
- अपने स्कूल-बैग में से किसी भी एक चीज़ के promotion का विज्ञापन बनाइए।
- ऐसी 5 चीज़ें बताइए जो आप ज़िंदगी में कम से कम एक बार करना चाहते हैं।
- अगर आपको एक टापू पर अकेले रहना पड़ता, तो आप कौन-सी एक चीज़ साथ ले जाते?

जल्दी डिबेट

डिबेट के विषय

- मतदान की उम्र 16 साल होनी चाहिए।
- होड़/स्पर्धा (Competition) से पढाई बेहतर होती है।
- विद्यार्थियों के लिए सेलेब्रिटी अच्छे रोल मॉडेल हो सकते हैं।
- लड़कों और लड़कियों के लिए अलग स्कूल होने चाहिए।
- क्या ज़्यादा ज़रूरी है - सफलता या प्रसन्नता?

ये कुछ उदाहरण हैं। ज़रूरत के हिसाब से आप इनसे अलग कुछ और विषय भी ले सकते हैं।

C-3 करियर एक्सप्लोरेशन
Career Exploration

Q7P9H4

विद्यार्थियों की क्षमताओं के बारे में बनी समझ और विभिन्न करियर्स (careers) में इन क्षमताओं के महत्त्व को जोड़ती हुई एक कड़ी है करियर एक्सप्लोरेशन। यह विद्यार्थियों के लिए मौका है अपनी रुचि, क्षमता, जिज्ञासा या महत्त्वाकांक्षा के आधार पर नौकरी, बिज़नेस या कोई और काम करने वाले व्यक्तियों का इंटरव्यू करके, उनके काम करने की जीवन शैली को गहराई से जानने का। करियर के अलग-अलग अवसरों की जानकारी पाकर विद्यार्थी पढ़ाई के बाद करियर चुनने के लिए ज़्यादा सक्षम बनेंगे।

इंटरव्यू से पहले*	
करियर्स का माइंड-मैप	2 - 3 पीरियड
किन लोगों का करेंगे इंटरव्यू	1 - 2 पीरियड
इंटरव्यू के प्रश्न	2 पीरियड
इंटरव्यू का अभ्यास	1 - 2 पीरियड
इंटरव्यू के दौरान*	
ध्यान रखने योग्य बातें	1 पीरियड
विभिन्न करियर्स में कार्यरत लोगों का इंटरव्यू	हर महीने
इंटरव्यू के बाद	
अनुभव साझा करना	हर महीने के आखिरी सोमवार/मंगलवार का EMC पीरियड

* विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ करियर एक्सप्लोरेशन की शुरूआत:

विद्यार्थियों से निम्न प्रश्न पर चर्चा करते हुए **करियर एक्सप्लोरेशन** की शुरूआत करें-

12वीं कक्षा के बाद आपने अपने करियर के क्या-क्या विकल्प सोचे हैं? ये आप कैसे सोच पाए?

विद्यार्थियों के उत्तरों की सराहना करते हुए उन्हें बताएँ कि करियर एक्सप्लोरेशन में हम विभिन्न नौकरियों और उद्यमों में कार्यरत लोगों से मिलेंगे और करियर के आयामों को समझेंगे। इस प्रक्रिया की शुरूआत हम कुछ गतिविधियों से करेंगे जो हमें अलग-अलग करियर्स के बारे में सोचने में मदद करेंगी और इंटरव्यू लेने के लिए हमें तैयार करेंगी।

इंटरव्यू से पहले | करियर्स का माइंड-मैप (2-3 पीरियड)

परिचय

करियर एक्सप्लोरेशन की शुरूआत करने के लिए हमें अलग-अलग करियर्स और उनके आपसी संबंध समझने होंगे। अपनी और अपने साथियों की इस समझ को अपने समक्ष एक साथ लाने के लिए हम माइंड-मैप की मदद लेंगे। माइंड-मैप का एक उदाहरण बगल के चित्र में दिया गया है। अपनी समझ बढ़ाने के लिए हम अपने परिवार और घर के आसपास अलग-अलग करियर्स से जुड़े लोगों की मदद भी ले सकते हैं।

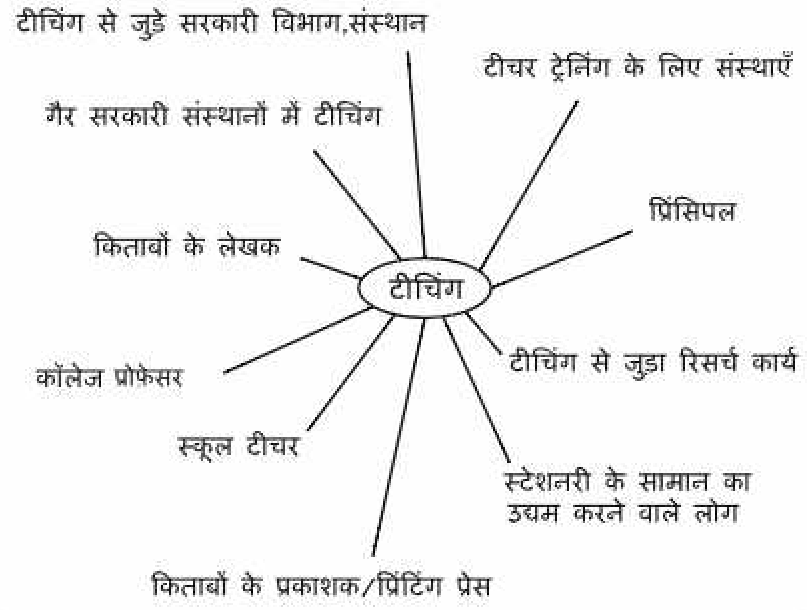

फ़ैसिलिटेटर नोट

विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पूरी कक्षा के साथ 2 अलग-अलग करियर्स के बारे में चर्चा करके दोनों के माइंड-मैप ब्लैक बोर्ड पर बनाएँ।

कैसे करें

फ़ैसिलिटेटर करें

Round 1:

- बोर्ड पर 2 कॉलम बनाएँ - नौकरियाँ और उद्यम (बिज़निस)
- विद्यार्थियों से पूछें कि वे करियर एक्सप्लोरेशन में कौन-सी नौकरियों और उद्यमों के बारे में जानना चाहेंगे? यह ऐसे करियर्स हो सकते हैं जो वे खुद करने की इच्छा रखते हों या जिनके बारे में वे जानना चाहते हों।
- विद्यार्थियों के उत्तर बोर्ड पर लिखकर 10-10 नौकरियों और उद्यमों की सूची बनाएँ।

Round 2:

- बोर्ड पर बनी सूची में से एक नौकरी और एक उद्यम चुनें।
- दोनों करियर्स के बारे में चर्चा करके माइंड-मैप ब्लैक बोर्ड पर बनाएँ।
- माइंड मैप बनाने के लिए निम्न प्रश्नों के बारे में सोचें:
  - इस व्यक्ति के कार्य स्थल में कर्मचारी कौन-से अलग-अलग प्रकार के काम करते हैं ?
  - इस करियर से संबंधित और काम कौन-से होते हैं? (जैसे - कौन-से उत्पाद या सेवा इस करियर के लिए उपयोगी या ज़रूरी हैं? इस व्यक्ति के ग्राहक कौन-कौन हो सकते हैं?)
  - याद रहे: हो सकता है कि किसी करियर के बारे में सोचते समय नौकरी और उद्यम; दोनों की संभावनाएँ दिखें। ऐसे में उन सभी संभावनाओं को अपने माइंड-मैप में लिखें।

कैसे करें

विद्यार्थी करें

- विद्यार्थी 5-6 के समूह बनाएँ।
- हर समूह बोर्ड पर बनी सूची में से एक नौकरी और एक उद्यम चुने।
- दोनों करियर्स के बारे में चर्चा करके माइंड-मैप एक-एक कागज़ पर बनाएँ। (10 मिनट)
- हर समूह अपने माइंड-मैप बगल के समूह को देगा।
- यह प्रक्रिया तब तक जारी रहेगी, जब तक हर समूह अन्य सभी समूहों के माइंड-मैप देख न ले।
- सभी माइंड-मैप क्लास की दीवारों पर लगाएँ जिससे विद्यार्थी उन्हें पढ़ सकें और उनमें अपने विचार जोड़ सकें।
- सभी माइंड-मैप देखने के बाद विद्यार्थी अपनी-अपनी पसंद के ऐसे करियर्स की सूची बनाएँ जिनको वे गहराई से समझना चाहते हों। इनमें 10 नौकरियाँ और 10 उद्यम होने चाहिए।

इंटरव्यू से पहले | किन लोगों का करेंगे इंटरव्यू? (1-2 पीरियड)

परिचय

पिछली गतिविधि में हमने विभिन्न करियर्स के बारे में सोचा और अलग-अलग करियर्स के आपसी संबंधों को माइंड-मैप के ज़रिए समझा। इसके बाद हमने ऐसे करियर्स की सूची बनाई जिनके बारे में हम गहराई से जानना चाहते हैं। अब हम सोचेंगे कि उन करियर्स से जुड़े लोगों से कहाँ मिला जा सकता है।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- विद्यार्थियों को अलग-अलग करियर्स, संस्थानों और लोगों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करें।
- जिन लोगों से मिलना होगा, ज़रूरी नहीं कि विद्यार्थी उन्हें पहले से जानते हों।
- यदि विद्यार्थियों को कम लोग मिलते हैं तो उन पर दवाब न डाला जाए बल्कि उन्हें तब भी प्रोत्साहित करें।

कैसे करें

- सभी विद्यार्थी अपनी पसंद की 10 नौकरियों और 10 उद्यमों की सूची बना लें,तब विद्यार्थी फिर से 5-6 के समूह बनाएँ।
- समूह में चर्चा करके विद्यार्थी सोचें कि अपनी सूची के हर करियर से जुड़े व्यक्तियों से वे कैसे संपर्क करेंगे-
  - क्या इस करियर से जुड़े किसी व्यक्ति को आप जानते हैं?
  - क्या इस करियर से जुड़े किसी व्यक्ति को, जिसे शायद आप जानते न हों, अपने घर के आसपास ढूँढ सकते हैं? उदाहरण- नर्स, फ़िटनेस ट्रेनर आदि।
- इस प्रक्रिया के बाद विद्यार्थी ऐसे 10 व्यक्तियों की सूची बनाएँगे जिनका वे इंटरव्यू करना चाहते हों।
  - इस सूची में 5 ऐसे व्यक्ति होने चाहिए जो कोई नौकरी करते हों, और 5 ऐसे जो उद्यम करते हों।
  - यह सूची विद्यार्थी अपनी रुचि और इंटरव्यू लेने में सुगमता के आधार पर बनाएँ।

नौकरी	व्यक्ति का नाम एवं मिलने का स्थान	उद्यम	व्यक्ति का नाम एवं मिलने का स्थान

इंटरव्यू से पहले | इंटरव्यू के प्रश्न (1 पीरियड)

परिचय

अलग-अलग करियर्स में काम कर रहे लोगों की सूची बनाने के बाद समय आता है उनके साथ बातचीत करने का। इस बातचीत को सार्थक बनाने के लिए हमें पूरी तैयारी के साथ उन लोगों के पास जाना होगा। उनके करियर के वास्तविक अनुभव के बारे में जानने के लिए हम उनसे कौन-से प्रश्न पूछेंगे? आइए सोचते हैं।

फ़ैसिलिटेटर नोट

विद्यार्थियों को ऐसे प्रश्न सोचने के लिए प्रेरित करें जिससे इंटरव्यू देने वाले व्यक्ति अपने करियर के लाभ व कमियाँ - दोनों बता पाएँ।

कैसे करें

फ़ैसिलिटेटर करें

Round 1:

- विद्यार्थियों को प्रश्नों की सूची दें जो वे इंटरव्यू में पूछ सकते हैं। इस सूची को पढ़ने के लिए उन्हें 5 मिनट का समय दें। (यह सूची गतिविधि के अंत में दी गई है।)
- विद्यार्थियों द्वारा चुने गए किसी एक करियर को बोर्ड पर लिखें।
- विद्यार्थियों के साथ चर्चा करें कि इस करियर के बारे में और जानने के लिए इस सूची में और कौन-से प्रश्न जोड़ सकते हैं?
- विद्यार्थियों से सूची के हर विभाग (परिचय, शुरुआत, संघर्ष आदि) के लिए कुछ अतिरिक्त प्रश्नों के सुझाव लें।

विद्यार्थी करें

Round 2:

- विद्यार्थी अपनी सूची के व्यक्तियों से पूछे जाने वाले और प्रश्न सोचें।
- सोचे हुए प्रश्न जोड़कर हर विद्यार्थी इंटरव्यू के लिए अपने प्रश्नों की सूची बनाएँ।
- जोड़े हुए प्रश्न बगल में बैठे विद्यार्थी के साथ साझा करें।

प्रश्नों की सूची

परिचय

- आप कौन-सी कक्षा तक स्कूल में पढ़े? कौन-से स्कूल में?
- स्कूल के दौरान आपकी किन विषयों में अधिक रुचि थी? पढ़ाई के साथ-साथ आपको किन गतिविधियों में भाग लेना अच्छा लगता था?
- मेरी उम्र में, क्या अपने भविष्य के लिए आपके कुछ सपने थे?
- ______________________________
- ______________________________

शुरूआत

- आपने सबसे पहले कौन-सा काम शुरू किया? उस समय आपके परिवार की आर्थिक और सामाजिक स्थिति कैसी थी? (परिवार, पैसा, संपत्ति, दोस्त आदि)
- आपको अपने पहले कार्य की कौन-सी बातें पसंद हैं और कौन-सी नहीं?
- ______________________________
- ______________________________

संघर्ष

- शुरू से लेकर आज तक की अपनी जीवन-यात्रा के विषय में हमें कुछ और बताएँ।
- आपके जीवन की सबसे बड़ी चुनौतियाँ और समस्याएँ क्या थीं जिनका आपने सामना किया? इन सबके बावजूद किस चीज़ के कारण आप आगे बढ़ते रहे?
- आपके अपने काम में कौन-सी बातें तनाव देती है?
- ______________________________
- ______________________________

सफलता

- आपकी जीवन-यात्रा की कुछ बड़ी और छोटी सफलताएँ क्या हैं?
- आपके किन गुणों एवं क्षमताओं ने सफलता को हासिल करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई?
- अपने काम में आज आपको कौन-सी चीज़ सबसे ज़्यादा संतोष देती है?
- ______________________________
- ______________________________

सीख

- जब आप पीछे मुड़कर अपने जीवन में लिए हुए निर्णयों को देखते हैं, तब आप उनमें क्या बदलाव करना चाहेंगे?
- अपने काम को आप किस तरह आगे ले जाना चाहते हैं?
- आप अपने काम के शुरूआती दौर और आज की चुनौतियों में क्या बदलाव देखते हैं?
- ______________________________

इंटरव्यू से पहले | इंटरव्यू का अभ्यास (1-2 पीरियड)

परिचय

हमने इंटरव्यू लेते समय पूछे जाने वाले प्रश्नों की सूची बना ली है। लेकिन क्या हम ये सारे प्रश्न सीधे पूछने लगेंगे? हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि सामने वाले व्यक्ति इंटरव्यू के उद्देश्य को अच्छे से समझें, जिससे वे सहजता से हमारे प्रश्नों के उत्तर दे पाएँ। आइए, थोड़ी प्रैक्टिस कर लेते हैं उन्हें बताने की - कि हम उनका ही इंटरव्यू क्यों ले रहे हैं, और उनसे हमें क्या जानना है।

फ़ैसिलिटेटर नोट

सुनिश्चित करें कि प्रत्येक जोड़ी के दोनों विद्यार्थियों को अभ्यास करने का बराबर समय मिले।

कैसे करें

- विद्यार्थी 2-2 की जोड़ी में एक-दूसरे को अपना और करियर एक्सप्लोरेशन का परिचय देंगे। (5 मिनट)
    - परिचय में क्या शामिल होना चाहिए?
        - विद्यार्थी का परिचय
        - करियर एक्सप्लोरेशन का परिचय
        - इस व्यक्ति के साथ क्यों बात करना चाहते हैं और उनका कितना समय लेंगे
    - परिचय देते समय क्या ध्यान में रखेंगे?
        - Eye Contact
        - सम्मानपूर्ण व्यवहार
- उदाहरण के लिए निम्न परिचय विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँ:

> "हमारे स्कूल में एक नया पाठ्यक्रम आया है, जिसका नाम है EMC (एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट करिकुलम)। इसके माध्यम से हम अपने करियर के लिए विभिन्न अवसरों के बारे में जानकारी हासिल करेंगे और अपना आत्मविश्वास बढ़ाना, नई चीज़ें सीखना, समस्याएँ सुलझाना, अपनी असफलताओं से सीख लेकर आगे बढ़ना और इसी प्रकार के अन्य गुणों और क्षमताओं को सीखेंगे।
>
> इसका एक हिस्सा है करियर एक्सप्लोरेशन, जिसमें हम ऐसे अनुभवी लोगों से मिलेंगे जिनकी जीवन-यात्रा के बारे में जानने की हमें उत्सुकता है। आपके जैसे 10 लोगों का इंटरव्यू लेकर मुझे आपके कार्य-जीवन (Work-life) को समझना है और आपके संघर्ष, सफलताओं और सीख के बारे में आपके विचार जानने हैं।
>
> यदि आप मुझे आधे घंटे का समय इंटरव्यू के लिए दे सकें तो मुझे बहुत-कुछ सीखने का अवसर मिलेगा। क्या आप मेरी सहायता करेंगे?"

- परिचय देने वाले विद्यार्थी को जोड़े का दूसरा विद्यार्थी रचनात्मक फ़ीडबैक देगा। (2-3 मिनट)
- दोनों विद्यार्थी आपस में भूमिकाएँ बदलेंगे और यह प्रक्रिया दोहराएँगे।
- सभी जोड़े जब इस प्रक्रिया को पूरी कर लेंगे, तब कुछ जोड़े कक्षा के सामने आकर रोल-प्ले कर सकते हैं और बाकी विद्यार्थी उन्हें रचनात्मक फ़ीडबैक दे सकते हैं।

इंटरव्यू के दौरान | ध्यान रखने योग्य बातें (1 पीरियड)

परिचय

अब इंटरव्यू लेने की हमारी पूरी तैयारी हो चुकी है। इंटरव्यू के लिए हम अलग-अलग लोगों से मिलेंगे। ऐसे में अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना भी बहुत ज़रूरी है। आइए, कुछ ध्यान रखने योग्य बातों को जानें जिससे हम अपने अनुभव को सफल बना सकें।

फ़ैसिलिटेटर नोट

ध्यान देने योग्य बातों की चर्चा करते समय विद्यार्थियों के मन में आ रहे सभी प्रश्नों को सुनें।

कैसे करें

परिचय के रोल-प्ले के बाद शिक्षक विद्यार्थियों को करियर एक्सप्लोरेशन के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें बताएँ:

- इंटरव्यू की तैयारी:
    - जोड़ी बनाकर इंटरव्यू के लिए जाएँ।
    - इंटरव्यू ऑफिस/संस्थान या अन्य सार्वजनिक स्थान में ही करें।
    - इंटरव्यू का स्थल घर या स्कूल से ज़्यादा दूर नहीं होना चाहिए।
    - शाम को 6 बजे के बाद इंटरव्यू न करें।
- इंटरव्यू के दौरान:
    - इंटरव्यू के लिए जाते समय स्कूल का ID साथ लेकर जाएँ।
    - स्कूल यूनिफार्म में इंटरव्यू करने के लिए जाएँ।
    - बातचीत करते हुए सावधानी बरतें।
- इंटरव्यू के बाद:
    - अपना अनुभव शिक्षक को बताएँ।

साझा करें

अब हम करियर एक्सप्लोरेशन करने के लिए तैयार हैं। सभी विद्यार्थियों ने तय कर लिया है कि वे किन लोगों का इंटरव्यू लेंगे, उनको अपना परिचय कैसे देंगे और इंटरव्यू लेने के समय किन बातों का ध्यान रखेंगे। अब हर महीने, जिनका इंटरव्यू लेना है, उनकी सुविधा को ध्यान में रखकर एक-एक इंटरव्यू करेंगे। महीने के आखिरी सोमवार या मंगलवार की EMC क्लास में अपने अनुभव साझा करेंगे।

- अब विद्यार्थी हर महीने विभिन्न करियर्स से जुडे लोगों के इंटरव्यू करेंगे।
- हर महीने के आखिरी सोमवार/मंगलवार की EMC क्लास में विद्यार्थी इंटरव्यू के अनुभव कक्षा के साथ साझा करेंगे।

इंटरव्यू के बाद | अनुभव साझा करना (हर महीने)

परिचय

करियर एक्सप्लोरेशन के लिए विद्यार्थियों ने अलग-अलग लोगों का इंटरव्यू किया और उनके अनुभवों को सुनकर अपनी समझ बढ़ाई। अब विद्यार्थी अपने अनुभवों पर चिंतन करके जानेंगे कि उन्हें अपने करियर की दिशा से संबंधित क्या-क्या जानकारी मिली।

फ़ैसिलिटेटर नोट

ज़्यादा से ज़्यादा विद्यार्थियों को पूरी कक्षा में अपने अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें

- हर महीने के आखिरी सोमवार और मंगलवार को EMC पीरियड में विद्यार्थी करियर एक्सप्लोरेशन के अनुभवों पर चिंतन करेंगे और अपने अनुभव क्लास से साथ साझा करेंगे।
- नीचे दिए गए प्रश्नों के अलावा अनुभव साझा करने के और तरीके भी फैसिलिटेटर आज़मा सकते हैं - जैसे, इंटरव्यू को रोल-प्ले द्वारा कक्षा में पुनर्निर्मित (Recreate) करना।

- विद्यार्थी 5-6 के समूहों में निम्न बिंदुओं पर चर्चा कर सकते हैं:
    - इस महीने के इंटरव्यू का एक मज़ेदार अनुभव।
    - इस महीने के इंटरव्यू का सबसे बेहतरीन जवाब।
    - जिनका इंटरव्यू लिया, उनके करियर में उपयोगी हों, ऐसी मेरी कौन-सी क्षमताएँ हैं?
    - उनके जैसा काम करने के लिए मुझे कौन-सी क्षमताओं पर काम करना पड़ेगा?

- हर समूह से एक विद्यार्थी क्लास के साथ निम्न बिंदुओं पर अपने समूह के अनुभव साझा करेगा:
    - उनके समूह में विद्यार्थियों ने लिए हुए इंटरव्यू की संख्या।
    - किसी एक विद्यार्थी द्वारा बताया हुआ मज़ेदार अनुभव।
    - किसी एक विद्यार्थी द्वारा बताई हुई नई सीख।
    - किसी एक विद्यार्थी को मिला हुआ प्रेरणादायक जवाब।

C-4 उद्यमियों के साथ संवाद
Live Entrepreneur Interactions

T5A6D7

इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों ने अलग-अलग एन्त्रप्रेन्योर (Entrepreneur) की कहानियों से प्रेरणा ली। "उद्यमियों के साथ संवाद" खंड में विद्यार्थियों को अपनी कक्षा में विभिन्न उद्यमियों से रूबरू होने का और उनके अनुभवों के बारे में सवाल पूछने का मौका मिलेगा। उनके साथ सीधी बातचीत करके विद्यार्थी उनकी कहानियों से प्रेरणा लेंगे। वे बड़ा सोचना, अवसरों को पहचानना, निर्णय लेना और गिरकर सँभलना आदि एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के वास्तविक उदाहरण जानेंगे। साथ ही साथ विद्यार्थी उद्यमियों की कहानियों के बारे में अच्छे से सोचकर, अलग-अलग सवाल पूछने का अभ्यास करेंगे। इससे उनके भीतर लोगों से खुलकर सवाल पूछने का डर और हिचकिचाहट कम होगी।

उद्यमियों के साथ संवाद

एन्त्रप्रेन्योरशिप के अलग-अलग क्षेत्रों और मौकों की जानकारी

उद्यमी की यात्रा की समझ - शुरूआत, संघर्ष व सफलता

सीधी बात के माध्यम से जिज्ञासाओं को शांत करने का मौका

सेशन प्लान

1. भूमिका

3-4 मिनट*

शिक्षक

- उद्यमी का परिचय (1 मिनट)
- माइंडफुलनेस (2-3 मिनट)

2. यात्रा

10 मिनट*

उद्यमी

अपनी प्रोफ़ेशनल यात्रा को साझा करेंगे।

यात्रा के पहलू:

शुरूआत : प्रेरणा और पहले कदम

संघर्ष : समस्याएँ और उनके हल

सफलता : उनके द्वारा प्राप्त सफलताएँ

क्या नहीं साझा करना है?

- अपने उत्पाद/सेवा का विवरण या विज्ञापन
- धर्म, जाति, लिंग, अध्यात्म व राजनीति के बारे में राय/विचार (opinions)
- विद्यार्थियों के साथ Personal Information (फ़ोन नं., पता इत्यादि।) की लेन-देन।

3. प्रश्नोत्तर

15-20 मिनट*

विद्यार्थी व उद्यमी

- 5-6 विद्यार्थियों का समूह बनाएँ।
- हर समूह आपस में चर्चा करके प्रश्नों की सूची बनाएँ।
- प्रश्नोत्तर - प्रत्येक समूह से एक प्रश्न, उद्यमी के द्वारा 1-2 मिनट में उत्तर।

4. समापन

5 मिनट*

विद्यार्थी

- 2-3 विद्यार्थी इस संवाद से मिली सीख साझा करेंगे।
- सभी विद्यार्थी संवाद के लिए उद्यमी को धन्यवाद देंगे।

* विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

C-5 बिज़निस ब्लास्टर्स Business Blasters

QSN5T3

बिजनेस ब्लास्टर्स 11वीं और 12वीं कक्षा के पाठ्यक्रम का एक व्यावहारिक अंग है। इससे विद्यार्थियों को EMC कक्षाओं में सीखी गई बातों का, और अपनी उद्यमशील क्षमताओं का अपने वास्तविक जीवन में अभ्यास करने व लागू करने का अवसर मिलेगा। इसका उद्देश्य उन्हें एक ऐसा मंच प्रदान करना है जिसके द्वारा उन्हें अवसरों को पहचानकर, योजना बनाकर उस पर काम करने और साथ ही साथ, गिरकर सँभलने एवं विश्लेषण कर उससे सीखने का मौक़ा मिलेगा।

विद्यार्थी विभिन्न टीम्स में काम करेंगे और आपसी सहमति मं एक उद्यमी विचार (entrepreneurial idea) का चयन करेंगे। जिस पर वे अपने विद्यालय से बाहर, आस-पड़ोस के समुदायों में काम करेंगे। विद्यार्थियों को ऐसे प्रोजेक्ट्स विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें जिनमें वित्तीय (Financial), सामाजिक (Social) या पर्यावरणीय (Environmental) हित शामिल हों।

इन प्रोजेक्ट्स के प्रोत्साहन के लिए, इच्छुक सभी विद्यार्थियों को सीड मनी (Seed Money) दिया जाएगा एवं बिज़निस कोच से सलाह प्राप्त करने का उन्हें बेहतरीन अवसर मिलेगा।

इसे लागू करने के दौरान विद्यार्थी यह पहचानेंगे कि उनका बिज़निस आइडिया एक प्रोडक्ट है या वह एक सर्विस प्रदान करता है। इसमें या तो वे अपना प्रोडक्ट तैयार करेंगे अथवा सामाजिक सेवा प्रदान करेंगे। वे एक बजट तैयार करेंगे और समझेंगे कि उनके ग्राहक कितना भुगतान करने को तैयार हो पाएँगे और यह भी तय करेंगे कि उनके उत्पाद या सेवा की कीमत क्या होगी। वे अपने उत्पाद या सेवा के लिए एक आकर्षक नाम तय करेंगे, ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए एक मार्केटिंग योजना बनाएँगे और वे इसे वास्तविक ग्राहकों को बेचकर उनका फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया) भी लेंगे।

स्कूलों के बेहतरीन प्रोजेक्ट्स इंटर-स्कूल प्रतियोगिता में भाग लेंगे। उनमें से कुछ क्षेष्ठ प्रोजेक्ट्स को "एक्सपो स्टाइल प्रदर्शनी" में अपने बिजनेस आइडियाज़ को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया जाएगा।

बिजनेस ब्लास्टर्स को लागू करने के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश स्कूलों को उपलब्ध कराएं जाएँगे।

References

Unit 1

- What is Vision? | Srikanth Bolla | TEDxHyderabad
  https://www.youtube.com/watch?v=hvYRbTerSvI
- मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कुम्हार की कहानी। कभी सिर्फ़ दीये बनाता था, आज टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर लाखों कमाता है
  https://www.indiatimes.com/hindi/entrepreneurship/mansukhb-
hai-prajapati-potter-success-story-who-he-made-place-in-forbes-list-379453.html

Unit 2

- Activity: Building Consensus and Support
  https://casn.berkeley.edu/wp-content/uploads/resource_-
files/S1_Building_Consensus_Making_Decisions.pdf
- Silwans Patel Story – UNICEF Case Study

Unit 3

- 7 Fun Exercises to Quickly Improve Creative Thinking
  https://www.artworkarchive.com/blog/7-fun-exercises-to-quickly-improve-creative-thinking
- Purvottar ke Sitare: Uddhab Bharali, the man from Assam with 140 incredible inventions
  https://www.youtube.com/watch?v=yNgxkuFEtHI
  https://www.youtube.com/watch?v=d_4ytz9mWos&feature=youtu.be

Unit 4

- Team building activity: Traffic Jam game and how to play and how to solve it
  https://youtu.be/74FERM9_Xmw
- Traffic jam solution 6 players – Top training activites
  https://youtu.be/pegqP4ltk_E
- Verghese Kurien on success of Amul: Nobody becomes stronger unless he battles
  https://youtu.be/X0PGkL0T1-c
- Jeena Isi Ka Naam Hai - Dr. Verghese Kurien - Hindi Zee Tv Serial Talk Show Full Episode
  https://youtu.be/MC2J_hecwRk
- Amul India Story
  https://youtu.be/VnOG2uUeSUw

Unit 5

- How to identify a business opportunity? | Sanjeev Bhikchandani | TEDxSRCC
  https://www.youtube.com/watch?v=OkNpsVMT84w
- 5 stages in design thinking process reference:
  https://www.interaction-design.org/literature/article/5-stages-in-the-design-thinking-process

Unit 7

- डोसा का महाराजा | The Dosa King | मुंबई | Mumbai
  https://www.youtube.com/watch?v=btNR6nxTlXM
- Prem Ganapathy's Exclusive Interview on Zee Khana Khazana
  https://www.youtube.com/watch?v=diDX3rvlDkc
- Story of Prem Ganpathy from the book – Connect The Dots by Rashmi Bansal

Unit 8

- Mr. Kailash Katkar, Founder & CEO, Quick Heal Technologies Pvt. Ltd.
  https://youtu.be/Ev-oJajTJeQ
- The Quick Heal Story by its founder Kailash Katkar - TiECON Ahmedabad 2018
  https://youtu.be/NM8oiw9pClU
- Inspiring journey of Mr. Kailash Katkar, MD & CEO, Quick Heal Technologies Ltd.
  https://youtu.be/BjHMDMpph-g
- Mr. Kailash Katkar's Interview with CNBC TV18 Young Turks
  https://youtu.be/zqID9Gfyn6w

आभार

सलाहकार

श्री मनीष सिसोदिया, माननीय उप मुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री, दिल्ली सरकार
श्री एच राजेश प्रसाद, प्रधान सचिव (शिक्षा), दिल्ली
श्री हिमांशु गुप्ता, निदेशक (शिक्षा), दिल्ली सरकार
श्री रजनीश सिंह, निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली
डॉ. नाहर सिंह, सयुंक्त निदेशक, शैक्षिक, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली

संपादकीय

डॉ सपना यादव, परियोजना निदेशक (ईएमसी) और वरिष्ठ प्रवक्ता, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, प्रवक्ता, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली
डॉ. तारक गोराडिया, कोच, युवा नेतृत्व कार्यक्रम

समन्वयक

डॉ सपना यादव, परियोजना निदेशक (ईएमसी) और वरिष्ठ प्रवक्ता, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, प्रवक्ता, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली
श्री विक्रम भट्ट, शिक्षाविद और शिक्षकों के प्रशिक्षण के विशेषज्ञ
सुश्री अंकिता दुबे, दिल्ली असेंबली रिसर्च सेंटर फेलो
डॉ अशोक तिवारी, एसबीवी विवेक विहार, नई दिल्ली
सुश्री कपिला पाराशर, सहायक प्रोफेसर, डाइट, दिलशाद गार्डन
सुश्री सुनीला भाटिया, एसकेवी चिराग दिल्ली
सुश्री मोनिका जगोटा, एसकेवी, विकासपुरी

व्यक्ति और संस्थान / गैर सरकारी संगठन

डॉ. तारक गोराडिया, कोच, युवा नेतृत्व कार्यक्रम
श्री मेकिन माहेश्वरी, संस्थापक, उद्यम लर्निंग फाउंडेशन, बैंगलोर
सुश्री पायल अग्रवाल, उद्यम लर्निंग फाउंडेशन, बैंगलोर
श्री सहज पारिख, उद्यम लर्निंग फाउंडेशन, बैंगलोर
सुश्री मानसी जोशी, उद्यम लर्निंग फाउंडेशन, बैंगलोर
श्री राहुल ऑगस्टीन, द ग्लोबल एजुकेशन एंड लीडरशिप फाउंडेशन (टीजीईएलएफ), नई दिल्ली
सुश्री खुशबू कुमारी, अलोहोमोरा एजुकेशन फाउंडेशन, नई दिल्ली

विज्वल डिज़ाइन

श्री सौरदीप घोष, जीएआईए स्टूडियो, नई दिल्ली

हिंदी भाषा संपादन

सुश्री रश्मि सिंह, ब्लूबेल्स इंटरनेशनल स्कूल, नई दिल्ली

प्रकाशन अधिकारी

डॉ मुकेश यादव, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली

अस्वीकरण:

इस पाठ्यक्रम में दी गई कहानियाँ वास्तविक लोगों के जीवन से सम्बंधित हैं। कुछ उदाहरणों मेंए कहानी के कुछ भाग उद्यमियों के वास्तविक अनुभवों से थोड़ा भिन्न हो सकते हैं। इन कहानियों का उद्देश्य उनकी जीवन यात्रा के विशिष्ट पहलुओं को उजागर करना हैं जिससे विद्यार्थी प्रोत्साहित और प्रेरित हो सके।

सभी कहानियों को केवल शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए चुना गया है। इसलिएए किसी भी व्यक्ति या उनकी कंपनी से जुड़े किसी भी कानूनी मुद्देए चूक या नकारात्मक कार्य के लिए SCERT को उनके समर्थक के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

नोट्स

नोट्स

ADVERTS
GRB
GA

Glassy Girls
perfect with flaws

ORGANIC PLANTERS
DON'T PANIC, IT'S ORGANIC
Contact us at - 9310656861

SCERT
DELHI
स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्